ॐ नमः श्री राम लाल प्रभु जी परब्रह्मणे नमः

श्री 1008 योगेश्वर प्रभु रामलाल जी महाराज
चरितामृत

श्री योग महादिव्य रामायण

दशम खण्ड
हिन्दू धर्म का इतिहास

लेखक :-
चमन लाल कपूर 'सेवक'

प्रकाशक :-
योग साधन आश्रम, 3 - माडल टाऊन,
होशियारपुर (पंजाब)

ॐ नमः श्री राम लाल प्रभु जी परब्रह्मणे नमः

श्री 1008 योगेश्वर प्रभु रामलाल जी महाराज

चरितामृत

श्री योग महादिव्य रामायण

दशम खण्ड

हिन्दू धर्म का इतिहास

लेखक :-

चमन लाल कपूर 'सेवक'

प्रकाशक :-

योग साधन आश्रम, 3 - माडल टाऊन,
होशियारपुर (पंजाब)

प्रथम बार 1000
योगेश्वर राम लालाब्द 116
विक्रमी संवत् 2061
ब्यास पूजा जुलाई 21, 2005

भेंट :- रु. 150/-

योग वन्दना

योग-विद्यां नमाम्यहम्

सौंदर्य लहरीरूपां, तापत्रयविनाशनीम् ।
तेजस्विनीं तपोरूपां, योगविद्यां नमाम्यहम् ।।१।।
संस्थापकां समत्वं तां, शक्तिसृजनकारिणीम् ।
चित्तवृत्तिनिरोधाय, योगविद्यां नमाम्यहम् ।।२।।
अर्धनारीश्वरस्येमां, चैतन्यसार संभवाम् ।
पूर्णरूपकुण्डलिनीं, योगविद्यां नमाम्यहम् ।।३।।

●●●●

❋ योग तुझे नमस्कार ❋

सुन्दर करे जो देह को, करे दुःखों से पार ।
तेज रूप तप रूप जो, योग तुझे नमस्कार ।।१।।
करे समत्व दान जो, शक्ति सिरजनहार ।
चित्तवृत्ति निरोधहित, योग तुझे नमस्कार ।।२।।
आदिनाथ से ऊपजा, चेतनता का सार ।
जागृत कुण्डली जो करे, योग तुझे नमस्कार ।।३।।
राम लाल जिस का किया, कलियुग में उद्धार ।
मुलखराज के "सेवक", का तुझे नमस्कार ।।४।।

– चमन लाल कपूर "सेवक"

ॐ नमः श्री रामलाल प्रभुजी परब्रह्मणे नमः

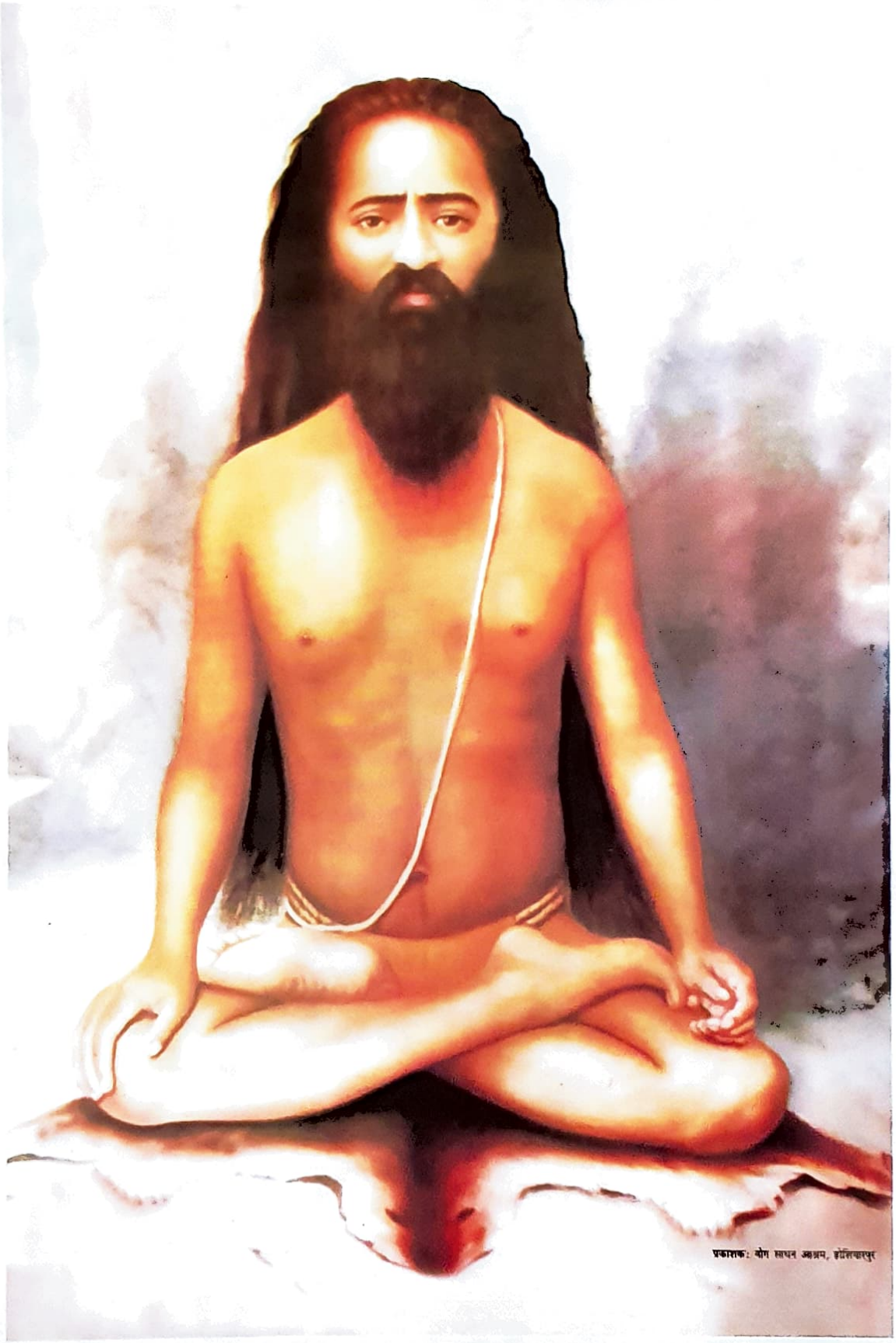

श्री 1008 योगेश्वर प्रभु रामलाल जी महाराज

हिन्दू धर्म का इतिहास

(सतयुग - त्रेता - द्वापर - कलियुग)

प्राक्कथन-१

'हिन्दू धर्म का इतिहास' इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन क्या है? इस का प्रयोजन है हिन्दू (आर्य) जाति को अपने अतीत और वर्तमान से अवगत कराने का कुछ प्रयास और भविष्य के खतरों की ओर संकेत।

जैसा इस लेखक की पुस्तक 'प्रवासी आत्मा' से पाठक संभवत: जान पाये होंगे या जान सकते हैं कि अतीत में हिन्दुओं का वास और उन का अधिकार समस्त ऐशिया पर था। वे अपनी फूट और दुर्बलता तथा कुछ अन्य परिस्थितियों के कारण धीरे धीरे भूमि को छोड़ते आये और ऐशिया के समस्त देशों को खाली कर दिया। कुछ काल में वहां हिन्दू नाम मात्र भी न रहे।

समीप भूत में हिन्दू जिन स्थानों पर थे वे हैं अफगानिस्तान, बलोचिस्तान, सिन्ध, पश्चिमी पंजाब, पूर्वी बंगाल और काश्मीर। ई० 1940 में हिन्दुओं के वहां मन्दिर, गुरुद्वारे, व्योपार और भव्य भवन थे। वे सम्मान पूर्वक जीवन व्यतीत करते थे। समाज में, सरकार में और धर्म में उन का पूर्ण आदर और अधिकार था। सन् 1990 में उन की यह स्थिति थी कि पचास सालों के अल्प काल में ही हिन्दुओं को वहां से निकाल दिया गया था, वे भयभीत हो कर उन सभी स्थानों को खाली कर आये। अब उन स्थानों में उन के मन्दिर, भवन, व्योपार, सम्पत्ति और हिन्दुओं की जनता का चिह्न भी नहीं है।

यदि समीप के भूत के 50 साल के अन्दर यह हो सकता है तो अगले पचास या सौ साल में हिन्दुओं की क्या स्थिति होगी, यह विचारणीय विषय है, जो यदि कोई दूरदर्शी हिन्दू हो तो सोच सकता है।

हिन्दुओं में दूरदर्शिता का अभाव है। यदि पचास साल या इस से कुछ काल पूर्व के हिन्दू दूरदर्शी होते तो आज जिस स्थिति में हिन्दू जाति है वह न होती। आज की जो दशा हिन्दुओं

की है वह इस पुस्तक के अन्तिम सर्गों में विद्वान पाठकों के समक्ष है। प्रभु करें हिन्दू अपने आप को पहचानें और भविष्य के खतरों से बचें।

सतयुग हिन्दुओं (आर्यों) का महान युग था जब संपूर्ण एशिया में हिन्दू (आर्य) थे और उन का वहां अकण्टक आधिपत्य था।

त्रेता युग हिन्दुओं का (आर्यों का) निर्माण युग था जब आर्यों ने आर्यवर्त में आर्य राज्य स्थापित किए और राक्षस जाति का केवल आधिपत्य ही समाप्त नहीं किया बल्कि उस जाति की सत्ता ही समाप्त कर दी।

द्वापर युग हिन्दुओं (आर्यों) के लिए विनाश युग था जब परस्पर के कलह, जुआ और शराब ने आर्य जाति का महाभारत तथा अन्य युद्धों में संपूर्ण नाश कर दिया।

कलियुग हिन्दुओं (आर्यों) का उत्थान काल था जब भारत में केन्द्रिय राज्यों की स्थापना हुई और देश विदेश में भारत की विद्या, कला और धन सम्पत्ति की ख्याति बढ़ी।

उत्थान काल के शीघ्र पश्चात हिन्दू जाति का पतन काल आरंभ हो गया जब हिन्दुओं की पारस्परिक कलह ने उन्हें मुसलमानों के अधीन कर दिया। भारत की आधी से अधिक जनसंख्या मुसलमान बना दी गयी और हिन्दुओं पर हिन्दू होने का टैक्स (जज़िया) लग गया। हिन्दू धर्म के विरुद्ध जैसे गौ हत्या आदि कर्म खुलम-खुला हिन्दुओं के सन्मुख होने लगे और हिन्दू अनाथों की तरह अपने देश में बसने लगे। यह धर्म परिवर्तन काल था।

इस के तुरन्त बाद एक और समय आया जब ईसाई जाति आ कर भारत में छा गई और हिन्दुओं को ईसाई बनाना आरंभ कर दिया। हिन्दुओं को दासता का सामना करना पड़ा और वह हिन्दुओं के लिए दासता का काल था।

शीघ्र ही फिर वह काल आ गया जब हिन्दुओं को पंजाब, सिन्ध, बलोचिस्तान, बंगाल आदि स्थानों से बाहर खदेड़ दिया गया। इस खदेड़पन में लाखों हिन्दुओं की हत्या हुई और हिन्दू जाति अपने धर्म को भी भूल गई और धर्म विपरीत सभी कर्म करने लगी। मांस, मदिरा आदि ने हिन्दुओं के दिमाग को बिगाड़ दिया और हिन्दुओं का भविष्य धूमिल ही हो गया।

यह वर्तमान काल की हालत है। भविष्य विधाता के अधीन है। हिन्दू अपने उद्धार का स्वयं प्रयत्न नहीं कर रहे।

इस पुस्तक का आधार 'श्रीमद्भागवद पुराण' 'श्रीमद्भगवद् गीता' और 'बाल्मीकीय रामायण' है। महर्षि व्यास और महर्षि बाल्मीकि को कोटिश: नमस्कार जिन्होंने संसार को यह अमूल्य ज्ञान निधि प्रदान की।

सेवक का मस्तक प्रतिक्षण अपने सदगुरु स्वामी मुलख राज और योगेश्वर प्रभु रामलाल के चरणों मे नत है जिन्होंने इस कलिकाल में इसे अपने चरणों की शरण प्रदान की और धर्म के मार्ग पर लगाया।

– चमन लाल कपूर "सेवक"

प्राक्कथन-२

हिन्दू धर्म निरीक्षण

हिन्दू धर्म का इतिहास लाखों वर्षों की अक्षुण्य परंपरा की कहानी है। यह समृद्धि, पतन, पुनरुत्थान और पतन का इतिहास है। अदूर दर्शिता और पारस्परिक वैमन्स्य का नमूना है। और बीच बीच में आदर्श चरित्र की रोशनी भी है।

सतयुग में ऐशिया पर आर्यों (हिन्दुओं) का एक छत्र साम्राज्य था। इन्द्रासन की ख्याति थी। असुरों के साथ संघर्ष था परन्तु वे आर्यों के शौर्य के सन्मुख टिक न पाते।

देव और दैत्य सौतीले भाई थे। इन्द्रासन के लिए परस्पर लड़े और आर्यों की शक्ति समाप्त हो गई। असुर प्रभावी हुए और आर्यों ने भारत वर्ष में आ कर शरण ली। भारत वर्ष में राक्षसों का आधिपत्य था। यहां से त्रेता काल का इतिहास आरंभ होता है। आर्यों का राक्षसों के साथ संघर्ष चलता रहा। अंततः अयोध्या के महाराज दशरथ के पुत्रों ने राक्षसों का वीरता पूर्वक सामना किया। अब भाई के संबंध का उज्जवल स्वरूप देखने में आया और राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन चारों ने मिल कर भारत से राक्षसों को एक प्रकार से निष्कासित ही कर दिया।

भारत में आर्यों के राज्य स्थापित हो गए। द्वापर युग आ गया। फिर वही आर्यों की पुरानी कहानी। भाईयों में शत्रुता हुई। कौरव पांडव एक दूसरे के राज्य के कारण ही शत्रु बन गए। और कुरुक्षेत्र के मैदान में महान संग्राम हुआ। आर्य जाति का एक प्रकार से समूल नाश हो गया। भील आदि जाति भारत में प्रबल हो गई।

आर्य जाति का टिमटिमाता दीपक मगध देश में जल रहा था। यह कलियुग था। वहीं से ऋषिवर चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्यवंश की स्थापना की और भारत में एक छत्र राज्य स्थापित हो गया। हिन्दू अपने धर्म पर भी अस्थिर रहे। और इस तरह अशोक और कनिष्क के कारण हिन्दू धर्म डांवांडोल हो गया। बौद्धमत भारत में छा गया।

सौभाग्य वश शंकराचार्य का अवतार हुआ। उस ने भारत में पुन: हिन्दू जाति को दृढ़ किया और हिन्दू राज्य जो बहुत समृद्धिशाली और वैदिक धर्मावलंबी थे स्थापित हो गए।

आर्यों की वही पुरानी रीति ने फिर अपना काम किया और दो भाई जयचन्द और पृथ्वीराज परस्पर शत्रु बन गए और मुसलमानों को भारत में बुला कर आर्य धर्म, (जिस का नया नाम मुसलमानों ने रखा 'हिन्दू') को इस्लाम में परिवर्तित कर दिया। आधा देश मुसलमान बन गया।

सात सौ वर्ष तक हिन्दू गुलाम रहे। पहले मुसलमानों के फिर अंग्रेजों के।

अंग्रेज चले गए। मुसलमान हिन्दुओं के ऊपर प्रभावी हुए। उन्होंने देश को खण्डित कर अपना अलग पाकिस्तान बना लिया जहां से हिन्दुओं को बुरी तरह से बाहिर धकेल दिया।

बचा खुचा देश मुसलमानों और हिन्दुओं का रहा। यहां पर भी हिन्दुओं की पुरानी नीति पारस्परिक द्वेष ने उन का पीछा नहीं छोड़ा। जयचन्द और पृथ्वी राज की दुश्मनी का दृश्य रह रह कर अब भी आंखों के सामने आता रहता है।

– चमन लाल कपूर "सेवक"

प्रसंग सूची

क्र.सं.	प्रसंग	पृष्ठ
(i)	योग वन्दना	
(ii)	प्राक्कथन-१	i
(iii)	प्राक्कथन-२	iv
(iv)	प्रसंग सूची	vi
(v)	श्री दिव्य रामायण सहगान	

प्रथम अध्याय – सतयुग

1.	वन्दना	1
2.	सृष्टि के चार युगों का परिमाण	2
3.	सतयुग में संसार का भौगोलिक स्वरूप	3
	क) सात द्वीप (Continents) उन के नाम	4
	क) सात सागर (Oceans) उन के नाम	4
4.	जम्बु द्वीप में आर्यों का वास और अवतारों का वर्णन, अवतारः–	4
	क) सनक, सनातन, सनन्दन, सनतकुमार	5
	ख) नर नारायण	5
	ग) नारद	6
	घ) कपिल	7
	ङ) ऋषभदेव	8
	च) दत्तात्रेय	9
	छ) हंस	10
	ज) धन्वन्तरी	11
	झ) हयग्रीव	11
	ञ) व्यास	12
	ट) वराह	13

क्र.सं.	प्रसंग	पृष्ठ
	ठ) मत्स्य	14
	ड) महाकच्छप	15
	ढ) वामन	18
	ण) श्री कृष्ण	19
	त) पृथु	20
	थ) श्री राम चन्द्र	20
	द) श्री प्रभु रामलाल	22
5.	जम्बु द्वीप (Asia) में इन्द्रासन, सम्राट इन्द्र का शासन और इन्द्रस्तुति (वेदों में)	23
6.	इन्द्रासन पर बैठने वाले कुछ इन्द्रों के नाम	28
	क) पुरन्दर	28
	ख) बलि	28
	ग) अद्भुत	29
	घ) शंभु	29
	ङ) वैधृत	30
	च) ऋतधामा	30
	छ) दिवस्पति	31
	ज) शुचि	32
7.	जम्बु द्वीप के पर्वतों के नाम जहां पर ऋषियों ने रह कर वेदों की ऋचाओं की रचना की	33
8.	वैदिक ऋचाओं के कर्ता कुछ ऋषियों के नाम	35
9.	देवासुर संग्राम और देवासुर का वध	38
10.	सतयुग में आर्य वंश	45
	क) पृथु वंश	45
	ख) ऋषभदेव का वंश	47
	ग) राजर्षि गय का वंश	49
	घ) वैवस्तव श्राद्धदेव का वंश	51

क्र.सं.	प्रसंग	पृष्ठ
	ङ) शर्याति का वंश	51
	च) मनु पुत्र पृषध्र	52
	छ) मनु पुत्र कवि	52
	ज) मनु पुत्र कुरूष	53
	झ) मनु पुत्र धृष्ट	53
	ञ) मनु पुत्र नृग का वंश	53
	ट) मनु पुत्र नरिष्यन्त का वंश	54
	ठ) मनु पुत्र नभग का वंश	56
	ड) मनु पुत्र दिष्ट	57
	ढ) मनु पुत्र इक्ष्वाकु	57
11.	सतयुग का अंत– देव–दैत्य संग्राम	57

द्वितीय अध्याय – त्रेतायुग में हिन्दू धर्म

1.	मनु पुत्र इक्ष्वाकु का वंश	64
2.	इक्ष्वाकु पुत्र महाराज विकुक्षि का वंश	66
3.	मनुवंशज मांधाता का वंश	68
3.	मनुवंशज चक्रवर्ती सम्राट सगर का वंश	72
5.	चक्रवर्ती सम्राट महाराज भगीरथ द्वारा हिमालय से गंगा का प्रवाह लाना	73
6.	चक्रवर्ती सम्राट खट्वाङ्ग का वंश	81
7.	महाराज दशरथ का वंश	82
8.	महाराज निमि का वंश(मैथिली वंश)	87
9.	मैथिलवंशीय महाराज केशिध्वज का वंश	90
10.	त्रेता युग में महाराज श्री राम चन्द्र का अवतार लंका पर आक्रमण और रावण वध	92

क्र.सं.	प्रसंग	पृष्ठ

तृतीय अध्याय – द्वापरयुग में हिन्दू धर्म

1.	चन्द्रवंश	123
2.	क्षत्रवृद्ध का वंश	126
3.	नहुष का वंश	128
4.	पुरुरवा का वंश	129
5.	भरत के वंशज मन्यु पुत्र बृहत्क्षत्र का वंश	131
6.	भरत वंशज कुरु का वंश (कौरव)	134
7.	चन्द्रवंशीय कुरुवंश में पाण्डवों की कुल परंपरा	137
8.	चन्द्रवंशीय ययातिसुत यदु के वंश की कुल परंपरा (यादव वंश) जिस में श्रीकृष्ण अवतार हुए।	139
9.	श्रीमद्भगवद्गीता – श्री कृष्ण का संदेश	139
10.	महाभारत का युद्ध, आर्यकुलों का नाश, श्री कृष्ण का निजधाम गमन	187

चतुर्थ अध्याय – कलियुग में हिन्दू धर्म

1.	आर्य धर्म का उत्थान काल	191
2.	आर्य धर्म का पतन काल और उस के चार सर्ग	207
	1. लूटमार सर्ग 2. धर्म परिवर्तन सर्ग	
	3. दासता सर्ग 4. विस्मरण सर्ग	
3.	पतन काल का प्रथम सर्ग – लूटमार सर्ग और आर्य बने हिन्दू	208
4.	पतन काल का दूसरा सर्ग – धर्म परिवर्तन (1200–1700 A.D.)	211
5.	पतन काल का तीसरा सर्ग – दासता (1700–1947 A.D.)	214
6.	पतन काल का चौथा सर्ग – विस्मरण	217
	परिशिष्ट –1 : हिन्दू धर्म के इतिहास में स्त्रियों का योगदान	226
	परिशिष्ट –2 : रावण के विमान	229

श्री दिव्य रामायण सहगान

दिव्य रामायण की गाथा को,
जो नर सुने सुनावे ।
जीवन में रहे सुखी हमेशा,
अंत परमपद पावे ।।
श्री प्रभु गंडाराम दुलारे,
इस में उन के खेल हैं न्यारे ।
पतित पावनी कथा मनोहर,
भक्तन के मन भावे ।।
सुन्दर यह इतिहास मनोहर,
लीला कीनी जिमि योगेश्वर ।
योग साधना की पावस ऋतु,
योगामृत बरसावे ।।
उत्तम नीति इस में आई,
भक्त जनों के जो मन भाई ।
इस के सुनने से प्राणी का,
पाप नाश हो जावे ।।
श्री प्रभु राम लाल हैं नायक,
जीव चराचर के सुखदायक ।
उन के चरण कमल का भौंरा,
'सेवक' शीश झुकावे ।।

ॐ

श्री योग महादिव्य रामायण

(अथ हिन्दू धर्म का इतिहास)

(सतयुग – त्रेता – द्वापर – कलियुग)

अध्याय प्रथम – "सतयुग" में हिन्दू धर्म

1. वन्दना

दो० – सेवक है प्रभो लिख रहा, हिन्दू धर्म इतिहास।
दया आप की नाथ जी, पर मुझे विश्वास।। 6902

नाम आप का लेय कर, और मुलख का राज।
महाप्रभु को स्मरण कर, हो सम्पूर्ण काज।। 6903

आप थमाई कलम यह, एक बार फिर देव।
नत मस्तक तव चरण में, स्वीकार करुं मैं सेव।। 6904

आप ही जानें रहस यह, क्यों दीनी यह सेव।
लिपिकार है दास यह, तव चरणों में देव।। 6905

हिन्दू जिस को अब कहें, पुरातन इसके नाम।
समय समय पर और थे, सभी स्मरण न राम।। 6906

जन सब भजते आप को, ले 'ओं' का नाम।
अनाहत अक्षर 'ओं' का, सर्वत्र गूंजत राम।। 6907

उसी ओ३म के आश्रय, कीना विश्व सनाथ।
जनता भजती आप को, आप सदा उन साथ।। 6908

2. सृष्टि के चार युगों का परिमाण

हिन्दू धर्म है अति प्राचीन, सतयुग से लो इस को चीन।
सतयुग त्रेता द्वापर जान, कलियुग चारों नाम पहचान।
सतयुग कितने वर्ष का मीत, सुन लो इस को अब सप्रीत।
चार हज़ार सतयुग के जान, त्रेता के लो तीन पहचान।
द्वापर के हैं दोय हज़ार, कलियुग का तो एक हज़ार।
ये तो दिव वर्ष हैं भाई, गणना कर लो अब मन लाई।
त्रयशठ पैंसठ वर्ष जो होयें, दिव्य एक वर्ष में गोयें।
[1]गिनती कर लो इस प्रकार, युगों का तब मिले आकार।

दो०– इतने लंबे काल का, सुन वर्णन मम मीत।
महत्व हिन्दू धर्म का, होय तभी प्रतीत।। 6909

---

1. सतयुग – 4000 x 365 = 14,60,000 वर्ष
त्रेता – 3000 x 365 = 10,95,000 वर्ष
द्वापर – 2000 x 365 = 7,30,000 वर्ष
कलियुग – 1000 x 365 = 3,65,000 वर्ष
यह एक चतुर्युगी है। हज़ार चतुर्युगी को एक कल्प कहते हैं।

3. सतयुग में संसार का भौगोलिक स्वरूप और प्रमुख जातियां

प्रथम सर्ग – सतयुग

सतयुग की अब सुनो कहानी, वेदों में जो स्पष्ट बखानी।
मुक्तकण्ठ से ऋषियन गायी, ऋचाओं में वह गा सुनायी।
शौर्य का वह महा इतिहास, देवेन्द्र इन्द्र नायक खास।
देवासुर संग्राम लो जान, धर्मयुद्ध लो उस को मान।
देवों का था इन्द्र नरेश, चले न असुरों की कुछ पेश।
असुरों का था वृत्र सरदार, अति भयंकर था आकार।
असुर जाति सब उस को माने, अपना रक्षक उस को जाने।
आर्यों से वे करत द्वेष, उसी द्वीप में उन का देश।

दो० – ऐशिया जिस को अब कहें, जम्बु द्वीप अभिधान।
उस में थे नौ खण्ड जो, उन्हें भी लोगे जान।। 6910

भारत उन में एक था, आठ खण्ड थे और।
आगे उन के नाम कहें, सभी आर्यों के ठौर।। 6911

जम्बु द्वीप के नाम से, था वह द्वीप महान।
अनेक उस में देश थे, भिन्न थे सब के नाम।। 6912

जैसे जम्बु द्वीप था, ऐसे द्वीप भी और।
सतयुग में जो नाम थे, वर्णें हम इस ठौर।। 6913

(क) सात द्वीप (Continents)

[1]सब द्वीपों के नाम सुनावें, मन को सतयुग में ले जावें।
जम्बु द्वीप हम एक बखानें, दूजा 'प्लक्ष द्वीप' पहचानें।
तीजा 'शाल्मली' होय भाई, चौथा 'कुश' कथनी में आई।
पंचम 'क्रौंच' द्वीप लो जान, छटा 'शाक' द्वीप पहचान।
'पुष्कर' द्वीप सातवां नाथ, नाम सभी सुन भये सनाथ।

(ख) सात सागर (Oceans)

[2]सागरों के भी सुन लो नाम, सतयुग में जो भये तमाम।
सागर से वे द्वीप घिरे थे, सभी द्वीप ही हरे भरे थे।
'क्षीर सागर' व 'इक्षु' जानो, 'मदिरा सागर' भी पहचानो।
'घृत सागर' और 'दधि' भी होय, 'मधु' 'शुद्रोदक' सागर दोय।

4. जम्बु द्वीप में आर्यों का वास और अवतार वर्णन

दो०–सप्त सागर सप्त द्वीप थे, सतयुग में विख्यात।
जम्बु द्वीप सर्वोत्तम, "सेवक" माने तात।। 6914

---

1. सतयुग में महाद्वीपों के नाम ये थे–
   (1) प्लक्ष द्वीप (2) शाल्मली द्वीप (3) कुश द्वीप
   (4) क्रौंच द्वीप (5) शाक द्वीप (6) पुष्कर द्वीप
   (7) जम्बु द्वीप

   आधुनिक काल में महाद्वीपों के नाम हैं–
   (1) एशिया (2) आस्ट्रेलिया (3) अफ्रीका
   (3) यूरोप (5) उत्तरी अमरीका (6) दक्षिणी अमरीका
   (7) एन्टारटिका
2. सात सागर
   (1) क्षीर (2) इक्षु (3) मदिरा
   (4) घृत (5) मधु (6) दधि
   (7) शुद्रोदक

इस का कारण मैं बतलाऊँ, बात रहस की अब कथ पाऊँ।
जम्बु द्वीप राम को प्यारा, बार बार जहां तन उन धारा।
चौबीस बार लीन अवतार, आर्य धर्म के प्रभु रखवार।
जम्बु द्वीप में आर्य निवास, जहां पर असुरों का भी वास।
[1]आर्य धर्म के प्रभु रखवारे, ले अवतार उन असुर संहारे।
आर्यों को उन दीना ज्ञान, धर्म कर्म और मोक्ष का जान।

(क) सनक, सनातन, सनन्दन, सनतकुमार

सनक सनातन बन कर आये, सनन्दन सनतकुमार कहाये।
ब्राह्मण का उन रूप धराया, व्रत अत्यन्त कठिन कर पाया।
आजीवन वे रह ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य की महिम प्रचारी।
चारों विग्रह तेज स्वरूप, प्रभु राम के ही रूप अनूप।
सतयुग में प्रभु रूप यह लाया, हर युग में आदर्श बन पाया।
तपस्या का स्वरूप दिखाया, ब्रह्मचर्य जिस नाथ धराया।

दो० – ब्रह्मचर्य ही योग है, यही तपस्या मान।
राम प्रभु ने योग को, था दीना अधिमान।। 6915

युग युग में प्रभु राम जी, आये ले अवतार।
राम बने कभी कृष्ण वे, सतयुग सनतकुमार।। 6916

(ख) नर नारायण

एक रूप प्रभु और धराया, नैष्ठिक तपस्वी जो कहलाया।

---

1. जनता की यह भ्रांति कि सभी अवतार भारत में हुए हैं ठीक नहीं। संपूर्ण ऐशिया महाद्वीप (जंम्बुद्वीप) आर्यों के अधिकार में था और बहुत बार भगवान वहीं स्थान स्थान पर अवतरित हुए हैं।

नरनारायण का वह रूप, त्रिकाल में जो परम अनूप।
*दक्ष प्रसिद्ध सम्राट महान, मूर्ति उस की थी सन्तान।
मूर्ति धर्म की पत्नी भाई, प्रभु प्रकटे उन के घर आई।
नर–नारायण नाम धराया, आत्म संयम कर दिखलाया।
पिता ने विजय था जग को कीन, पुत्र ने वश थी इन्द्रियां कीन।
परम सिद्ध वा परम मनस्वी, आर्य जाति का महान तपस्वी।
आत्म रूप वह था भगवान, प्रकटे राम थे रूप उस आन।
आदर्श योग का राम दिखाया, नरनारायण बन जब आया।
महा प्रलोभन उस मग आये, टस से मस न उसे कर पाये।

दो०–परीख्व योग की लेत है, जगत अनेकों बार।
योगी उस को जानिये, हो न उस की हार।। 6917

(ग) नारद

नारद रूप में भी प्रभु, प्रकटे सतयुग माहिं।
ज्ञान दिया तब भक्ति का, आर्य जगत के ताहिं।। 6918

सात्वततन्त्र उन बतलाया, पञ्चरात्र जिस नाम धराया।

---

* अवतारों के विषय में भ्रांति और उसका समाधान :–

1. आर्य जाति में भगवान ने कई बार अवतार लिया। अवतार की परिभाषा गीता के अनुसार है कि 'जो भी विभूति युक्त शक्ति प्रकट होती है वह मैं ही हूँ, दैत्यों में मैं प्रह्लाद हूँ, शस्त्रधारियों में राम हूँ, रुद्रों में शंकर हूँ, अदिति के बारह पुत्रों में विष्णु हूँ, सेनापतियों में स्ताभिकार्तिक हूँ, गन्धर्वों में चित्ररथ हूँ, सिद्धों में कपिल हूँ, पुरोहितों में बहस्पति हूँ, महर्षियों में भृगु हूँ, वृष्णिवंशियों में मैं वासुदेव कृष्ण हूँ, आर्य जाति में ऐसी ऐसी विभूतियां प्रकट होती रहीं हैं और वे सभी अवतार कोटि में गिनी जाती हैं। इसीलिए गीता के दशम अध्याय के चालीसवें श्लोक में आया है "नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परम तप" अर्थात् भगवान की दिव्य विभूतियों अर्थात् अवतारों को गिना नहीं जा सकता।

आगे देखें . . .

ईश्वर भक्ति मुख्य उपदेश, नारद का है ज्ञान विशेष।
और बतलाई इस में बात, बन्धन जग का हो जिमि समाप्त।
कर्म है जन्म मरण के हेत, कर्म से नरक स्वर्ग जन लेत।
कर्म न छोड़ सके जन कोय, कर्म से जीव के बंधन होय।
कर्म से नरक स्वर्ग लो जान, कर्म से आवागमन पहचान।
कर्म से किमि जन छूटन पाये, सात्वत तन्त्र यही बतलाये।
काटे कर्म कर्म को भाई, सात्वत तन्त्र की यह बढ़ाई।
कर्म करत जन मुक्ति पाता, नारद जग को यह बतलाता।

दो०–कर्म बन्धन से मुक्ति हो, कर्मों से ही मीत।
अनोखा ज्ञान है दिया, नारद ने लो चीत।। 6919

जब जब प्रकटे राम जी, दीना यह उपदेश।
योग करें रह जगत में, जिस में कर्म विशेष।। 6920

(घ) कपिल

कपिल रूप भी प्रभु जी धारा, सांख्य योग उन आ प्रचारा।

---

2. आर्य जाति का समस्त साहित्य संस्कृत काव्य में है और कवियों ने अपनी अलंकृत भाषा में जो कुछ प्रकट किया है बाद के विद्वानों और हिन्दू जनता ने उस अलंकारी भाषा को अक्षरशः माना और कवियों के भाव को न समझ कर अर्थ का अनर्थ किया है जिस से हिन्दू धर्म पर लोगों की श्रद्धा नहीं रही और अन्य धर्मावलंबी इस धर्म का उपहास उड़ाते हैं जैसे–
   (1) शिवजी के सर से पानी निकलता है (गंगा निकलती है)। इस का वास्तविक अर्थ है शिव जी योगी हैं, उन की बुद्धि से शुद्ध ज्ञान की धारा प्रवाहित होती है।
   (2) देवताओं ने समुद्र मन्थन इस प्रकार किया जैसे दूध को बिलो कर मक्खन निकालते हैं, और उस में से एक स्त्री निकली जिस का नाम "लक्ष्मी" है।
   मन्थन का अर्थ 'बिलोना' नहीं होना चाहिए। यत्न पूर्वक समुद्र की खोज की और वहां से हीरे आदि धन निकाला। लक्ष्मी का अर्थ स्त्री नहीं लेना उस का अर्थ धन है।

आगे देखें . . .

आसुरि ब्राह्मण लीना ज्ञान, जिमि सांख्य में है तत्व विधान।
देवहूति के गर्भ से जाये, कर्दम ऋषि के जो पूत कहाये।
कपिल ने मात को दीन ज्ञान, जिमि जन्म मरण मिलत त्राण।
चौबीस तत्व थे बतलाये, सृष्टि को जो रच पाये।
तत्वों से ही सिरजन होय, आत्मा द्रष्टा ही है सोय।
आत्मा बन्धन में तब आता, कर्ता स्वयं जब वह कहता।
सांख्य का मुख्य यही उपदेश, आत्मा फंसे न जग में लेश।
सांख्य व योग एक ही ज्ञान, समझें इस को विज्ञ सुजान।

दो०–रामलाल भगवान जब, आये कपिल के रूप।
वही ज्ञान उन दीन था, जो योग में गूप।। 6921

(ङ) ऋषभ देव

ऋषभ देव के रूप में, भी थे आये नाथ।
रामलाल भगवान ने, जग को कीन सनाथ।। 6922

सृष्टि के वे आदि से, और तलक कल्पान्त।
रहत प्रभु इस जगत में, लेश न इस में भ्रांत।। 6923

---

(3) समुद्र मन्थन में भगवान ने कच्छप का रूप धारण किया। वह महापुरुष जिस ने समुद्र मन्थन में विशेष सहायता की थी वह कछवा नहीं था। एक अवतारी महापुरुष विख्यात हुआ।

(4) जब आर्य जाति बाढ़ में डूबने लगी तो भगवान मत्स्य बन कर आये और आर्य जाति को डूबने से बचाया। वे महापुरुष मछली नहीं थे। उन्हें मत्स्य नाम से इसलिए पुकारा गया क्योंकि उन्होंने जल में एक बड़ी नौका तैय्यार करवाई और लोगों को डूबने से बचाया। इसी प्रकार अनेकों उदाहरण मिलते हैं जहां पर अलंकारों को ठीक न समझ कर मनमाने अर्थ किये गये और जनता को भ्रांति में रखा गया तथा धर्म उपहास का विषय बना। अन्य धर्मावलंबियों का आक्षेप कि "हिन्दू धर्म में, पशु भी भगवान हैं" वह इसी भूल का परिणाम है।

आर्य धर्म प्रिय उन्हें, और वैदिक ज्ञान।
शक्ति के महा स्त्रोत वे, रामलाल भगवान।। 6924

ऋषभ देव थे महा बलवान, तपस्वी, योगी, वशी महान।
राजा नाभि के घर आये, सुदेवकी के पूत कहाये।
राज पाठ छोड़ वन सिधाये, भरत को वे राज्य दे पाये।
इन्द्रिन को उन वश में कीन, चित्त अत्यंत शांत कर लीन।
निज स्वरूप में स्थित हो पाये, समदर्शी वे सिद्ध कहाये।
परम हंस पद क्या हो भाई, अवधूत चर्यावत क्या कहाई।
ऋषभ देव यह कीन स्पष्ट, अपने तन पै सह कर कष्ट।
जड़वत रह कर काल बिताया, पूज्य जगत का वह हो पाया।

दो०– राजपाठ को त्याग कर, हंस वृत्ति अपनाय।
शिक्षा दीनि जगत को, क्या वैराग्य कहाय।। 6925

(च) दत्तात्रेय

सतयुग में प्रभु राम ने, और धारा इक रूप।
दत्तात्रेय के नाम से, योगी परम अनूप।। 6926

योगी परम अनूप था, अत्रि का वह पूत।
मात अनसूया उसकी, योगिन में वह भूप।। 6927

योग का दीना आ कर ज्ञान, उस के शिष्य भी सिद्ध महान।
राजा यदु ने शिक्षा पाई, योग की उस ने कीन कमाई।
सहस्त्रार्जुन ने सीखा योग, राजर्षि उस को कहते लोग।
अलर्क को भी दीना ज्ञान, दत्तात्रेय की दया महान।
प्रह्लाद ने भी योग कमाया, दत्तात्रेय ने उसे सिखाया।

अनेकों ने था सीखा योग, अनेक बने थे योगी लोग।
जब जब प्रभु जी लीन अवतार, योग का कीना उन उद्धार।
योग सनातन धर्म लो जान, योग से उपजा सकल ज्ञान।

(छ) हंस

दो०–आदि काल से दे रहे, प्रभु योग का ज्ञान।
विसरें जन जब योग को, पुनः प्रभु दें ज्ञान।। 6928

हंस ऋषि का रूप धर, प्रभु आये संसार।
योग प्रचारा जगत में, तब उस बहु प्रकार।। 6929

परम ज्ञानी हंस थे, सिद्ध पुरुष भगवान।
पाकर शिक्षा हंस से, अनेक भये विद्वान।। 6930

हंस भये थे प्रसिद्ध महान, उन के न कोई और समान।
नारद उनसे शिक्षा पाई, ख्याति हंस की जग में छाई।
नारद को आत्म तत्व लखाया, सिद्ध पुरुष था उसे बनाया।
और वह भक्त भया विख्यात, भया हंस से जब साक्षात।
हंस से नारद दीक्षा पाई, और योग की सीख ग्राही।
हंस रूप अवतार महान, जग को दीन जिस योग ज्ञान।
राम प्रकटे जब जिस भी रूप, कर्म किये उन परम अनूप।
जब जब योग लुप्त हो पाया, राम प्रकट हो उसे फैलाया।

दो०–योग धर्म प्रिय उन्हें, वा वैदिक आचार।
जब कभी ये नष्ट हों, राम आयें तन धार।। 6931

(ज) धन्वन्तरी

धन्वन्तरी बन राम थे आये, जग का दुख देख नहीं पाये।
कीना औषधिन का निर्माण, अमरित की थीं जोय समान।
अनेकों का उन रोग हर लीना, अनेकों को उन जीवन दीना।
औषधियों के जो गुण महान, दिव्य दृष्टि से लिए पहचान।
रोगों के भी कारण जान, स्वभाव प्रकृति के पहचान।
योग के साधन भी अपनाये, रोग मुक्त बहु जन कर पाय।
जग में दुख जब जब बढ़ पाते, ले अवतार प्रभु तब आते।
रोग अनेकों जब जग छाये, बन धनवन्तरी प्रभु जी आये।

दो०–युग युग में प्रभु राम जी, आये ले अवतार।
राम बने धन्वन्तरी, कभी सनत्कुमार।। 6932

(झ) हयग्रीव

वेद ज्ञान विस्तार हित, प्रभु आये इक बार।
दिव्य ऋषि स्वरूप धर, मानो वेद साकार।। 6933

उस महर्षि का नाम पहचान, 'हयग्रीव' उस को लो जान।
वेद ज्ञान का परम ज्ञाता, जिमि ऋचाओं का वह विधाता।
उस का विग्रह वेदमय जान, यज्ञमय विग्रह भी पहचान।
सर्व देवमय विग्रह भाई, हयग्रीव की अति प्रभुताई।
श्वास श्वास वह वेद उचारे, जनता सकल उसे सत्कारे।
ऐसा वेद विद कहीं न भाई, जैसा यह यहां चलि आई।
परस्पर लोग कहें यह बात, यह है वेदमय जन साक्षात।

ज्ञानी योगी परम मनस्वी, हयग्रीव सम नहीं तपस्वी।

दो०– हयग्रीव के रूप में, थे आये करतार।
राम लाल ही रूप उस, आये तन थे धार।। 6934

(ञ) व्यास

वेद का विस्तार बहु, देखा जब करतार।
संयमित उस को करन हित, फिर आये तन धार।। 6935

वेद व्यास के रूप में, तब आए भगवान।
संग्रह मन्त्रों का किया, था यह कार्य महान।। 6936

ऋषि पराशर के घर जाया, सत्यवती का पूत कहाया।
कृष्ण द्विपायन जन्म का नाम, विद्वान भया वह परम ललाम।
वेद ज्ञान का परम ज्ञाता, शिक्षित करता जो जन आता।
जनता ज्ञान वेद से पाये, संग्रह वेद थे उस कर पाये।
पण्डित जन उस पास जो आते, संशय निवृत्ति कर के जाते।
शाखा वेद की उस बनाई, जन गण को जो भयी सुख दायी।
कृष्ण द्विपायन सबन पढ़ाता, वेद व्यास भया विख्याता।
प्रभु अवतार जभी घर आवें, जग को शिक्षा वे दे पावें।

दो०–अज्ञान के अंधकार में, जब डूबे संसार।
आयें प्रभु तब जगत में, ले कर के अवतार।। 6937

आर्य धर्म प्रभु को प्रिय, और वैदिक ज्ञान।
आर्यों पर जब भीड़ पड़ी, आये तभी भगवान।। 6938

(ट) वराह

आर्य जाति थी जहां बसी, वहां आया तोफान।
प्रलय काल का दृश्य था, जल में मग्न जहान।। 6939

सर्वनाश था हो चला, न बचता को जीव।
प्रभु ने रक्षा कीन तब, रचा उपाय अजीब।। 6940

'वराह' नाम से प्रकटे, पुरुषोत्तम भगवान।
महापोत निर्माण किया, उस से भया त्राण।। 6941

सब जनता उस पोत आसीन, वराह ने इस विध रक्षा कीन।
सुरक्षित पार पहुंच वे पाये, सब के प्राण वराह बचाये।
यदि न होत वराह अवतार, लोग न होते पोत असवार।
आर्य वंश का नाम निशान, लेश न रहता इस जहान।
रूप महापुरुष का धारा, वराह नाम से जगत पुकारा।
किमि भूले जग वह उपकार, अलौकिक कीनी थी जो कार।
रामलाल उस रूप थे आये, जिस ने आर्य थे लोग बचाये।
रामलाल की दया अनूप, धारे कालानुसार जो रूप।

दो०–रक्षक आये बन प्रभु, महापुरुष के रूप।
वराह नाम को धार कर, कीना कर्म अनूप।। 6942

समय समय पर राम ने, धारे अनेकों रूप।
मर्यादा अनुसार ही, रख कर निज को गूप।। 6943

(ठ) मत्स्य

एक बार फिर हो गया, पृथ्वी का वही हाल।
बाढ़ बढ़ी उस काल जो, सका न को संभाल।। 6944

आर्य जगत का ज्ञान जो, वेदों में संग्रहीत।
नाश था उस का हो चला, उसी बाढ़ में मीत।। 6945

प्रकट भये तब राम जी, लीने वेद संभाल।
नौका में अस्वार भये, बचे वेद उस काल।। 6946

प्रभु ने काल उस वेद बचाये, महापुरुष के रूप में आये।
तेजोमय था रूप महान, जग में न कोई उस समान।
बैठ नौका में रहे विराज, बाढ़ पै करत जिमि हो राज।
नौका बाढ़ में डुबकी लाये, जिमि नीर में मत्स्य तर पाये।
बाढ़ थमी तब पार लगाई, नौका तट पर थी रुक पाई।
सभी कहें यह मत्स्य भगवान, जल में तैरत उसी समान।
प्रकट करें हम किमि आभार, वेद बचा लाये इस पार।
जल में बह जाते यदि वेद, जगती में छा जाता खेद।

दो०–मतस्य नाम से प्रकट भये, रामलाल उस काल।
बाढ़ में थे डूब रहे, लीने वेद संभाल।। 6947

भक्तों के प्रभु रक्षक, रक्षा करें हमेश।
भक्त होंय जब दुविध में, प्रकट भयें सर्वेश।। 6948

(ड) महाकच्छप

देव व दैत्य भ्रात थे, सतयुग में लो जान।
समुद्र से धन प्राप्त हित, कीन प्रयास महान।। 6949

भाइयों ने मिल इमि विचारा, समुद्र में है धन बहु भारा।
हमारा ऐसा है विश्वास, करेंगे मिल कर हम प्रयास।
जितना धन समुद्र में होय, हम निकालें सारा सोय।
इमि सोचन में काल बिताया, कोई उपाय पर मिल न पाय।
भये हताश देव बेचारे, दैत्य भी थे सारे हारे।
समुद्र जल बहु गहरा होय, डुबकी लाय न इस में कोय।
प्रयास तब कुछ एक ने कीन, समुद्र तल की थाह न लीन।
बढ़ बढ़ कर वे करत प्रयास, पूजती न पर किसी की आस।
देव कहें हम तो धन लायें, हताश हो कर चुप हो जायें।
दैत्य भी निज बल दिखलायें, वे भी नहीं सफलता पायें।

दो०–दैत्य भये हताश तब, देव भी थे हताश।
भगवान पर ही सब की, थी लागी तब आश।। 6950

एक पुरुष तब वहां चलि आया, तेज विलक्षण उस मुख छाया।
देव व दैत्य नहीं वह कोई, असुर समान भी न वह होई।
उसी की ओर सभी निहारें, 'स्वागत' कह उस को सत्कारें।
था तो महापुरुष वह कोई, पहचान थी न जिस की होई।
महापुरुष ने सबन पुकारा, किस निमित्त यहां डेरा डारा।
मैं जानूँ तुम परस्पर भाई, पराशर की संतान कहाई।

जो प्रयोजन आप का होय, जानन चाहूँ मैं वह सोय।
यदि नहीं कुछ गुप्त होय मीत, खोल बतलाओ अपना चीत।

दो०– किस कारण सब आ गए, समुद्र तट पै आप।
रुक गया मैं देख कर, क्या कोई संताप।। 6951

कहा देवों ने "पुरुष महान, बात जो पूछी लेवो जान।
हम देव ये दैत्य हैं मीत, हम भाइयों में परस्पर प्रीत।
समुद्र में हो बहुत खज़ाना, ऐसा हम ने है अनुमाना।
हम प्रयत्न बहुत कर पाय, हाथ लगा न कोई उपाय।
समुद्र से धन किमि पा जायें, कोई उपाय आप बतायें।
यदि आप कोई जानें रीत, हमें बताइये खोल के चीत"।
कहा पुरुष "हे देवन भाई, और हे दैत्यन की समुदाई।
व्यर्थ प्रयास जो तुम है ठाना, इस का अन्त न तुम अनुमाना।
समुद्र की तो थाह न मीत, खज़ाना कहां है न प्रतीत।
समुद्र में तो नीचे जाना, क्या तुम ने है सुगम यह माना।
छोड़ो अब तुम यह प्रयास, समुद्री धन की त्यागो आस।
भूमि से ही धन उपजाओ, और प्रजा को पाल दिखाओ।

दो०– भूमि में सभी धन है, सर्व सुखों की मीत।
[1]वसुधा इस का नाम है, हो तुम्हें प्रतीत"।। 6952

महापुरुष की सुन कर वाणी, दैत्यों ने न वह सन्मानी।
कहन लगे "हम धन को चाहें, समुद्र से ही जो ले पायें।
बातों में न हमें उलझाओ, कहो सहायक किमि हो पाओ।

1. वसुधा – धन को धारण करने वाली।

दिव्य पुरुष तुम को अनुमानें, तुम्हें सहायक अपना जानें।
सुनी महापुरुष यह वाणी, देवों की लाचारी जानी।
सागर ओर उन कदम बढ़ाया, प्रवेश समुद्र में कर पाया।
देव व दैत्य देखन लागे, वे सभी आश्चर्य में पागे।
कौन पुरुष यह कहां से आया, समुद्र में जो घुस है पाया।
डुबकी उस ने जभी लगाई, समुद्र तल पै देह रुक पाई।

दो०–समुद्र तट पर जा पड़ी, महापुरुष की देह।
दैत्य देव थे देखते, साहस उन का येह।। 6953

समुद्र तट पर दीखता, धूमिल सा वह रूप।
पुरुष समान न दीखता, कच्छप सम स्वरूप।। 6954

आश्चर्य से थे देखते, दैत्य देव वह रूप।
कई दिवस वे बैठ रहे, शशोपंज में गूप।। 6955

एक दिवस वह आ गया, निकल समुद्र बाहर।
लदा था उसकी पीठ पर, समुद्र का उपहार।। 6956

उस भार को पटक कर, लुप्त भया तत्काल।
लगे सभी जन देखने, पदार्थ वह उस काल।। 6957

वह सामग्री मिल कर देखी, वह थी अमूल्य निधि जो पेखी।
इतना धन देख चकराये, देव–दैत्यों के मन लुभाये।
देव चाहें यह धन ले जायें, दैत्य भी मन में ऐसा लायें।
दोनों में तब भया तकरार, माने कोई भी न निज हार।
जैसे तैसे धन बंट पाया, धन दिखलायी अपनी माया।

भाई भाई भये बेगाने, बिगड़ी बुद्धि नहीं पहचानें।
धन ने फोड़ दिये थे भाई, जाति आर्य दुर्बल हो पाई।
आर्य जाति का यही इतिहास, धन के लोभ से इस का नास।
महाभारत युद्ध का इतिहास, लोभ कारण था भया विनास।
जन गण में है लोभ समाया, प्रबल लोभ की ऐसी माया।
धन को धर्म का सहचर माना, मन्दिरों में बहु जुटा खज़ाना।
लूटने जिसे विधर्मी आये, और गुलाम देश कर पाये।
अब भी लोभ का दोष न जानें, पाप करें निज भरें खज़ाने।
लोभ ने कीनी बुद्धि विनाश, धूमिल भविष्य बदा हे नाश।

दो०–इस जाति को लोभ ने, कीना है बरबाद।
दोष अनेकों आ गये, एक दूजे के बाद।। 6958

शक्ति इस में न रही, घर छोड़े कई बार।
माल लुटाया अपना, शत्रु कीन खवार।। 6959

आर्यों के इस दोष से, भई परस्पर फूट।
आर्यों का जहां राज्य था, देश गया वह छूट।। 6960

(ढ) वामन

फूट आर्यों में देख कर, आये प्रभु तन धार।
वामन के वे रूप में, आर्यों के रखवार।। 6961

चौबीस बार प्रकटे, राम प्रभु इस भूम।
मन सेवक का करत है, ले भूम यह चूम।। 6962

वामन बन प्रभु राम थे आये, खण्डित जाति जिमि बच पाये।
अदिति के पुत्र बन कर आये, देवों में कनिष्ठ कहलाये।
वामन था इस कारण नाम, रूप तेजस्वी देह अभिराम।
भाइयों भाइयों में हो प्रीत, वामन चित में यह थी नीत।
भाइयों में था कनिष्ठ महान, गुणों में बहु श्रेष्ठ सुजान।
देवों को जा कर समझाता, दैत्यों से भी बात कर पाता।
परस्पर भाइयों में हो प्यार, कहता यही बात हर बार।
बात न उस की को भी माने, अहंकार में थे वे अंध्याने।

दो०– वामन चाहता हित था, आर्य जाति का मीत।
अहंकार वश न मानते, वामन की वे नीत।। 6963

वामन की न मान कर, दुर्बल भये थे आर्य।
शत्रु हावी हो गये, सारा बिगड़ा कार्य।। 6964

देव भूमि भयी आसुरी, आये अनार्य लोक।
दूषित कीना द्वीप वह, बना नरक था लोक।। 6965

आर्य जाति का है दुर्भाग, बुद्धि को है लागी आग।
बार प्रथम थे वामन आये, समझ न आर्य तब कुछ पाये।
राज्य गंवाया भये बरबाद, सुनिये इस के भी कुछ बाद।

(ण) श्री कृष्ण

कौरव पांडव जब भिड़ पाये, कृष्ण रूप में प्रभु थे आये।
कृष्ण ने था बहुत समझाया, वह उपदेश न बुद्धि समाया।
लड़ कर आर्य भये बरबाद, नाम निशान न रहा उस बाद।

सर्व जगत को विदित है भाई, वो महाभारत की लड़ाई।
भाइयों भाइयों में फसाद, ने कीना आर्य जगत बरबाद।

दो०–बुद्धि नाशे सर्व विनाश, उक्ति है यह ठीक।
आर्य नहीं पहचानी, नीति की यह लीक।। 6966

आपस की जब फूट से, आर्य दुर्बल हो पाये।
बहुत देशों से निकल वे, भारत में आ पाये।। 6967

(त) पृथु

भयंकर देश था भारत तब, सूखी धरती भी थी तब।
राक्षसों से थी वह आक्रांत, स्थान नहीं बसें जहां शांत।
जहां बसें राक्षस आ जायें, वे तो मानव को खा जायें।
आर्यों ने जब प्रभु पुकारा, पृथु रूप में राम अवतारा।
समतल भूमि उस करवाई, बस्ती आर्यों की बन पाई।
योग्य कृषक भूमि बनवाई, कृषि वहां पर हरयायी।
भारत में आर्य थे बस पाये, जम्बु द्वीप से निकल के आये।
राक्षस सहन न वह कर पाये, ये विदेशी कहां से आये।

(थ) श्री राम

दो०–राक्षसों के आक्रमण से, आर्य भये परेशान।
प्रभु की लीनी शरण जब, राम आये भगवान।। 6968

बीते सैंकड़ों वर्ष थे, आर्यों को यहां आय।
सह रहे थे जुलम वे, राक्षस जो कर पाय।। 6969

दुःख आर्यों का देख कर, आये राम भगवान।
दशरथ के बने पुत्र, प्रकटे भारत आन।। 6970

दशरथ ने थे कीन बहु, राक्षस विरुद्ध युद्ध।
घर त्यागा था राम भी, करने उन से युद्ध।। 6971

लक्ष्मण भी था साथ उस, हते राक्षस बहु बार।
राक्षस करते राम पर, आ कर घोर प्रहार।। 6972

राक्षस सैना जब हती, खर दूषण की राम।
रावण जो सम्राट था, आया करन संग्राम।। 6973

रावण उस में था हता, भयी राम की जीत।
आर्यों का साम्राज्य भया, भारत पर इस रीत।। 6974

प्रभु प्रकटे थे धर्म हित, आर्य धर्म के हेत।
क्षति भये जब धर्म की, आवें लेने चेत।। 6975

राक्षस कीने समाप्त उन, भारत से उस काल।
प्रभु तो रहे सदैव ही, आर्यों पर दयाल।। 6976

आर्य पर नहीं समझते, दया प्रभु की मीत।
वे अधर्म पर ही चलें, त्याग धर्म की रीत।। 6977

वामन ने था सतयुग समझाया, द्वापर में बन कृष्ण था आया।
उन की शिक्षा को न मान, आर्यों ने कीनी अपनी हान।
त्रेता बीता द्वापर आया, भारत आर्यों का बन पाया।
आर्यों के यहां राज्य बन पाये, सुख समृद्धि वहां सकल सुहाये।

आर्यों की न आदत छूटी, मैत्री भाइयों की फिर टूटी।
कौरव पाण्डव भाई भाई, शत्रुता उन में हो पाई।
नौबत युद्ध तक आ पाई, कुरुक्षेत्र में भई लड़ाई।
आर्य जाति का हो गया नाश, कृष्ण देख यह भये हताश।
द्वापर बीता कलियुग आया, आर्य जगत था कुछ हर्षाया।
समृद्धि ने निज रूप दिखाया, जग का मुखिया भारत कहलाया।

दो०–जग का मुखिया बन गया, भारत था उस काल।
सब जग में विख्यात था, भारत वर्ष खुशहाल।। 6978

पुनः रोग ने आन दबाया, झगड़ा भाइयों में हो पाया।
जयचन्द और पृथ्वीराज, इन बिगाड़ा सारा काज।
परस्पर शत्रुता हो पाई, आसुरी सैना यहां बुलाई।
उस ने कीना देश अधीन, भाइयों के भी प्राण थे लीन।
आर्य जगत गुलाम हो पाया, सैंकड़ों वर्ष गुलाम रह पाया।
कैद में भूल गया निज रूप, हो गया रूप से वह कुरूप।

(द) श्री प्रभु रामलाल

दया प्रभु जी फिर कर पाये, रामलाल तब बन कर आये।
ब्राह्मण कुल में लीन अवतार, प्रकटे वे थे अमरितसार।
योग शक्ति को संग थे लाये, और शक्ति न काम में आये।
संकल्प शक्ति से होगा काम, ऐसा विचारा आ कर राम।
संकल्प को प्रयोग में लाया, स्वतंत्र देश तभी हो पाया।
भारत को आज़ाद कराया, आर्य जगत को फिर समझाया।

दो०–आर्यों को समझाया, योग करो मिल भाई।
योग युक्ति यह जानिये, हिन्दू भाई – भाई।। 6979

हिन्दू भाई नहीं बन पाये, वैरी पक्ष उन्हें सुहाये।
हिन्दू को न संगठन सुहाये, उसे विघटन में सुख आये।
आर्यों की यह रीति चलि आयी, भाई–भाई की हो लड़ाई।
रीत यह सतयुग से चलि आयी, परंपरा यह है दुखदायी।
नेता पन और धन बहु चाहें, भोली जनता मगर लगायें।
वैरियों से वे करते प्यार, झगड़े आपस में बहु बार।
जिस जाति की हो हालत ऐसे, सुधरे उस की हालत कैसे।
भविष्य उस का धूमिल भाई, बचने की नहीं आशा राई।
बचने का बस एक उपाय, हिन्दू का हिन्दू बने सहाय।
उपाय एक और लो जान, अतीत को भी ले पहचान।

दो०–जो भुलाये अतीत को, सशक्त किमि हो पाय।
बच्चा सिंह का शेर हो, गर्ज जभी सुन पाय।। 6980

5. जम्बु द्वीप में सम्राट इन्द्र का शासन और इन्द्रस्तुति

हिन्दू लेंय अतीत को जान, भूमण्डल के सम्राट महान।
जम्बु द्वीप में उन का वास, इन्द्र का जहां आसन खास।
इन्द्र विश्व विजयी था मीत, हिन्दू उस की संतति चीत।
[1]इन्द्र अधीन थे नौ प्रदेश, जिन में था इक भारत देश।
और देशों के नाम लो जान, इलावृत वर्ष एक पहचान।
दूजा रम्यक वर्ष है भाई, तीजा हिरण्यक वर्ष कहाई।

---

1. इन्द्राधीन नौ देश :–
   1. इलावृतवर्ष 2. रम्यकवर्ष 3. हिरण्यकवर्ष 4. कुरुवर्ष
   5. हरिवर्ष 6. किम्पुरुषवर्ष 7. भद्राश्ववर्ष 8. केतुमालवर्ष
   9. भारतवर्ष

चौथा कुरु वर्ष कहलाये, पंचम हरिका वर्ष सुहाये।
किम्पुरुष वर्ष है छटा मीत, सप्तम भद्राश्ववर्ष लो चीत।
अष्टम केतुमाल सुहाये, भारत वर्ष तो नवम आये।
इलावृत को देश लो जान, सभी देशों में एक महान।
वहां करता था इन्द्र शासन, प्रसिद्ध वहां का "इन्द्रासन"।
इन्द्रासन पर बैठत जोय, जम्बुद्वीप का राजा सोय।
इन्द्र पदवी वह पा जाये, आसन जिस के भाग्य में आये।
इस आसन पै भये आसीन, सतयुग में इन्द्र बहु लो चीन।
कुछ के नाम हम यहां बतायें, इतिहास में वे सभी सुहायें।
प्रभु कृपा सभी पै हो पायी, जग पर थी उनकी प्रभुताई।

दो०–राम लाल प्रभु विश्व की, सदा करें संभाल।
आर्य जगत के राम जी, हैं स्वयं प्रतिपाल।। 6981

सतयुग में जो हो गये, इन्द्रासन आसीन।
उल्लेख उन का मैं करूँ, मिले ज्ञान नवीन।। 6982

विस्मृत भया इतिहास यह, आर्य जगत का मीत।
आर्यों के सम्राट जो, सुनिये ला कर चीत।। 6983

'इन्द्र' सभी कहलाये, जिस का अर्थ 'सम्राट'।
शत्रु उन से कांपते, थी अनोखी ठाट।। 6984

यशोगान है वेद में, इन्द्र का बहु बार।
इन्द्र राजा विश्व का, शत्रु मानें हार।। 6985

विदित होय सब जगत को, इन्द्र का है राज।
सभी जीव सुख से रहें, विपरीत होय न काज।। 6986

[1] विजय इन्द्र की है भयी, कीन वृत्र संहार।
जगत सकल है कर रहा, उस की जय जय कार।। 6987

अजात शत्रु है इन्द्र, शत्रु रहा न कोय।
जिस ललकारा आय कर, परास्त भया था सोय।। 6988

आज विश्व में डर रहा, इन्द्र से हर कोय।
उस के भय से कांपते, दैत्य व दानव जोय।। 6989

---

1. देखें ऋग्वेद :–

1. इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नो अस्तु द्विपदे
शं चतुष्पदे।। ऋ. 7.3 5.14
अर्थ – इन्द्र का राज्य पूर्ण विश्व पर है, सभी मनुष्य (द्विपद अर्थात् दो पैरों पर चलने वाले) और समस्त पशु (चतुष्पद–चार पैरों पर चलने वाले) शांति पूर्वक रहें अर्थात् कोई किसी पर अत्याचार न करे।
2. अरेजेतां रोदसी भियाने – बज्रात्। ऋ. 2.11.9
अर्थ–इन्द्र के वज्र से भयभीत हो कर द्यावा पृथ्वी कांपते हैं।
3. यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः। ऋ. 2.12.13
अर्थ– उस इन्द्र के हाथ में वज्र है।
4. इन्द्रो वज्री हिरण्ययः। ऋ. 1.7.2
अर्थ – इन्द्र वज्रधारी और सुवर्णालंकृत है।
5. अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे। ऋ. 10.13 3.2
अर्थ–हे इन्द्र! तुम्हारा कोई शत्रु नहीं है।
6. अशत्रुरिन्द्र जनुषा सनादसि। ऋ. 1.102.8
अर्थ–हे इन्द्र! तुम जन्म से ही शत्रुरहित हो।

आगे देखें . . .

पापी टिक नहीं पाय, इन्द्र के साम्राज्य।
अघ संहारी इन्द्र है, जग में उस का राज्य।। 6990

हे इन्द्र! इस जगत में, तव शत्रु है न कोय।
बसात है किस जीव में, सन्मुख जो तव होय।। 6991

इन्द्र की पहचान यह, वज्र उस के हाथ।
परास्त होय वह शत्रु, उस लड़े जो साथ।। 6992

रक्षक हमारे हो तुम, दोष निवारक नाथ।
हे इन्द्र! हम शरण तव, भाग्य तुम्हारे हाथ।। 6993

---

7. अजातशत्रुरस्तृत। ऋ. 8.93.15
   अर्थ–वह इन्द्र अजातशत्रु और अजेय है।
8. अथेदं विश्वभुवनं भयाते। ऋ. 10.27.22
   अर्थ–उस इन्द्र से सारा संसार भयभीत होता है।
9. सहस्रंत इन्द्रोतयो नः। ऋ. 1.167.1
   अर्थ–हे इन्द्र! तुम्हारे संरक्षण के सहस्रों प्रकार हैं।
10. इन्द्र त्रातोतभवा वरूता। ऋ. 6.25.7
    अर्थ–हे इन्द्र तुम हमारे रक्षक और दोष निवारक हो।
11. त्रातारमिन्द्रम् अवितारमिन्द्रम। ऋ. 6.47.11
    अर्थ–इन्द्र रक्षक और पालक है।
12. न त्वावां इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यते। ऋ. 1.81.5
    अर्थ–हे इन्द्र! तेरे जैसा न कोई हुआ है और न होगा।
13. न कोमिन्द्रो निकर्तवे श्रक्रः परिशक्तवे। ऋ. 8.75.5
    अर्थ–इन्द्र को न कोई जीत सकता है और न हरा सकता है।
14. यस्मादिन्द्राद् बृहतः किं चनेमृते। ऋ. 2.16.2
    अर्थ–उस महान इन्द्र के अतिरिक्त कोई और बलवान नहीं।

आगे देखें . . .

गाएं इन्द्र के गीत मिल, सब प्रजा के लोग।
अर्चना इन्द्र की करें, इन्द्र पूजा योग।। 6994

स्वर्णाभूषणों से भरा, इन्द्र का है रूप।
वज्र उस के हाथ में, ऐसा रूप अनूप।। 6995

नीति का मर्मज्ञ वह, देवेन्द्र महाराज।
कीन वृत्र परास्त उस, विदित जगत को आज।। 6996

असुर पापी थे जगत में, थी प्रजा परेशान।
नष्ट कीन उस सबन को, इन्द्र के कौन समान।। 6997

इन्द्र सम न कोई भया, न ही हो इस बाद।
इन्द्र अनूपम शक्ति है, सदा रहेगा याद।। 6998

इन्द्र से नहीं को बड़ा, न को इन्द्र समान।
इन्द्र इन्द्र समान है, जाने सकल जहान।। 6999

पापिन को वह मारता, होय असुर या अन्य।
पापी रहे न जगत में, इन्द्र तू है धन्य।। 7000

*एकोनशत असुर जन जिस, हनन किए इक साथ।
इन्द्र की इतिहास मध्य, बहु चर्चित यह गाथ।। 7001

---

15. विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः। ऋ. 10.86.1
अर्थ–इन्द्र सब से बढ़ कर है।

16. इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि ऋ. 3.32.8
अर्थ–इन्द्र के श्रेष्ठ कर्म अनन्त हैं।

11. पुरू च वृत्रा हनति नि दस्यून। ऋ. 6.29.6
अर्थ–तुम अनेक पापियों और नीचों को नष्ट करते हो।

*एकोनशत – 99

6. इन्द्रासन पर समय–समय पर आसीन कुछ इन्द्रों के नाम

(क) पुरन्दर

[1]कुछ इन्द्रों के नाम बताऊँ, शास्त्रों में जो वर्णित पाऊँ।
पुरन्दर एक भया विख्यात, उपमा उस की कहीं न तात।
जम्बु द्वीप पै उस का शासन, सुशोभित उस से 'इन्द्र आसन'।

(ख) बलि

[2]इन्द्र एक और कथ पाऊँ, विरोचन पुत्र बलि बतलाऊँ।
दीर्घ काल उस कीना शासन, विराज रहा इन्द्र के आसन।
भाइयों से थी कीन लड़ाई, जिस का वर्णन आगे आई।
वामन ने था कीन प्रयास, टल सका नहीं युद्ध वह खास।
उस परस्पर युद्ध से भाई, शक्ति आर्यों की घट पाई।
इतिहास की यह घटन विशेष, इस से शिक्षा मिलत विशेष।
भाई ही होते भाई मीत, उन से दृढ़तम राखें प्रीत।
भाइयों से जो करे लड़ाई, उस की करे न कोई बढ़ाई।

दो०–भाइयों के उस युद्ध से, काला है इतिहास।
आर्य शक्ति के ह्रास का, यह है कारण खास।। 7002

---

1. देखो श्रीमद्भागवद् 8.23
2. उपलब्ध आठ इन्द्रों के नाम:–
   1. पुरन्दर 2. बलि (विरोचन पुत्र) 3. अद्भुत 4. शम्भु
   5. वैधृत 6. ऋतधामा 7. दिवस्पति 8. शुचि

(ग) अद्भुत

इन्द्र मैं इक और बतलाऊँ, 'अद्भुत' उस का नाम कथ पाऊँ।
अद्भुत उस ने कीने कर्म, युद्ध विद्या का जानत मर्म।
उस ने असुर ननानवें मारे, शत्रु और अनेक संहारे।
ऋषियों ने तभी यश बखाना, रची ऋचायें गाया गाना।
उस के भय से डरत संसार, विधर्मी पापी व बदकार।
दीर्घ काल उस शासन कीन, इन्द्रासन पै रहा आसीन।
सुन्दर सतयुग का वह काल, सब प्रकार से द्वीप खुशहाल।
श्रेष्ठ कर्म जो उस कर पाये, ऋचाओं में हैं बहुविध गाये।

दो०–इस इन्द्र के काल में, थी प्रजा खुशहाल।
असुर प्रास्त थे भये, वेद रचे उस काल।। 7003

(घ) शंभु

एक इन्द्र है और बखाना, शम्भु नाम से जग ने जाना।
अजात शत्रु उस को कह पाये, कोई न शत्रु सन्मुख आये।
वज्रधारी वह वीर महान, वेद करें उस का गुनगान।
शम्भु नाम से उस को जानें, उसे न्याय का रक्षक मानें।
रक्षक और है दोष दुराई, शम्भु को जानें जग सुखदाई।
इन्द्रासन जब होत आसीन, स्वर्णालंकृत उसे लें चीन।
आर्य जगत का भूषण जानें, असुरारी भी उसे पहचानें।
रहा न शत्रु उस का कोई, अजात शत्रु इस विध वह होई।

दो०–अजात शत्रु वह इन्द्र, शत्रु न उस का कोय।
उस का शत्रु जो भये, हाथ प्राण से धोय।। 7004

(ङ) वैधृत

एक इन्द्र हम और बखानें, वैधृत उस के नाम को जानें।
दीर्घ काल उस कीना राज, इन्द्रासन पै रहत विराज।
इलावृत था देश महान, उस के सम नहीं और जहान।
वह देश स्वर्ग कहलाया, इस नाम से प्रसिद्ध हो पाया।
उस देश में सुख जो छाये, सुख स्वर्गिम वही कहलाये।
वैधृत उस स्वर्ग का स्वामी, विश्व विजयी वह नामी ग्रामी।
उस के नाम से असुर आतंकित, निज जीवन से सभी थे शंकित
वैधृत स्वर्ग सम्राट कहाया, इन्द्रासन पै सदा सुहाया।

दो०–इन्द्रासन पर बैठ कर, वैधृत करता राज।
असुर आतंकित रहत थे, वैधृत के तब राज।। 7005

(च) ऋतधामा

इन्द्र एक और हुआ, सतयुग में विख्यात।
ऋतधामा के नाम से, विश्व विजयी वह तात।। 7006

ऋतधाम बहु वीर था, और बहुत विद्वान।
'ऋत' नाम सार्थक किया, इन्द्रासन की शान।। 7007

ऋतधाम को सकत न को जीत, यही थी आर्यों की तब रीत।
'आर्य अजेय' सभी यह मानें, उन समान न अजेय को जानें।
ऋतधाम सम न को बलवान, उस समान नहीं बुद्धिमान।
सब से बढ़ कर वह जग माहीं, उस के सम भी को था नाहीं।

जगत में भया न उस समान, और न होयगा उस समान।
ऐसी धारणा थी जग माहीं, ऋषियन ऋचायें ऐसी गायीं।
असुरों की नहीं चाले पेश, आर्य अधीन ये सारे देश।
रम्यक वर्ष पै उस का शासन, इलावृत वर्ष में इन्द्रासन।

दो०–हिरण्य वर्ष में आर्य थे, संग में हरि के वर्ष।
कुरुवर्ष था आर्य अधीन, व किम्पुरुष भी वर्ष।। 7008

भद्राश्व वर्ष में आर्य, केतुभाल के वर्ष।
सब द्वीप में आर्य थे, न थे भारत वर्ष।। 7009

आर्यों का साम्राज्य था, जम्बु द्वीप उस काल।
ऋतधामा था इन्द्र तब, सतयुग का था काल।। 7010

(छ) दिवस्पति

एक इन्द्र का और भी, कथन करे इतिहास।
नाम उस का दिवस्पति, सम्राट जो था खास।। 7011

दिवस्पति सम्राट था भारी, महिमा उस की जग प्रसारी।
सब द्वीपों में उस का नाम, उस के कर्म सभी अभिराम।
वृत्रासुर से उस का द्वेष, उसे न भय था उस का लेश।
जब कभी वह करत चढ़ाई, घनासार थी होत लड़ाई।
दिवस्पति की विजय हो जाती, थी असुर की हार हो पाती।
असुर भये थे पूर्ण हताश, खो चुके थे सारी आश।

नव खण्डों में नहीं को स्थान, अपना देश जो लेंवे जान।
इन्द्र का था शासन कठोर, असुरों की न कहीं भी ठोर।

दो०–[1] सात द्वीप [2]नव खण्ड में, सम्राट वह विख्यात।
दिवस्पति सभी विश्व में, था प्रसिद्ध हे तात।। 7012

(ज) शुचि

[3]इक इन्द्र हुआ और भी, विख्यात उस समान।
शुचि नाम से है लिखा, शास्त्रों में लो जान।। 7013

शास्त्रों में है नाम बखाना, नाम से न पर किसी भी जाना।
इन्द्र नाम से ही विख्यात, जग प्रसिद्ध वह इन्द्र तात।
सतयुग का इतिहास बनाया, वृत्रासुर से जब लड़ पाया।
क्षीर सागर तट भया था युद्ध, विश्व का वह प्रथम महायुद्ध।
उस का वर्णन आगे मीत, जिस में इन्द्र की होय जीत।
वह भयंकर युद्ध था भाई, साधारण थी न वह लड़ाई।

---

1. सात द्वीप –
   1. प्लक्ष द्वीप 2. शाल्मली द्वीप 3. कुश द्वीप 4. क्रौंच द्वीप
   5. शाक द्वीप 6. पुष्कर द्वीप 7. जम्बु द्वीप
2. नव खण्ड–
   1. इलावृत 2. रम्यक 3. हिरण्यक 4. कुरु
   5. हरि 6. किम्पुरुष 7. भारत 8. भद्राश्व
   9. केतुमाल
3. इन्द्रासन पर परंपरागत बैठने वाले कुछ इन्द्रों के नाम:
   1. पुरन्दर 2. बलि 3. अद्भुत 4. शम्भु
   5. वैधृत 6. ऋतधाम 7. दिवस्पति 8. शुचि

उस को देख रहा संसार, जिस में वृत्र की भई हार।
इन्द्र ने वृत्र को संहारा, जग में छाया हाहाकारा।

दो०–द्वीप सप्त में छा गया, वृत्र हनन का शोक।
वृत्रासुर अति वीर था, कथन करें सब लोग।। 7014

7. जम्बु द्वीप के पर्वत जहां ऋषियों ने वेद ऋचायें रचीं

इन्द्र महिमा कविगण गावें, ऋचाओं में जो बहु सुहावे।
इन्द्र यश नव खण्ड में छाया, जम्बु द्वीप था सकल सुहाया।
जम्बु द्वीप के पर्वत खास, ऋषिजनों का वहां पै वास।
वेद ऋचायें वहां गुंजावें, ऋषिवर्ग जो अहर्निश गावें।
[1]उन पर्वतों के नाम लो जान, जम्बु द्वीप की शोभा मान।
हिमालय को लें प्रथम बखान, विश्व में सब से ऊँचा जान।
पूर्व से पश्चिम जो छाया, जम्बु द्वीप इस से बंट पाया।
दक्षिण में भारत लो जान, उत्तर में खण्ड आठ पहचान।

दो०–एकोनचालीस (39) शैल का, द्वीप जम्बु पहचान।
हिमालय सबसे है बड़ा, नाम अन्य भी जान।। 7015

---

1. जम्बु द्वीप के पर्वत :–

1. मेरु	2. नील	3. श्वेत	4. श्रृंगवान	5. निषद
6. हेमकूट	7. हिमालय	8. गन्धमादन	9. माल्यवान	10. मन्दर
11. मेरुमन्दर	12. सुपार्श्व	13. कुमुद	14. कुरङ्ग	15. कुरु
16. कुसुम्भ	17. कैकङ्क	18. त्रिकूट	19. पतङ्ग	20. रुचक
21. निषध	22. शिनीवास	23. कपिल	24. शंख	25. वैदूर्य
26. जारुधि	27. हंस	28. ऋषभ	29. नाग	30. कालंजर
31. नारद	32. जठर	33. देवकूट	34. पवन	35. पारियात
36. कैलास	37. करवीर	38. त्रिशृङ्ग	39. मकर	

गन्धमादन, मन्दर लो जान, माल्यवान व नील पहचान।
मेरुमन्दर भी है इक भाई, दूसर श्रृंगवान कहलाई।
निषद पर्वत भी लो जान, मेरु, श्वेत, त्रिकूट पहचान।
कुरङ्ग, कुमुद, पतङ्ग है मीत, रुचक, निषध, शंख, हंस भी चीत।
सुपार्श्व, कुरु, कुसुम्भ कहलाई, कैकङ्ग, ऋषभ, कपिल भी आई।
वैदूर्य, जारुधि पर्वत दोय, कालंजर नारद नाग भी होय।
शिनीवास और पारियात, पर्वत ऋषभ भी साक्षात।
जठर व देवकूट कहलाये, पवन और कैलास बताये।

दो०–त्रय पर्वत हैं और भी, सुन लेवो हे मीत।
मकर एक का नाम है, अन्य त्रिशृङ्ग लो चीत।। 7016

करवीर पर्वत तीसरा, उस की शोभा मीत।
देखत ही थी वह बनत, मन को लेता जीत।। 7017

उन पहाड़ों से निकलते, दरया अनेकों मीत।
थे आश्रम ऋषि जनन के, किनारों पर लो चीत।। 7018

पहाड़ों पर भी बसत थे, योगी परम ललाम।
राम प्रभु के भक्त सब, भजन ही उन का काम।। 7019

सुन्दर सारा द्वीप था, जनता थी खुशहाल।
छत्रपति तब इन्द्र था, सतयुग में उस काल।। 7020

कवियों ने थे जो रचे, मन्त्र सतयुग मीत।
वेद संग्रह सब हो गये, साम आदि लो चीत।। 7021

ऋषि अनेकों थे भये, जिन रचे थे गीत।
सब का वर्णन क्या करें, वर्णें कुछ ही मीत।। 7022

8. वेद ऋचाओं के कर्ता कुछ ऋषियों के नाम

कथन करें हम नाम कुछ, उन को कर प्रणाम।
उन के ही तो कारणे, भारत का है नाम।। 7023

सुन्दर सूक्तियां उन रचीं, वेदों में जो 'सूक्त'।
[1]'पुरुष सूक्त' प्रसिद्ध है, शंसे कण्ठ जग मुक्त।। 7024

उसका रचयित जान लो, 'नारायण' ऋषि महान।
अनेक ऋषि हैं और भी, उस के जो समान।। 7025

सब ऋषियों पर जान लो, राम कृपा थी मीत।
वेद प्रिय हैं राम को, वैदिक संस्कृति चीत।। 7026

[2]ऋषियों के जो सैकड़ों नाम, कुछ ही वर्णूं कर प्रणाम।
अरुणौ वैतहव्य है मीत, अग्नि सूक्त उस रचा सप्रीत।

---

1. नारायण ऋषि कृत पुरुष सूक्त ऋग्वेद म. १० सू. ९०

2. वैदिक सूक्तों के रचयिता कुछ ऋषि :–

1. नारायण	– पुरुष सूक्त के रचयिता	–	ऋ. १०.९०
2. अरुणौ वैतहव्य	– अग्नि सूक्त	–	ऋ. १०.९१
3. शार्यातो मानवः	– विश्वदेवाः सूक्त	–	ऋ. १०.९२
4. तान्वः पार्थ्यः	– विश्वदेवाः सूक्त	–	ऋ. १०.९३
5. अर्बुदः काद्रवेयः	– ग्रावाणः सूक्त	–	ऋ. १०.९४
6. पुरूरवा ऐलः	– उर्वशी सूक्त	–	ऋ. १०.९५
7. बरुः सर्व हरिवैन्द्रः	– हरिस्तुति सूक्त	–	ऋ. १०.९६
8. भिषगाथर्वणः	– औषधि स्तुति सूक्त	–	ऋ. १०.९७
9. देवापिरार्ष्टिषेणः	– देवाः सूक्त	–	ऋ. १०.९८

शार्यातोमानव ऋषि महान, विश्वदेव सूक्त के कर्ता जान।
तान्वः पार्श्यः नाम है आया, विश्वदेव सूक्त उस रच पाया।
अर्बुदः काद्रवेयः जानो, ग्रावाण सूक्त उस का पहचानो।
पुरुरवा ऐलः ऋषि विख्यात, उर्वशी सूक्त का कर्ता तात।
वरुसर्वहरिवैन्द्र है जो भाई, हरि स्तुति है उसी रच पाई।
भिषगाथवर्णः ऋषिवर मीत, औषधि स्तुति लो उस की चीत।
देवापिरार्ष्टिषेणः नाम, देवाः सूक्त उस का अभिराम।
ऋषि वम्रोवैरवानस मीत, इन्द्रः सूक्त उस का लो चीत।

दो० – ऋषिवर और अनेक हैं, कुछ का करें बखान।
दुवस्यूर्वान्दन जान लो, ऋषिवर एक महान।। 7027

मधुर स्वर में गात सब, रचना उस की मीत।
विश्वदेवों की स्तुति में, रची जो उस सप्रीत।। 7028

---

10. वम्रोवैरवानसः	– इन्द्रः सूक्त	– ऋ. १०.९९
11. दुवस्युर्वान्दनः	– विश्वेदेवाः सूक्त	– ऋ. १०.१००
12. बुधः सौम्यः	– विश्वेदेवाः सूक्त	– ऋ. १०.१०१
13. मुदगलो भार्म्यश्वः	– इन्द्रः सूक्त	– ऋ. १०.१०२
14. अप्रतिरथ ऐन्द्रः	– इन्द्रः सूक्त	– ऋ. १०.१०३
15. अष्टको वैश्वामित्रः	– इन्द्रः सूक्त	– ऋ. १०.१०४
16. सुमित्रो दुर्मित्रः	– इन्द्रः सूक्त	– ऋ. १०.१०५
17. सुताशः काश्यपः	– अश्विनी सूक्त	– ऋ. १०.१०६
18. प्राजापात्या	– दक्षिणा सूक्त	– ऋ. १०.१०७
19. पणयोऽसुराः	– सरमा देवशुनी सूक्त	– ऋ. १०.१०८
20. ब्राह्मना	– विश्वेदेवाः सूक्त	– ऋ. १०.१०९
21. जमदग्नी	– आप्रियः सूक्त	– ऋ. १०.११०
22. अष्टादंष्ट्रो वैरूपः	– इन्द्रः सूक्त	– ऋ. १०.१११
23. शत प्रभेदनो वैरूपः	– इन्द्रः सूक्त	– ऋ. १०.११२
24. शत प्रभेदनो वैरूपः	– इन्द्रः सूक्त	– ऋ. १०.११३
25. तापसः	– विश्वे देवाः	– ऋ. १०.११४

बुधः सौम्य था ऋषि प्राचीन, विश्वेदेवाः की स्तुति उस कीन।
मुद्गलोभार्म्यश्व ने भाई, इन्द्रस्तुति उस ने कर पाई।
ऋषिवर था अप्रतिरथ ऐन्द्र, रचा सूक्त प्रशंसा इन्द्र।
अष्टको वैश्वामित्र जानो, इन्द्र सूक्त का कर्त्ता मानो।
सुमित्रो दुर्मित्र ऋषि कहाया, इन्द्र सूक्त उस ने रच पाया।
सुताशः काश्यप ऋषि विशेष, उस का अश्विनी सूक्त निशेष।
प्राजापात्या ऋषि का नाम, उस का दक्षिणा सूक्त अभिराम।
पणयोऽसुरा असुर था भाई, उस ने भी ऋगृचा रच पाई।
वेद में उस का भी है नाम, शुनी सूक्त उस का लो मान।

दो०– शुनी सूक्त उस ने रचा, अनार्य हो कर भाई।
अनार्य भी आर्य बनत, प्रभु की कृपा पाई।। 7029

वेद धर्म प्रभु को प्रिय, वैदिक ज्ञान विशेष।
जो अपनाये वेद को, कृपा पाये अशेष।। 7030

विश्व देवा सूक्त रचा, ऋषि ब्रह्म ने जान।
सुन्दर रचना एक है, सभी कहें विद्वान।। 7031

जमदग्नि की भी रचना जानो, सूक्त अप्रिया उस का मानो।
अष्टादष्ट्रो वैरूपः एक, रचे 'इन्द्र' के सूक्त अनेक।
तापस ऋषि की कहें अब बात, 'विश्वदेवा' का सूक्त विख्यात।
अनेक ऋषि इस विध हो पाये, सूक्त वेद के जिन रच पाये।
जम्बु द्वीप था स्वर्ग स्वरूप, इन्द्र शासक ईश्वर रूप।
कृपा राम की वहां पै ऐसी, विश्व में अन्यत्र न थी वैसी।

देवेन्द्र को सब शासक मानें, असुर उपद्रवी नहीं सन्मानें।
विस्तारें आसुरी थे वे जाल, करते जनता को बेहाल।

दो०–आसुरी जाल फैला कर, आ करते प्रहार।
देवेन्द्र तब क्रोध कर, करते असुर संहार।। 7032

वृत्रासुर न सह सका, असुरों का तब नाश।
धावा उस ने बोल दिया, होकर परम हताश।। 7033

9. देवासुर संग्राम

देवासुर संग्राम तब, छिड़ गया उस काल।
था भयंकर युद्ध इक, भया न किसी भी काल।। 7034

क्षीर सागर के तट पर, था विशाल मैदान।
वृत्रासुर निज सैन सहित, वहां डटा तब आन।। 7035

देवेन्द्र निज हस्ती पर, लाया अपनी सैन।
स्थित भया वह सामने, वृत्रासुर के ऐन।। 7036

भया देवासुर तब संग्राम, इन्द्र वा वृत्र का लो जान।
उस का वर्णन अब कर पायें, सतयुग की महाघटन सुनायें।
इन्द्र के साथी बहु लो मान, अग्नि वसु रुद्र आदि लो जान।
अश्विनी कुमार दो थे भाई, मरुदगण सारे भी सहाई।
आदित्य व ऋभुगण भी थे साथ, भयंकर शस्त्र जिनके हाथ।
साध्यगण अपनी सैना लेय, शस्त्रास्त्र सज्जित जो अजेय।
विश्वदेवा भी पहुंचे आय, इन्द्र के सभी बने सहाय।

इन्द्र की क्या छटा बखानें, सूर्य समान प्रज्वलित जानें।

दो०–इन्द्र था विराज रहा, उस सैना के बीच।
शस्त्रास्त्र से थी सजी, सैना पूर्ण समीच।। 7037

असुर सैना विशाल थी, वृत्रासुर के साथ।
महायोधा असंख्य थे, शस्त्रास्त्र उन के हाथ।। 7038

असुर सैना के बीच थे, योधा जो महान।
उन के भी हम नाम कहें, पाठक लेंवें जान।। 7039

[1]नमुचि महावीर था जानो, परम वीर शम्बर भी मानो।
द्विमूर्धा ऋषभ, अम्बर जान, इक से इक बढ़ योधा मान।
अन्वी व हयग्रीव ये दोय, इन से बड़ा को योधा होय।
शङ्कुशिप्रा योधा का नाम, शत्रुहनन ही उस का काम।
विप्रचिति व अयोमुख भाई, विजयी भये जब होय लड़ाई।
पुलोया धुरन्धर वीर महान, योधा कोई न उस समान।
प्रहेति, हेति योधा जानो, शत्रु हन्ता इन को मानो।
सुमाली, माली वीर ये दोय, सन्मुख इन के कोई न होय।

क) देव राज इन्द्र के प्रमुख सैनानायको के नामः–

1. रुद्र	2. वसु	3. आदित्य	4. दो अश्विनी कुमार
5. अग्नि	6. मरुदगण	7. ऋभुगण	8. साध्यगण
9. विश्वदेव			

ख) वृत्रासुर के प्रमुख सैना नायकों के नाम :–

1. नमुचि	2. शम्बर	3. अनवी	4. द्विमूर्धा
5. ऋषभ	6. अम्बर	7. हयग्रीव	8. शङ्कुशिप्रा
9. विप्रचिति	10. अयोमुख	11. वृषपर्वा	12. प्रहेति
13. उत्कल	14. सुमाली	15. माली	16. हेति

दो०-वृषपर्वा और उत्कल, परमवीर ये दोय।
असुर सैना के सैनिक, वीर न इन सम कोय।। 7040

इन्द्र ने जब नज़र दौड़ाई, विशाल आसुरी सैना पाई।
क्रोध उस के मुख पै छाया, हुकुम आक्रमण का दे पाया।
दोनों पक्ष भिड़ पाये ऐसे, विप्रीत दिशा से बादल जैसे।
शस्त्रों की चमकार थी ऐसे, विद्युत का प्रकाश हो जैसे।
सैनिकों का हुंकार भयंकर, गर्ज मेघ की जिमि प्रलयंकर।
सैनिक सैनिकों से भिड़ पाये, नायक नायकों से टकराये।
यही देवासुर था संग्राम, इतिहास में जिस का है बहु नाम।
प्रथम विश्व का यह संग्राम, क्षीर सागर के तट अभिराम।

दो०-सर्वजगत था निरख रहा, देवासुर संग्राम।
देख रहे थे युद्ध यह, योगेश्वर भी राम।। 7041

आर्य जाति का युद्ध यह, असुरों से था मीत।
राम प्रभु जिस पक्ष में, होती उस की जीत।। 7042

राम प्रभु उन साथ थे, तब भी मेरे मीत।
अनादि अनश्वर राम हैं, रामलाल लो चीत।। 7043

सृष्टि के वे आदि से, और तलक कल्पांत।
रहत प्रभु इस जगत में, लेश न इस में भ्रांत।। 7044

आर्य धर्म प्रभु को प्रिय, और वैदिक ज्ञान।
आर्यों पर जब भीड़ पड़ी, आये तभी भगवान।। 7045

कई दिवस तक चलत रहा, देवासुर संग्राम।
पक्ष दोनों बलवान थे, न लें हटने का नाम।। 7046

कई असुरों ने प्राण गंवाये, सैनिक भी थे बहु मर पाये।
व्याकुलता असुरों में छायी, देवों सन्मुख न चल पाई।
पीठ दिखा वे भागने लागे, अपनी जान बचाने लागे।
देव पीछा उन का कर पाये, बहुत से सैनिक मार मुकाये।
वृत्रासुर ने जब यह देखा, हतोत्साह निज सैन को पेखा।
क्रोध से लाल बबूल हो पाया, देवों ऊपर बरस दिखाया।
"कायरता पूर्वक यह है कार, भागतों पर जो करत प्रहार"।
फिर असुरों पर क्रोध जताया, कठोर वचन उन को कह पाया।

दो०–कठोर वचन वृत्रासुर के, न्याय संगत थे मीत।
उन का लेश प्रभाव भी, हुआ न उन के चीत।। 7047

वही शब्द मैं करूं बखान, शास्त्रोक्त जोय वचन महान।
"सुनो असुरो तुम मेरी बात, रण छोड़ कर जाओ न तात।
रण में पीठ दिखाये जोय, धर्म से च्युत होय जन सोय।
मेरी बात पै देवो ध्यान, अपना हित सब लो पहचान।
परम श्रेष्ठ मृत्यु है दोय, एक योगी की लिखी है जोय।
प्राणों को वश कर के जोय, ब्रह्मचिन्तन में चित्त को खोय।
देह त्यागे जब योगी कोय, ब्रह्म में लीन होय वह सोय।
दूसरी मृत्यु वीर की होय, प्राण त्यागे जब रण में सोय।
सीधा स्वर्ग को ही वह जाये, शत्रु को नहीं पीठ दिखाये।
असुरो रण में आ डट जाओ, मृत्यु से नहीं भय को खाओ।

वही वीर विजय को पाते, रण से लेश न जो घबराते।
जीतो इन्द्रासन को पाओ, रण में मर स्वर्ग को जाओ।
अवसर ऐसा न फिर मिल पाये, सौभाग्य से ऐसा अवसर आये"।
इस विध वृत्र बहुत समझाया, असर न उन पर कुछ हो पाया।

दो०–बहु समझाया वृत्र ने, मानी न किसी बात।
भाग गई सब सैन ही, जला वृत्र का गात।। 7048

आग बबूला हो गया, वृत्रासुर उस काल।
कांप रहा था क्रोध में, हो जिमि महाकाल।। 7049

इन्द्र को संबोध कर, कीनी उस ललकार।
"विरोचित क्या धर्म तव, पीठ पै करो प्रहार।। 7050

कायरता की सीम यह, देखी तुम में आज।
कायर करें प्रहार जो, कायरों पर सहसाज।। 7051

हे इन्द्र! यदि वीर हो, कर मुझ से दो हाथ।
शस्त्र ग्राहो आपना, युद्ध करो मम साथ।। 7052

भाई मेरे के तुम हत्यारे, आज चुकाऊं ऋण मैं सारे।
[1]तेरे प्राण वहीं अब जायें, मम भाई के जहां रह पायें"।
सुन वृत्र की यह कटु वाणी, वीरोचित कही इन्द्र वाणी।
"तव भाई तव राह को देखे, शीघ्र तुझ को वहीं अब पेखे।
करो मुझ पर अब तुम प्रहार, देखूँ मैं तव शस्त्र की धार"।

1. वृत्रासुर का भाई विश्वरूप था। इन्द्र ने उस का वध किया था।

वृत्र कहा "तुम ही कर पाओ, अपना बल प्रथम दिखलाओ"।
सुन इन्द्र तब गदा चलाई, वृत्र ने वही पकड़ दिखाई।
गदा भयंकर थी अति भारी, वृत्रासुर वह हस्त संभारी।
उसी गदा से कीन प्रहार, जिस हस्ती पर था इन्द्र स्वार।
उस के सर पै जा वह लागी, हस्ती की सुध बुध सब भागी।

दो०-चोट लगी जब गदा की, हस्ती भया अचेत।
इन्द्र नीचे गिर पड़ा, निस्सहाय रण खेत।। 7053

ग्रस्त विषादी हो गया, देवेन्द्र उस काल।
राम प्रभु को स्मर्ण किया, लीना प्रभु संभाल।। 7054

लीन वज्र हाथ उस, आ डटा रण खेत।
वृत्रासुर जब देखा, है इन्द्र भया सचेत।। 7055

वृत्रासुर त्रिशुल संभाला, जो भयंकर था एक भाला।
झपटा इन्द्र की तभी ओर, यम का रूप जिमि हो घोर।
इन्द्र ने तब प्रभु को ध्याया, अपनी हिम्मत न खो पाया।
निज वज्र का कीन प्रहार, भुजा वृत्र की काट उस डार।
कई टूक उस भुजा के होय, त्रिशूल साथ गिर पड़े थे सोय।
भुजा एक उस की रह पायी, पीड़ा से गर्ज घोर लगाई।
गर्जा आकाश उसी के साथ, था वृत्र का बस इक ही हाथ।
क्रोध से भर वह तिलमिलाया, इन्द्र ओर उस झपट दिखाया।

दो०- पास इन्द्र के जाय कर, घोर कीन प्रहार।
इन्द्र के तभी हाथ से, वज्र गिरा इक बार।। 7056

देव सैना ने जब यह देखा, देवेन्द्र को निहत्था पेखा।
श्वास रोक वे सभी निहारें, मुख से वचन न एक निकारें।
क्षण एक में क्या हो जाये, सब का मन धक धक कर पाये।
इन्द्र का वज्र गिरा था जोय, वृत्रासुर पास पड़ा था सोय।
इन्द्र लज्जित खड़ा था ऐसे, नाश सर्व हो किसी का जैसे।
बिना शस्त्र किमी लड़ दिखलाय, शत्रु खड़ा था ताक लगाय।
वृत्रासुर जभी इन्द्र देखा, हक्का बक्का खड़ा था पेखा।
वीरोचित उस वचन उच्चारे, निहत्थे शत्रु को क्यों मारे।
बोला वृत्र "देव हे राज, इसमें मानो न कुछ भी लाज।
निज वज्र को कर स्वीकार, करो शत्रु पर तुम प्रहार।

दो०-हे इन्द्र यह काल नहीं, विषाद का हे मीत।
शस्त्र अपना लेय कर, लो शत्रु को जीत"।। 7057

इन्द्र ने फिर वज्र उठाया, युद्ध वह शत्रु से कर पाया।
वृत्र पास था परिध महान, फौलाद से था भया निर्माण।
वाम हस्त से उसे उठाया, और इन्द्र पै उसे चलाया।
इन्द्र संभल गया तत्काल, था वज्र लीना उस संभाल।
वज्र से उस कीन प्रहार, वाम भुजा भी काटी डार।
बाहु बिना वृत्र हो पाया, उसने न पर साहस गंवाया।
दौड़ा इन्द्र की तभी ओर, मर कर गिरा पर उस ही ठोर।
धराशायी वहीं हो पाया, रुधिर से लथपथ उसकी काया।

दो०-वृत्रासुर संहार पर, सुखी भया जहान।
देवासुर संग्राम का, अन्त न इससे जान।। 7058

आगे चल कर देखना, हशर देवों का तब।
फूट वंश की करेगी, महानाश ही सब।। 7059

राज्य अकण्टक इन्द्र पाया, असुरों का था भया सफाया।
अकण्टक राज्य पर हो न पाय, जब घर का वैरी सन्मुख आय।
हिन्दू धर्म का यही इतिहास, यक्ष्मा रोग लगा है खास।
आगे आगे चल कर देखें, परिणाम इसी रोग का पेखें।
इन्द्र की थी विजय हो पायी, जम्बु द्वीप में कीर्ति छायी।
सब देशों में आर्य आवास, असुर भये थे परम हताश।
इलावृत और रम्यक वर्ष, सर्वत्र छाया वहां पै हर्ष।
हिरण्यक वर्ष की प्रजा सारी, खुशी मनावें मिल के भारी।
किम्पुरुष, कुरु, हरि का वर्ष, वहां पर सब के मन था हर्ष।
भद्राश्व वर्ष और केतुभाल, सके न जन वहां हर्ष संभाल।

दो०–देवेन्द्र का था शासन, द्वीप सकल पर जान।
असुर भये परास्त तब, आर्य जाति की शान।। 7060

10. सतयुग में आर्यवंश

(क) पृथुवंश

आर्यों ने कई नगर बसाये, जहां थे आर्य वंश बस पाये।
वे वंश मैं करुँ बखान, जिन में उपजे प्रसिद्ध पुमान।
पृथु वंश मैं प्रथम बखानूँ, पृथु को इक अवतारी जानूँ।
पृथु को सब अवतार ही मानें, उसे अवतार कोटि में जानें।
भारतवर्ष का वह महाराज, प्रजा खुशी थी उस के राज।
'पृथ्वी दोहन' वह कर पाया, भूमि को समतल करवाया।

वर्षा का जल व्यर्थ न जाय, ऐसे उस ने कीन उपाय।
क्षेत्र ब्रह्मवर्त सुहाया, अश्वमेघ यज्ञ वहां कर पाया।

दो०–शूरवीर वह नृप बहु, दृढ़ संकल्पी जान।
'आजगव' उस का धनुष, विश्वविजयी पहचान।। 7061

पोता था वह अङ्ग का, 'वेन' का पुत्र जान।
महारानी जो अर्चि थी, उसकी पत्नी मान।। 7062

इस कुल में राजे भये, शूरवीर बहु जान।
परंपरा इस वंश की, इस विध लें पहचान।। 7063

[1] पांच पुत्र पृथु के हुए, नाम करें बखान।
विजिताश्व था एक का, हर्यक्ष दूसर जान।। 7064

धूम्रकेश था तीसरा, चौथा वृक लो मान।
पंचम द्रविण नाम का, पांचों बहु बलवान।। 7065

[2] विजिताश्व योगिपुरुष था, जानो सिद्ध महान।
अन्तर्धान वह हो सकत, 'अन्तर्धान' अभिधान।। 7066

[3] विजिताश्व पुत्र चार थे, पावक और पवमान।
शुचि हम जानें तीसरा, चौथा हविर्धान।। 7067

---

1. महाराज पृथु के पांच पुत्र
   1. विजिताश्व 2. हर्यक्ष 3. धूम्रकेश 4. वृक 5. द्रविण
2. विजिताश्व में अन्तर्धान होने की सिद्धि थी, इसलिए वह 'अन्तर्धान' के नाम से भी विख्यात था।
3. विजिताश्व के चार पुत्र : 1. पावक 2. पवमान 3. शुचि 4. हविर्धान

[1] हविर्धान के पुत्र छः लो जान, उन के नाम इस विध पहचान।
बर्हिषद और गय दो भाई, शुक्ल कृष्ण दो और कहाई।
सत्य नाम का पंचम मीत, छटा लो जितव्रत ही चीत।
बर्हिषद था योगी महान, कर्मकाण्ड प्रवीन भी मान।
अनेक यज्ञ था वह कर पाया, 'प्राचीनवर्हि' इस विध कहाया।
बर्हिषद की नार विख्यात, नाम उस का शतद्रुति था तात।
दस पुत्र उस ने थे जाये, 'प्रचेता' नाम से जो कहाये।

(ख) ऋषभदेव का वंश

और वंश का करें बखान, ऋषभदेव का वंश महान।
ऋषभदेव सम्राट महान, राजर्षि भी हम लें पहचान।
उसे अवतार भी कहते लोग, उस का सिद्ध भया था योग।
दीर्घ काल उस कीना राज, विरक्त भया फिर वह महाराज।
निज पुत्र को उस दीना राज, त्याग दिया सब जग का काज।

दो०–मेरुदेवी का पूत वह, नाभि उस का तात।
राजपाट को त्याग कर, भया दिगंबर तात।। 7068

भरत उस का पूत निज, जिस को दीना राज।
दीर्घ काल तक भरत ने, भी था कीना राज।। 7069

---

1. हविर्धान के छः पुत्र
   1. बर्हिषद 2. गय 3. शुक्ल 4. कृष्ण
   5. सत्य 6. जितव्रत

वृद्धावस्था में भरत ने, था लीना सन्यास।
पुलहाश्रम में जाय कर, कीना योग अभ्यास।। 7070

दीन पुत्र को राज उस, मर्यादा अनुसार।
सुमति नाम था पूत का, उस का शुद्ध आचार।। 7071

[1]बहु राजे इस वंश में, भये क्रमानुसार।
राज किया था सबन ने, मर्यादा अनुसार।। 7072

नाम सभी के लो अब जान, ऋषभदेव का वंश महान।
ऋषभदेव का भरत था पूत, भरत का था तो सुमति सुपूत।
सुमति से देवजित था जाया, उस का पुत्र देवद्युम्न कहाया।
परमेष्ठी देवद्युमन का सुत, उस का भया था प्रतीह सुपूत।
गर्भ सुवर्चला से वह जाया, प्रतीह ज्ञानी सिद्ध कहाया।
प्रतीह के तीन पूत लो जान, प्रस्तोता व उद्गाता मान।
तीजा प्रतिहर्ता है भाई, सब के नाम इस विध कहाई।
तीनों हुए ये सिद्ध महान, यज्ञादि के भी ज्ञानी जान।
पुत्र दो प्रतिहर्ता के जाये, अज और भूमा दो कहाय।

---

1. ऋषभदेव का वंश:

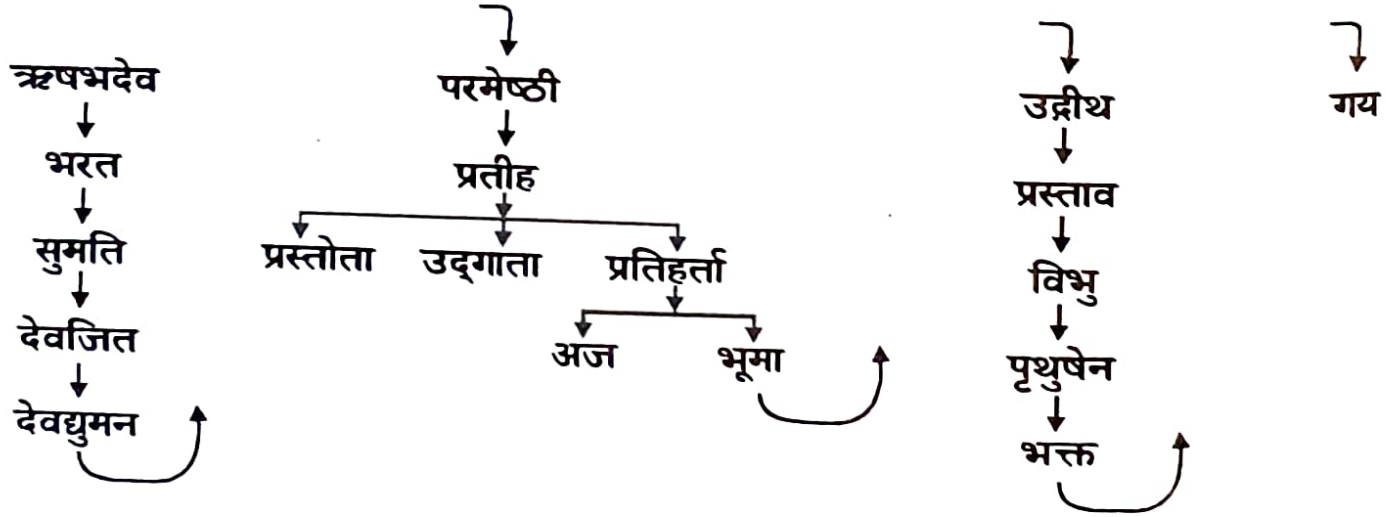

उद्गीथ पूत भूमा का जान, शासक कुशल उसे पहचान।
उद्गीथ का पुत्र था प्रस्ताव, प्रस्ताव का विभु महाभाव।
पृथुषेन भया विभु का पूत, पृथुषेन का था भक्त सुपूत।

दो०-भक्त से जन्मा 'गय' तब, वंश का सूरज जान।
द्रुति माता के गर्भ से, राजर्षि एक महान।। 7073

गय के गुण हम क्या कहें, योगाभ्यासी जान।
प्रजा का पालन वह करत, राखे सदैव ध्यान।। 7074

(ग) [1]राजर्षि गय का वंश

इतिहास में है जो कही, गय संबंधी बात।
वही यहां हम कथ रहे, सुनो ध्यान से तात।। 7075

"गय की तुलना है दुश्वार, राजा इस सम नहीं संसार।
कला भगवान की है वह एक, प्रसन्न उस से जन प्रत्येक।
विधिवत करता है बहु याग, मनस्वी रक्षक वह महा भाग।
साधु सेवक उस सम नाहीं, बहुज्ञ उस सम न जग माहीं।
सत्पुरुषों का वह है प्यारा, प्रजा का वह है नयनन तारा।

---

1. राजर्षि गय का वंश

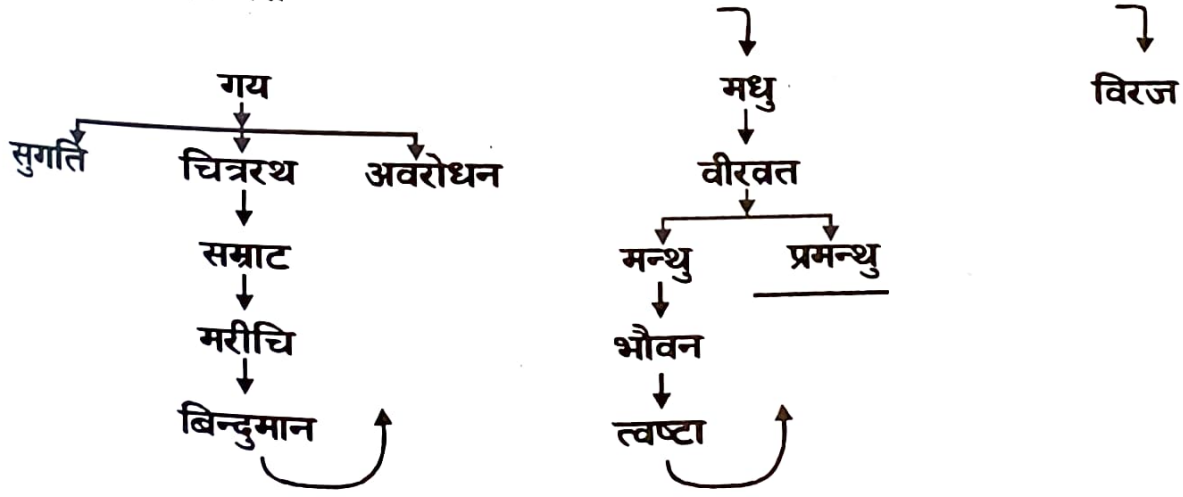

धर्म का रक्षक है वह एक, शंसत उस को देख प्रत्येक।
गय सम नहीं है भया नरेश, जग में रहेगा याद हमेश।
गय के सभी गुणों का गान, कौन सकत है कर गुण गान"।

दो०-गय से अगला वंश जो, ऋषभ देव का मीत।
उस का वर्णन अब करें, सुनो एकाग्र चीत।। 7076

रक्षक थे उस वंश के, रामलाल भगवान।
जिस में उपजा गय सम, राजर्षि एक महान।। 7077

राजर्षि गय के तीन सुपूत, सुगति उन में एक था पूत।
चित्ररथ और अवरोधन दोय, तीनों प्रसिद्ध शासक थे होय।
चित्ररथ का पूत 'सम्राट', सार्थक कीन उस नाम 'सम्राट'।
सम्राट से सुत मरीचि जाया, जिसने राज्य था निज बढ़ाया।
मरीचि का पुत्र बिन्दुमान, उससे आगे मधु लो जान।
मधु से वीरवत हो पाय, वीरवत के दो पूत थे जाय।
इक का नाम था मन्थु भाई, प्रमन्थु दूजा पूत कहाई।
मन्थु का पुत्र भौवन भाई, भौवन का त्वष्टा था कहाई।

दो०-त्वष्टा का पुत्र जो भया, वह था जग विख्यात।
उस की उपमा न मिलत, नाम था विरज तात।। 7078

अन्तिम राजा विरज था, इस वंश का मीत।
सुशोभित कीना वंश को, विरज ने हो प्रतीत।। 7079

(घ) वैवस्तव श्राद्धदेव मनु का वंश

प्रसिद्ध वंश इक और है, सतयुग में लो जान।
'मनुवंश' के नाम से, जग में उस का मान।। 7080

अतीव दीर्घकाल तक, चलत रहा यह वंश।
त्रेता में भी यही था, नाम था राघव वंश।। 7081

श्राद्धदेव था मनु का नाम, प्रपितामह का मरीचि नाम।
पितामह थे कश्यप महान, विवस्वान (सूर्य) पिता मनु का जान।
[1]मनु की पत्नी श्रद्धा जान, श्रद्धा के दश पुत्र महान।
'इक्ष्वाकु''नृग''कवि' संग 'दिष्ट', 'करूष' 'शर्याति' और 'धृष्ट'।
'नरिष्यन्त' अष्टम का था नाम, 'पृषध्र' 'नभग' दो और सुकाम।
दशों पुत्र ये सभी महान, सुन कर इन के गुण लो जान।

(ङ) शर्याति का वंश

सतयुग के जो पुरुष महान, उन में शर्याति को भी जान।
वेदों का वह खास विद्वान, और बहुत था निष्ठावान।
सुकन्या उस की कन्या जानो, ऋषि च्यवन की पत्नी मानो।
[2]शर्याति के थे पुत्र तीन, जिन से चला था वंश नवीन।

---

1. श्राद्धदेव मनु और उस की धर्मपत्नी श्रद्धा के दश पुत्रः–
   1. इक्ष्वाकु
   2. नृग
   3. शर्याति
   4. दिष्ट
   5. धृष्ट
   6. करूष
   7. नरिष्यन्त
   8. पृषध्र
   9. नभग
   10. कवि

2. राजा शर्याति के तीन पुत्र

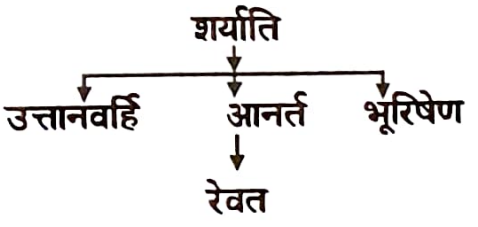

उत्तानवर्हि था एक का नाम, भूरिषेण दूसरे का नाम।
तीजा आनर्त था भाई, सभी ने कीनि धर्म कमाई।
आनर्त का पुत्र रेवत जानो, राजा योग्य उसे पहचानो।
नगरी कुश स्थली इक भाई, समुद्र बीच थी उस बसाई।
उसी नगरी में रह कर सोय, देश विशाल पर राज्य था गोय।

दो० – शर्यात्ति का वंश यह, सतयुग में प्रसिद्ध।
इसी वंश में थे भये, महापुरुष बहु सिद्ध।। 7082

(च) मनु पुत्र पृषध्र

मनु के पुत्र पृषध्र का, करते अब बखान।
ब्रह्मचर्य उस धार कर, रहा अनासक्त लो जान।। 7083

संग्रह परिग्रह न करत, ज्ञान आत्म में तुष्ट।
चित्त स्थिर उस का सदा, समाधि में संतुष्ट।। 7084

(छ) मनु पुत्र कवि

मनु पुत्र कवि का सुनो, परम विरक्त वह जान।
अल्पायु में त्याग घर, कीना वन प्रस्थान।। 7085

कई बन्धु उस साथ में, चला जभी वन ओर।
रहने लगा समाधि में, सदैव वह उस ठौर।। 7086

किशोरावस्था में उस, चिरसमाधी लीन।
परमपद को पा लिया, ईश्वर में हो लीन।। 7087

(ज) मनु पुत्र करूष

मनु पुत्र यह महा बलवान, राजधर्म में परम सुजान।
करूष का पुत्र भया कारूष, धर्म प्रेमी शुद्ध स्वरूप।
अपने राज का कीन विस्तार, उत्तरापथ पर किया अधिकार।
कारूष भये जगत विख्यात, धर्म की मूर्ति थे साक्षात।

(झ) मनु पुत्र धृष्ट

मनु का पुत्र धृष्ट भी जानो, धर्म कर्म विलीन ही मानो।
पुत्र धृष्ट के उसी समान, वेदों के वे सब विद्वान।
धाष्ट्र भया उन का अभिधान, अपने पिता के सभी समान।
ब्राह्मण धर्म उन ने अपनाया, क्षात्र धर्म को त्याग दिखाया।

(ञ) [1]मनु पुत्र नृग का वंश

नृग ने था निज वंश चलाया, उस का पूत सुमति हो पाया।
सुमति ने भूत ज्योति था जाया, ज्योति का वसु पुत्र हो पाया।

---

1. मनु पुत्र नृग का वंश

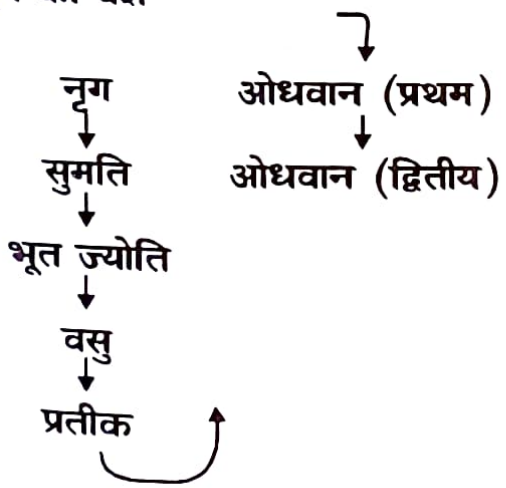

दो०–वसु का पूत प्रतीक था, प्रतीक का ओधवान।
पुत्र जो ओधवान का, वह भी ओध ही वान।। 7088

(ट) मनु पुत्र नरिष्यन्त का वंश

सातवां पुत्र जो नरिष्यन्त, भाइयों वत ही वह था सन्त।
[1]उस ने भी था वंश चलाया, दश पीड़ी तक जो हो पाया।
नरिष्यन्त का एक था पूत, चित्रसेन जो महान सुपूत।
राजधर्म में वह प्रवीन, जीते देश उस कई नवीन।
उस का पुत्र ऋक्ष कहलाया, पिता समान ही वह हो पाया।
शासक दृढ़ और परम मनस्वी, ऋक्ष राज सम्राट तपस्वी।
ऋक्ष का पुत्र मीढ़ था वान, भया वेदों का वह विद्वान।
ऋषियों का था वह सन्मानी, नृप वह योगी परम ज्ञानी।
मीढ़वान से कूर्च उपजाया, यशस्वी नृप वह भी हो पाया।
राज उस बहु काल था कीना, जग में उसने यश भी लीना।
इन्द्रसेन था उस का नाम, पुत्र कूर्च का जो अभिराम।
इन्द्र समान वह वीर महान, मनु का पोता लो पहचान।

---

1. मनु पुत्र नरिष्यन्त का वंश

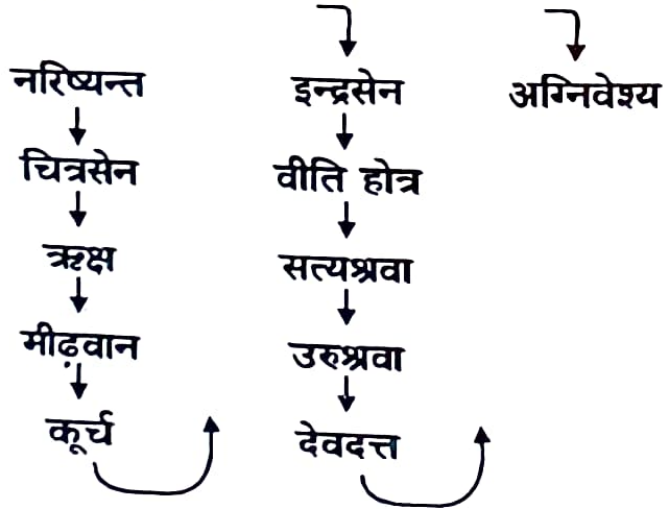

दो०–आर्य जाति के वीर सब, ऋषियों की संतान।
शक्तिशाली नरेश वे, असुर संहारी जान।। 7089

इन्द्रसेन का पूत जो, वीति होत्र था नाम।
पिता समान ही वीर वह, सुन्दर परम ललाम।। 7090

वीति होत्र का पुत्र जो, सत्यश्रवा अभिधान।
कुल का भूषण था इक, वंश की शोभा मान।। 7091

सत्यश्रवा से था उपजाया, उरुश्रवा जिस नाम धराया।
असुर उपद्रव जो कर पाते, उरुश्रवा से मारे जाते।
असुर सदैव ताक में रहते, आर्यों का उत्कर्ष न सहते।
आर्य–असुरों की यह लड़ाई, सदियों से थी चलती आई।
आर्यों का तो लक्ष्य था एक, असुर जगत में रहे न एक।
[1]विश्व को हम आर्य बनायें, वैदिक धर्म सर्वत्र फैलायें।
उन का लक्ष्य तो था महान, वैदिक धर्म का हो अधिमान।
भाई–भाईयों की पर फूट, से गया स्वप्न था सारा टूट।
आगे आगे देखना तात, होगा जग को यह साक्षात।
दैत्य देव इक पिता के पूत, लड़े परस्पर मिले सबूत।
परास्त असुरों से हो पाये, जम्बु द्वीप से निकल के धाये।
भारत में आ कीना वास, परस्पर था न पर विश्वास।
कौरव पांडव भाई भाई, भयंकर उन की भई लड़ाई।
आर्य जाति का भया विनाश, जग को विदित है यह इतिहास।
कलियुग में जब होश थी आई, पृथ्वी राज जय चन्द्र थे भाई।

---

1. ऋ०–कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

परस्पर द्वेष उन का ऐसा, जो उन कीन कभी हुआ न ऐसा।
विदेश से इस्लाम बुलाया, आर्य धर्म इस्लाम हो पाया।
वैदिक धर्म का भया सफाया, पतन आर्यों का मैं कथ पाया।
छाती पर अब रख कर हाथ, आगे पढ़ो आह भर इस साथ।

दो०-आये सभी यह वर्णन, क्रम से मेरे तात।
चित्त न मेरा रुक सका, पूर्व ही लिख दी बात।। 7092

उरुश्रवा का पुत्र भी, हुआ था उसी समान।
वीर पुरुष था वह इक, देवदत्त अभिधान।। 7093

देवदत्त था वीर महान, पूर्वजों के ही वह समान।
कई वर्ष उस कीना राज, प्रजा सुखारी उसके राज।
असुर थे उस ने कई संहारे, आर्यों के जो दुश्मन भारे।

(ठ) [1] मनु पुत्र नभग का वंश

नभग भी था प्रसिद्ध महाराज, बहुत काल उस कीन राज।
उसका पुत्र भया नाभाग, उज्ज्वल उस का भी बहु भाग।
उस का पुत्र भया अम्बरीष, भजता था वह सदा जगदीश।
भाग्यवान था परम नरेश, यज्ञ रचने में रहत हमेश।
अश्वमेघ उस कीन अनेक, जो थे बढ़कर एक से एक।
आचार्य उसने बहु सन्माने, वासिष्ठादि जो जग पहचाने।

---

1. नभग का वंश

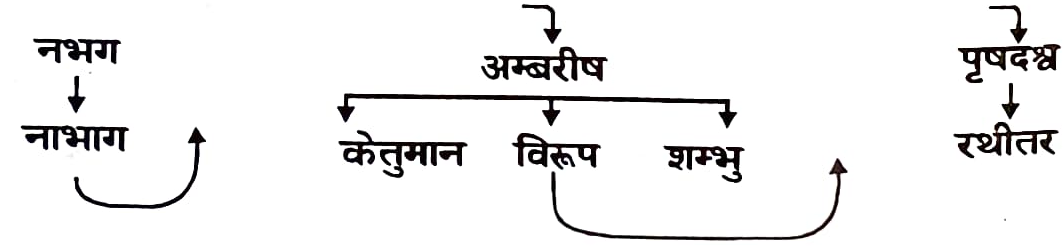

ऋषि असित और गौतम भाई, पुरोहित बने यज्ञ में आई।

(ड) मनु पुत्र दिष्ट

मनु का पुत्र और था दिष्ट, उस का तो था राम ही इष्ट।
उस ने न निज वंश चलाया, आयु भर उस योग कमाया।

(ढ) मनु पुत्र इक्ष्वाकु

[1]इक्ष्वाकु ने जो कुल चलाया, सूर्य वंश था वह बन पाया।
मनु का पिता था विवस्वान, 'सूर्य' भी उसका था अभिधान।
मनु के पिता से चला जो वंश, प्रसिद्ध भया वह "सूर्य वंश"।
इस वंश की दीर्घ कहानी, सर्व जगत ने है वह जानी।
रामचन्द्र इस वंश में जाये, बाल्मीकि रामायण रच पाये।

11. सतयुग का अंत – देव दैत्य संग्राम

अब सुनिये कुछ और कहानी, जिमि भई इस वंश की हानि।
भाई सके न राज्य संभाल, लड़ परस्पर किया वंश बेहाल।

दो० – [2]सूर्य वंश का वर्णन, आगे होगा मीत।
ज़रा सुनो धर धैर्य तुम, पत्थर धर निज चीत।। 7094

---

1. इक्ष्वाकु के पितामह महाराज सूर्य ने जिस वंश को आरंभ किया वह वंश हज़ारों वर्षों तक राज करता रहा। उस में रघु जैसे सम्राट हुए जिस के कारण इस वंश को रघुकुल भी कहते हैं। इसी वंश में भगीरथ हुए जिन्होंने हिमालय से गंगा लाई और इसी वंश में रामचन्द्र हुए। जिन्होंने राक्षस सम्राट रावण से महान ऐतिहासिक युद्ध किया।

2. सूर्य वंश की परंपरा
महाराज मरीचि से आगे :– मरीचि
↓
कश्यप
↓

आगे देखें . . .

कश्यप ऋषि का वंश यह, दिति अदिति थीं नार।
दिति की संतति 'दैत्य' थी, अदिति की 'देव' दुलार।। 7095

आर्य वंश दो भाग में, था बंटा इस रीत।
दोनों में न लेश भी, थी परस्पर प्रीत।। 7096

इन्द्रासन अधिकार हित, सदा रही लड़ाई।
देव–दैत्य संग्राम है, ऐतिहासिक लड़ाई।। 7097

[1]शासक देव इन्द्र कहलाया, दैत्यों का था बली बन पाया।
आर्यवंश की कलह यह भाई, सर्वनाश का आरंभ बन पाई।
करें वर्णन उस युद्ध का मीत, पढ़ो ध्यान से ला निज चीत।
शिक्षा इस से यह ले पायें, भाइयों से न वैर कमायें।
दैत्यों का बढ़ पाया द्वेष, देवों प्रति तो वैर हमेश।
दैत्यों की चढ़ सैना आई, देव सैना से करन लड़ाई।

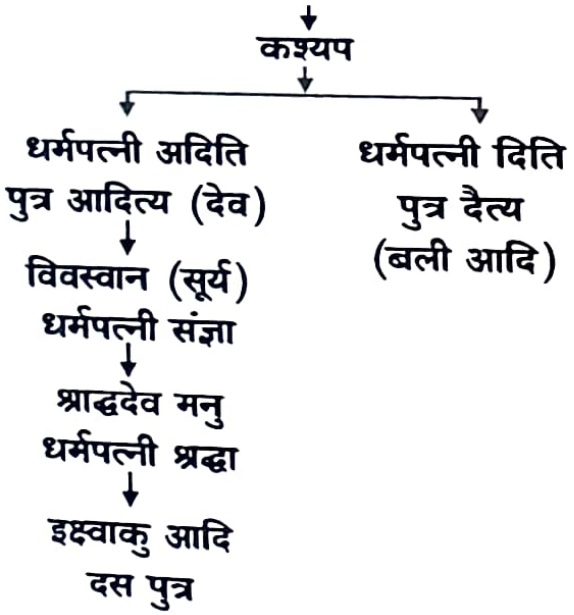

1. शुद्धि : मेरे लिखे हुए 'हिन्दू धर्म का इतिहास' पुस्तक में पृष्ठ 28 पर बली को असुर बतलाया है। यह भूल हुई है। बली असुर नहीं था। वह कश्यप ऋषि की सन्तान आर्य जाति से था। भूल के लिए क्षमायाचक :– –चमन लाल कपूर

क्षीर सागर के तट पर आईं, सुन्मुख सैना दो खड़ पाईं।
बलि ने असुरों से कीन मिताई, भाइयों पर थी कीन चढ़ाई।
शत्रु से जो करत मिताई, और भाई से शत्रुताई।
अपने नाश को स्वयं बुलाये, और वंश का क्षय करवाये।
आर्य इतिहास को देखो खोल, पायें सदा उस में यह पोल।
द्वापर युग में चलकर देखो, कौरव वंश में भी यह पेखो।
कलियुग में जो जय था चन्द, वह भी था ऐसा बुद्धि मन्द।
मलेच्छों से थी कीन मिताई, भारत में गुलामी लाई।

दो०-दैत्यों ने भी असुरों को, लीना अपने साथ।
इन्द्रासन हत्थयान हित, सुन लो अब वह गाथ।। 7098

दोनों सैना सन्मुख आईं, इक दूजे से भिड़ वे पाईं।
युद्ध भयंकर आरंभ हो पाया, कटे सिरों से क्षेत्र भर पाया।
बलि और इन्द्र लड़ने लागे, द्वन्द्व युद्ध में वे थे पागे।
बलि ने थे दस बाण चलाये, इन्द्र ने सभी काट दिखाये।
जभी इन्द्र ने वज्र चलाया, धाराशायी बलि हो पाया।
असुर सहायक बलि का जोय, आया लड़न इन्द्र से सोय।
जम्भासुर उसका अभिधान, महाकाय और था बलवान।
आते ही उस गदा चलाई, इन्द्र के हस्ती को लग पाई।
हस्ती पीड़ा से गिर पाया, इन्द्र संग था नीचे आया।

दो०-इन्द्र का जोय सारथी, मातली उस का नाम।
शीघ्र वह लाया रथ इक, बना इन्द्र का काम।। 7099

अतीव क्रोध में इन्द्र आया, उसने अपना वज्र चलाया।
जम्भासुर का काटा भाल, गिरा भूमि पर वह तत्काल।
असुर जगत में खबर यह छायी, मृत्यु जम्भासुर की हो पाई।
असुर वीर भये क्रोध से लाल, सके न अपना जोश संभाल।
हुमड़ हुमड़ वे आने लागे, वार इन्द्र पै करने लागे।
उन असुरों के भी नाम लो जान, नमुचि, बल और पाक पहचान।
देवेन्द्र को ही लक्ष्य बनाय, वर्षा बाणों की कर पाय।
घिरा वाणों से इन्द्र ऐसे, मुसलाधार वर्षा हो जैसे।
इन्द्र ने निज धैर्य न खोया, मन में प्रभु को उस संजोया।
आठ बाण तत्काल चलाये, बल, पाक के सर काट दिखाये।
नमुचि पर तब शोक था छाया, उस इन्द्र पर त्रिशूल चलाया।
त्रिशूल को दीना इन्द्र काट, भाल नमुचि का भी काट।

दो०–विजय थी इन्द्र की भयी, नहीं विजय, यह हार।
भाई जब शत्रु से मिला, होंगे आर्य खवार।। 7100

श्री गणेश यह पतन का, आर्य जाति का मीत।
आगे चल कर देखना, होगी तब प्रतीत।। 7101

भाइयों के ही वैर ने, आर्य कीन बरबाद।
असुरों का बल बढ़ गया, सर्वत्र भये आबाद।। 7102

कलह परस्पर करत रहे, दैत्य देव जो भ्रात।
इन्द्रासन अधिकार हित, बहु काल तक तात।। 7103

असुरों ने था लाभ उठाया, सदा परस्पर उन्हें लड़ाया।
आर्य जाति भयी शक्तिहीन, शत्रु के भये सभी अधीन।

जम्बु द्वीप का जो साम्राज्य, सहस्रों वर्ष किया जहां राज्य।
छिन्न गया था उन से ऐसे, छिन्न भिन्न हो बादल जैसे।
इन्द्रासन भी भया पराया, 'इन्द्र' नाम जग से मिट पाया।
आर्य शरण को खोजन लागे, दक्षिण में था हिमालय आगे।
उस को कर के वे तब पार, बसे आ भारत में इस बार।
'इलावृत' स्मरण कर पाते, सब लोग "स्वर्ग" कह पाते।

दो०-इन्द्र पदवी नहीं रही, न इन्द्रासन मीत।
असुर ही शासक हो गये, समस्त द्वीप को जीत।। 7104

'हिन्दू' जिसे स्वर्ग कहें, चला गया आकाश।
वास्तविक जो 'स्वर्ग' था, उस का भया विनाश।। 7105

स्वर्ग के महाराज का, था इन्द्र अभिधान।
उस का भी तब मिट गया, नाम और निशान।। 7106

प्रभु लिखाया आप ही, सतयुग का इतिहास।
इस लिपिक को जानिये, प्रभु का केवल दास।। 7107

प्रभु लिखाया आप है, सतयुग का इतिहास।
हिन्दू उस को भूल गये, कैसा यह उपहास।। 7108

कहें स्वर्ग आकाश में, इन्द्र वहां रह पाय।
वर्षा वहां से करत है, भ्रम में जग रह पाय।। 7109

भूल गये हैं सबन ही, अपने पूर्वज तात।
स्मरण कराने हेत ही, यह लिखी है बात।। 7110

प्रभो आप की दया महान, सतयुग का जो कीन बखान।
शिक्षा हिन्दुओं को दे पाये, भाई से द्रोह न को कर पाय।
हिन्दू निज को हिन्दू मानें, वैरी को न अपना जानें।
सदैव शत्रु को शत्रु जानें, कभी न उस को मित्र मानें।
सांप सुहाना चाहे लग पाय, बाज न काटने से वह आय।
हिन्दू निज स्वरूप पहचानें, शत्रु को न हितैषी मानें।
भाई भाई ही होते भाई, शत्रु कभी न भाई बन पाई।
लाखों वर्षों का इतिहास, शिक्षा दे रहा है यह खास।

दो०–इस शिक्षा को भूलना, खतरनाक है तात।
यह शिक्षा विसार कर, फल मिलत साक्षात।। 7111

सतयुग का अब अंत था आया, आर्य राज्य का भया सफाया।
इक्ष्वाकु मनु का पुत्र जान, उस ने कीना तब अनुमान।
अपना देश त्याग के जायें, दक्षिण को प्रस्थान कर पायें।
हिमालय से हम दक्षिण ओर, ढूंढें कहीं अब अपना ठौर।
इक्ष्वाकु निज वंश संग लीना, पार हिमालय को उस कीना।
यात्रा लांबी कठिन चढ़ाई, ऊपर चढ़ें फिर थी उतराई।
धीरे धीरे वे चल पाते, मार्ग में थे कष्ट बहु आते।
धैर्य से सब सहन कर पाते, उन से न थे वे घबराते।

दो०–बीत गये बहु वर्ष थे, इस यात्रा में मीत।
आये नूतन देश जब, करन लगे प्रतीत।। 7112

कहां हमारा वास हो, रुक कहां हम पायें।
वनाछादित देश यह, हिंसक पशु रह पायें।। 7113

यात्रा के पश्चात जब, पहुंचे भारत भूम।
बहुत निराशा थी भयी, देखी भूमि धूम।। 7114

घूम फिर सब देखते, ऐसा मिले स्थान।
जहां पर सब सुपास ही, सरोवर हो महान।। 7115

बहु समय पश्चात सब, आये ऐसे स्थान।
सरस्वती थी बह रही, लीना उन तब जान।। 7116

सुन्दर नदी है बह रही, सुन्दर वन्य प्रदेश।
इलावृत सम स्वर्ग हम, यहीं बनावें देश।। 7117

सरस्वती के तट टिकी, आ कर आर्य समाज।
[1]सतयुग का था अन्त भया, पर्व संपूर्ण आज।। 7118

प्रभो कृपा है तव भयी, इस लिपिक पर नाथ।
आप लिखायी गाथ यह, लेखनी दे मम हाथ।। 7119

आज्ञा हो तो लिपि करूँ, त्रेता युग की गाथ।
आप लिखावें जिस विध, वही लिखूँ हे नाथ।। 7120

* *इति सतयुग पर्व संपूर्ण* *

1. सोमवासर, 22 भाद्रपद संवत विक्रमी 2061; तदनुसार 5 सितंबर 2004 ई० सन होश्यारपुर।।

ॐ

श्री योग महादिव्य रामायण

(हिन्दू धर्म का इतिहास)

(सतयुग - त्रेता - द्वापर - कलियुग)

अध्याय द्वितीय - "त्रेता युग" में हिन्दू धर्म

दो० - इतिहास हिन्दू धर्म का, त्रेता युग का मीत।
जग को पूर्ण ज्ञान नहीं, इस से हो प्रतीत।। 7121

सतयुग का इतिहास लिखवाय, आदेश प्रभु तभी कर पाय।
पूर्ण ज्ञान तभी हो जाये, त्रेता भी जब लिखित में आये।
आज्ञा प्रभु के ही अनुसार, लिपित करे अब लिपि यह कार।
आर्यों का भारत में आना, त्रेता युग में काल बिताना।

1. मनु पुत्र इक्ष्वाकु का वंश

भारत में इक्ष्वाकु आया, मनु पुत्र जो ज्येष्ठ कहलाया।
अपने संग वंश वह लाया, और भारत में था बस पाया।
सौ पुत्र इक्ष्वाकु के जान, वीर धुरंधर सभी पहचान।
इक्ष्वाकु राजनीतिज्ञ महान, उसने मन में कीन अनुमान।

[1]भारत वर्ष में तब बस पाये, निज सर्वत्र वंश फैलाये।
चारों दिक् उस सुत भिजाये, जो वहां पर जा बस पाये।

दो०–तीन बड़े जो पूत थे, विकुक्षि इक का नाम।
[2]निमि नाम से दूसरा, तीजा दण्डक नाम।। 7122

निमि, विकुक्षि और दण्डक तीन, मध्य भारत था इन को दीन।
पच्चीस पुत्रों को पूर्व छोर, अन्य पच्चीस को पश्चिम ओर।
सैंतालीस पुत्र जो बच पाये, दक्षिण ओर थे वे भिजाये।
सभी ने अपने वंश चलाये, और सुदृढ़ उन राज्य बनाये।
आर्यों की थी समस्या महान, राक्षसों ने था कीन परेशान।
जहां भी आर्य थे बस पाते, राक्षस उपद्रव आन मचाते।
त्रेता युग की यही पहचान, राक्षसों से संघर्ष लो जान।
आर्य भारत में जभी आये, राक्षसों को वे नहीं सुहाये।

दो०–त्रेता युग के अंत तक, यही चला संघर्ष।
राक्षसों से छीन लिया, आर्यों ने भारतवर्ष।। 7123

थी आर्यों की विजय महान, उपलब्धि त्रेता युग की जान।
वीरता आर्यों ने दिखलायी, राक्षसों की न थी चल पायी।
उस इतिहास का करें उल्लेख, मिले हिन्दुओं को शिक्षा देख।

---

1. मनु पुत्र इक्ष्वाकु का वंश :–
इक्ष्वाकु के सौ पुत्र थे। ज्येष्ठ तीन पुत्रों के नाम थे:–
1. विकुक्षि 2. निमि 3. दण्डक
इक्ष्वाकु के तीनों ज्येष्ठ पुत्रों को भारत के मध्यभाग में स्थापित किया।
25 पुत्रों को पूर्व भाग में; 25 को पश्चिम में और शेष सैंतालीस (47) को दक्षिण भाग में।
2. इसी दण्डक के नाम से 'दण्डकारण्य' प्रदेश हुआ।

इक्ष्वाकु मनु का वंश चलाया, लाखों वर्ष था जो चल पाया।
कीना देश का उन निर्माण, जग में भारत भया महान।
अब उसी वंश का होय बखान, इतिहास का जिससे मिले ज्ञान।

2. मनु वंश में इक्ष्वाकु पुत्र महाराज विकुक्षि का वंश

महाराज विकुक्षि पिता समान, नीति कुशल और वीर महान।
ईश्वर भी उसको जान, अनेकों यज्ञ उस किये महान।
'शशाद' नाम से भया विख्यात, माने प्रजा सब उसकी बात।
[1]विकुक्षि के वंश का करें बखान, उस का पुत्र पुरञ्जय जान।

दो०–पुरञ्जय ने बहु जीत कर, नगर राक्षसी मीत।
सार्थक कीना नाम निज, आर्यों की यह रीत।। 7124

नाम पुरञ्जय के कई आये, 'इन्द्रवाह' कोई कह पाये।
'ककुत्स्थ' भी कोई कह पाता, अन्य नाम से कोई बुलाता।
वीर पुरुष जो होवे भाई, उस की मानें सब प्रभुताई।

---

1. मनु वंशज इक्ष्वाकु पुत्र महाराज विकुक्षि का वंश :–

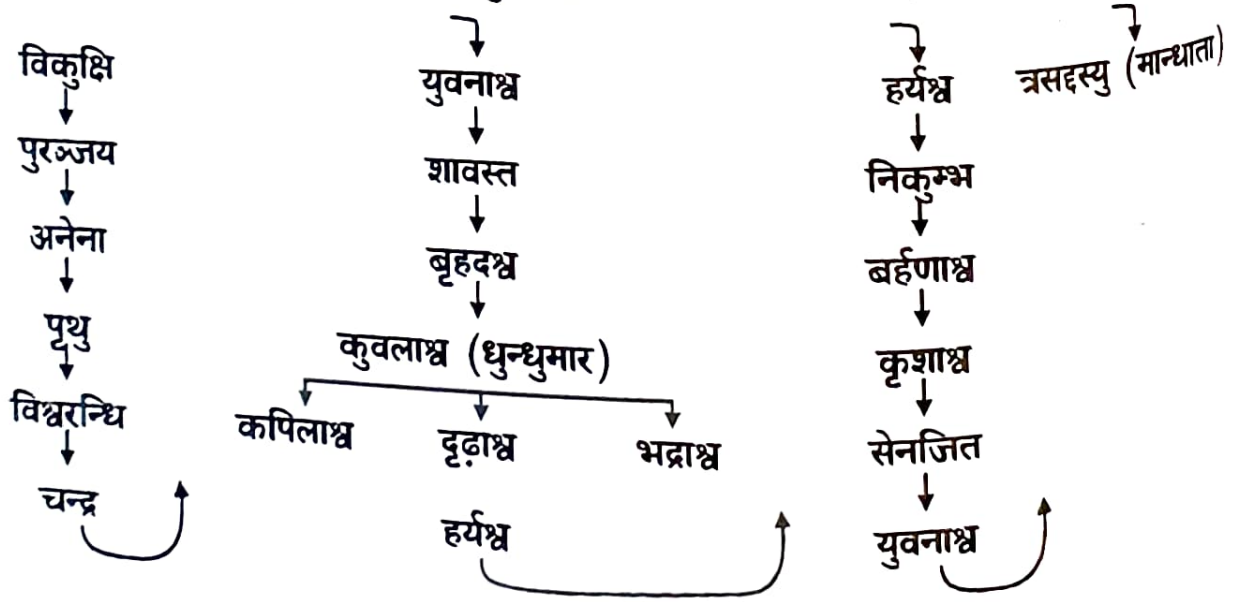

मनु वंश की धाक थी छायी, आर्यों की थी फिरी दोहायी।
पुरञ्जय का पुत्र भया अनेना, सुदृढ़ कीनी उस आर्य सेना।
पृथु अनेना का पुत्र जाया, प्रसिद्ध जगत में वह हो पाया।
विश्वरन्धि था पृथु का पूत, मनु वंश का महान सपूत।
जग में उस ने नाम कमाया, राक्षसों पर आतंक था छाया।

दो॰- विश्वरन्धि का पूत था, चन्द्र उस का नाम।
चन्द्र, चन्द्र समान था, शान्तमयी अभिराम।। 7125

चन्द्र से युवनाश्व भया, अश्वारोही प्रवीन।
शत्रु उस से कांपते, समर में सन्मुख चीन।। 7126

योग्य पुत्र युवनाश्व का, शावस्त था अभिधान।
पुरी बसाई शावस्ती, इक ऐतिहासिक जान।। 7127

शावस्त का पुत्र था बृहदश्व, योधा वीर प्रिय निज अश्व।
अश्वरोही वीर विख्यात, शत्रु सन्मुख काल साक्षात।
था कुवलाश्व बृहदश्व का पूत, आर्य वंश का महान सपूत।
'धुन्धुमार' उसी का अभिधान, इस का कारण भी लो जान।
उतङ्ग ऋषि का वन में वास, राक्षस उस को करें हताश।
उतङ्ग पास कुवलाश्व के आया, अपनी व्यथा वहां कह पाया।
आर्य धर्म का वह प्रत्यहारी, व्यथा ऋषि की सुनी उस सारी।
अपने पुत्रों को ले साथ, शस्त्रास्त्र भी लेयकर हाथ।
धुन्धु राक्षस को जा ललकारा, और ढ़ेर उसे वहीं कर डारा।

दो॰-कुवलाश्व का नाम भया, तब से 'धुन्धुमार'।
आर्य वीर तो करत थे, राक्षसों का संहार।। 7128

आर्यों का यह धर्म है, दें शत्रु को मार।
[1]शत्रु को जो क्षमा करें, अनार्य वह गुनाह गार।। 7129

आर्य जब से हिन्दू बने, विसर गया निज धर्म।
विधर्मियों की ही दासता, बना सभी का धर्म।। 7130

कुवलाश्व के तीन थे पूत, तीनों ही थे वीर सपूत।
कपिलाश्व था एक का नाम, दूजा दृढ़ाश्व था अभिराम।
भद्राश्व तीसरे को लो जान, तीनों वीर थे पिता समान।
चारों ने मिल धुन्धु मारा, आर्य मर्यादा को स्वीकारा।
उतङ्क ऋषि का कष्ट निवारा, अन्य ऋषियों को मिला सहारा।
दृढ़ाश्व का जो सुत था जाया, हर्यश्व उस का नाम धराया।
हर्यश्व का जो भया था पूत, निकुम्भ वीर था महान सपूत।
निकुम्भ से बर्हणश्व जाया, उस से भी कुशाश्व हो पाया।
उसका सुत सेनजित जान, सेनजित का युवनाश्व मान।

3. मनु वंशज मांधाता का वंश

दो०–युवनाश्व का जो पूत था, मांधाता उस का नाम।
त्रसद्दस्यु भी उसे कहें, वह तो वीर ललाम।। 7131

[2]त्रसद्दस्यु था भया विख्यात, काल वह राक्षसों का साक्षात।
आर्य वंश का बुझता दीप, कीना मांधाता ने प्रदीप।
राक्षस उसने बहुत संहारे, ऋषियों के शत्रु जो थे भारे।

---

1. गुनाहगार – अपराधी। देखें गीता – "अनार्यजुष्टम्"
2. त्रसद्दस्यु का अर्थ है जिससे दस्यु अर्थात् राक्षस सदा भयभीत रहते थे।

मांधाता ने बहु यज्ञ भी कीन, और ऋषियों की रक्षा कीन।
ऋषियों का आशीष उस पाया, यश मांधाता का जग छाया।
रहन लगे जब आर्य इस देश, तब "आर्यवर्त" भया यह देश।
राज्य स्थापित आर्य कर पाये, सर्वत्र वे इस देश में छाये।
राक्षस जब आक्रमण कर पाते, आर्यों से थे पिट कर जाते।

दो०–आर्यों का तो धर्म था, उस काल में मीत।
हनन राक्षसों का करें, और देश लें जीत।। 713 2

[1] मांधाता के पूत भी, थे वीर साक्षात।
बिन्दुमती महारानी, पूत तीन की मात।। 713 3

राम प्रभु इस वंश के, थे रक्षक खुद आप।
आर्य वंश प्रभु को प्रिय, हरें सकल संताप।। 713 4

रामलाल प्रभु विश्व की, सदा करें संभाल।
आर्य जगत के राम जी, हैं स्वयं प्रतिपाल।। 713 5

---

1. मनु वंशज मांधाता का वंश :–

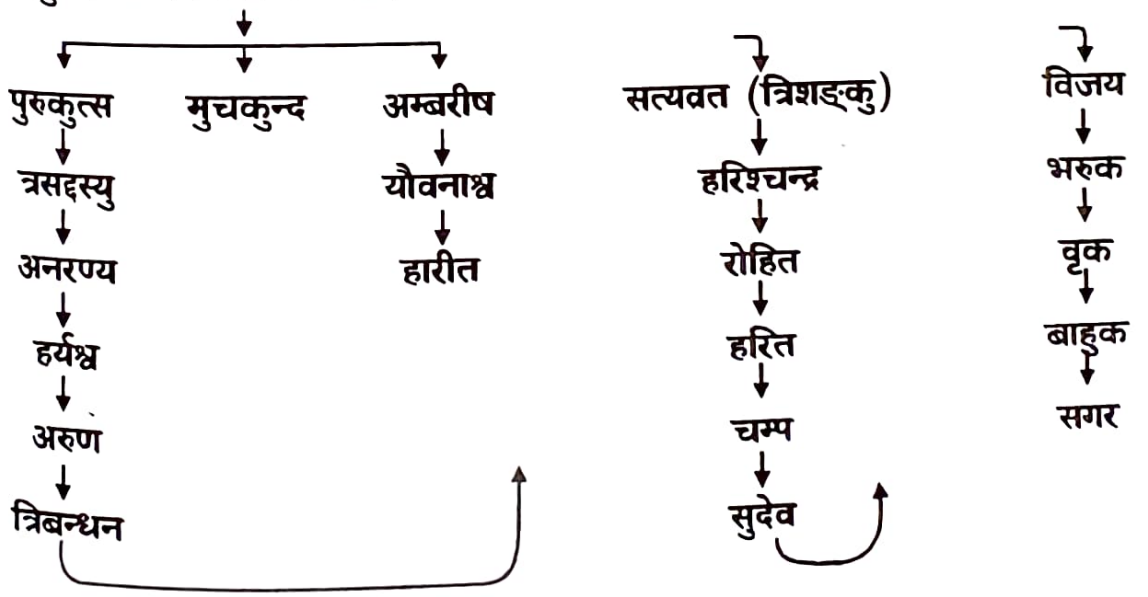

सृष्टि के वे आदि से, और तलक कल्पांत।
रहत प्रभु इस जगत में, लेश न इस में भ्रांत।। 7136

तीन मांधात के थे पूत, अम्बरीष उन में ज्येष्ठ सपूत।
अम्बरीष से यौवनाश्व जाया, यौवनाश्व से हारीत हो पाया।
मुचुकुन्द मांधाता का जो सुत, वह तो अल्लाही था इक पुत।
योग साधना में लग पाया, अपना जन्म सफल कर पाया।
'योगी मुचुकुन्द' भया विख्यात, राजा योगी बना साक्षात।
आर्य कुल की यही है शान, वे माया में न हों गुलतान।
तीजा पुत्र जो था जाया, उस ने दीर्घ वंश चलाया।
पुरुकुत्स उस का था अभिधान, राम लक्ष्मण उसी वंश में जान।
सूर्य, मनु, मांधाता आये, भगीरथ भी जिस वंश में जाये।
उस की महिमा को लिख पाना, सूरज को है दीप दिखाना।
[1]पुरुकुत्स का अब वंश बतायें, क्रमशः नाम सभी कथ पायें।

दो०–पुत्र पुरुकुत्स का भया, त्रसद्दस्यु लो जान।
शत्रु थे सभी कांपते, उस का देख निशान।। 7137

[2] दस्युहंता भी कहें, उस वीर को मीत।
राक्षसों की बहु बस्तियां, लीं थीं उस ने जीत।। 7138

---

1. भारत जब था भया गुलाम, भूल गये तब सभी ये नाम।। 1
स्मरण कराने हेत ही, लिख रहा हूँ नाम।
नज़र किसी की यदि पढ़े, शायद करे सलाम।। 2
मानस पट पर छा रहे, अन्य ही अब नाम।
शाहजहां और अकबर, व वलिंगटन नाम।। 3

2. आर्य लोग राक्षसों को 'दस्यु' नाम से पुकारते थे।

त्रसद्दस्यु जैसे वीर महान, आर्यों में थे बहु जन जान।
राक्षसों का वे करें संहार, ऋषियों पर जो करत प्रहार।
त्रसद्दस्यु का जो पुत्र जाया, अनरण्य उस का नाम धराया।
अनरण्य का भी भया जो पूत, हर्यश्व वीर था वह सपूत।
सुत हर्यश्व का अरुण लो जान, आर्यों में इक वीर महान।
पुत्र अरुण का त्रिबन्धन जानो, त्रिशङ्कु उस से उपजा मानो।
त्रिशङ्कु से सत्यव्रत भी नाम, इतिहास में प्रसिद्ध यह नाम।
त्रिशङ्कु से हरिश्चन्द्र जाया, 'सत्य हरिश्चन्द्र' जो कहाया।
मर्यादा आर्यों की जो भाई, हरिश्चन्द्र थी पाल दिखाई।
"सत्य वचन न कभी टल पाये, चाहे सर्वस्व ही छिन जाये"।

दो०– [1]सत्य वचन के कारणे, हरिश्चन्द्र विख्यात।
शिक्षा ग्राही जगत ने, सत्य की उससे तात।। 7139

रोहित था हरिश्चन्द्र का पूत, अपने पिता का वह सपूत।
न्याय पूर्वक उस कीना राज, उस को भी जग जाने आज।
रोहित का था हरित सुपूत, राजा चम्प हरित का पूत।
चम्प का सुत सुदेव लो जान, सुदेव का पुत्र विजय महान।
विजय महान नरेश था भाई, उस की महिमा है जग छाई।
विजय का पुत्र भरुक लो जान, मनु के कुल का भूषण मान।
भरुक का सुत वृक हो पाया, जग में उस भी नाम कमाया।
वृक का बाहुक पूत सम्राट, उस अधीन था राज्य विराट।
बाहुक से जो पूत उपजाया, वह तो विश्व विजयी कहलाया।

1. देखें हरिश्चन्द्र का इतिहास "श्री योग महादिव्य रामायण" के दोहा 2922 से आगे।

4. मनु वंशज चक्रवर्ती सम्राट सगर का वंश

दो०–सगर पूत का नाम था, सागर सम महान।
इसके आगे जो लिखें, इतिहास पवित्र जान।। 7140

अब प्रभु लिखवा रहे, वोह पवित्र गाथ।
रामचन्द्र जिसमें भये, सृष्टि के जो नाथ।। 7141

वही राम फिर आयेंगे, रामलाल के रूप।
कलियुग में ले योग को, रहेंगे पर वे गूप।। 7142

चक्रवर्ती सम्राट था, सगर को लो जान।
असञ्जस उस का पुत्र, जो सम्राट महान।। 7143

असञ्जस का जो पुत्र जाया, अंशुमान था नाम धराया।
अंशुमान प्रजा का प्यारा, प्रजा का हित उसके मन भारा।
तब मरुस्थल था भारतदेश, जल दीखत था न कहीं भी लेश।

---

1. मनु वंशज चक्रवर्ती सम्राट सगर का वंश:–

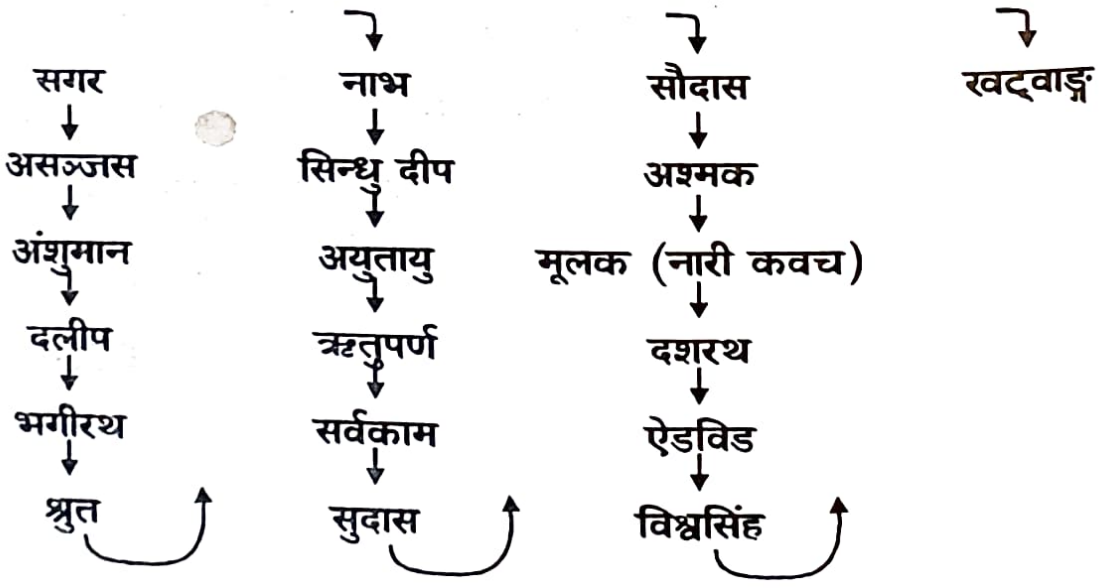

बिना जल नहीं अन्न हो पाये, जनता भूखी दुख को पाये।
अंशुमान ने कीन विचार, हिमालय से लाऊँ जल नीकार।
सूखी भूमि तर हो जाये, और जनता अन्न उपजाये।
आयु भर उस कीन प्रयास, पूजी न उस की तब थी आस।
दलीप पूत जो उस घर जाया, बाद पिता उस राज्य को पाया।

दो०-पिता की इच्छा जान कर, दलीप कीन प्रयास।
छाने पर्वत बहुत उस, पूजी न उस की आस।। 7144

आयु भर वह करत रहा, इसी ओर प्रयास।
मिल सकी नहीं सफलता, टूट गया विश्वास।। 7145

5. महाराज भगीरथ द्वारा हिमालय से गंगा लाना

भगीरथ सुत दलीप का, भया राज्य आसीन।
उसने तब इस कार्य को, निज हाथ में लीन।। 7146

मन्त्रिन को वह लेय कर, गया उत्तर की ओर।
देखे नीर कहां मिले, लायें भारत ओर।। 7147

पर्वतों में जा हर जा देखा, जल स्रोतों को उन पेखा।
हिमस्थल भी निरख थे पाये, तब सभी इक स्थल पै आये।
मन्त्रिन कहा यह ठीक स्थान, कार्य आरंभ करें यहां आन।
लौट गये वे कर अनुमान, पुनः आयेंगे इसी स्थान।
भगीरथ संग विशेषज्ञ लाया, और वह उसी स्थल जा पाया।
उन वहां उस स्रोत को देखा, जहां से जल था बहता पेखा।
विचार किया यहां से जल जाय, पहुंच वह भारत में भी पाय।
सन्मुख मार्ग का था सवाल, किस विध लेवें मार्ग भाल।

किस मार्ग को जल लें जायें, निज देश में उसे पहुंचायें।
घूम घाम उन पर्वत देखा, और घोर वनों को पेखा।
धीरे धीरे चलते जायें, वा परामर्श करते जायें।
तभी पर्वत में मार्ग देखा, घोर वनों से निकलता पेखा।
इसी मार्ग से जल जा पाय, विशेषज्ञ राय यही दे पाय।
तब सभी मैदान में आये, भूमि समतल वहां सुहाये।
पहुंचे थे वे पर्वत नीचे, समतल भूमि जहां जल सींचे।
भगीरथ का रथ आगे आगे, उस पीछे सब चलने लागे।
वे पश्चिम से पूर्व की ओर, निरीक्षण करते जायें ठोर।
सीधे मार्ग जल ले जायें, जब हिमालय से उतरायें।
मार्ग में कठिनाइयां आईं, साहस से सब दूर हटाईं।

दो०–साहस से ही हो सकत, कठिन कार्य अपूर्व।
भगीरथ सम महापुरुष, कभी भया न पूर्व।। 7148

एक स्थल फिर ऐसा आया, जहां विशाल आश्रम मिल पाया।
उस आश्रम का जह्नु स्वामी, योगी और तपस्वी नामी।
भगीरथ उससे थे मिल पाये, जह्नु कहा "किमि राजन आये"।
भगीरथ ने निज बात बताई, प्रजा की सब व्यथा सुनाई।
सूखी भूमि न अन्न उपजाये, प्रजा समस्त भूखी रह पाये।
हिमालय से हम जल उतरायें, पश्चिम से पूर्व को ले जायें।
आप का आश्रम मग में आये, नदी आश्रम से हो कर जाये।
ऋषिवर आदेश यदि तब पायें, जल को हम इस मग ले जायें।

दो०–भगीरथ ने प्रणाम सहित, निज बताई बात।
कहन लगे ऋषि जह्नु तब, क्षिन्न वदन साक्षात।। 7149

कहा ऋषि ने "हे महाराज, आप का धरती पर है राज।
यह आश्रम मम गुरु का मीत, रहूँ यहां जिमि गुरु की रीत।
गुरु आश्रम जल में बह जाये, मन मेरा न सहन कर पाये"।
जहु ने नहीं बात स्वीकारी, मन्त्री ने तब गिरा उच्चारी।
"ऋषिवर बात को लेवो मान, इसमें प्रजा का है कल्याण"।
मंत्रियों ने बहु विध समझाया, जहु न टस से मस हो पाया।
भगीरथ के मन युक्ति आयी, जहु को जो उस कह पायी।
"हे मुनिवर जब जल यहां आये, आप का नाम संग रह पाये।
वह धारा हो तब पुत्री नाथ, 'जाह्नवी' नाम पा बने सनाथ"।
सुन राजा की वाणी साध, मौन लिया था उस ने साध।

दो०-[1]मौन लक्षण स्वीकार का, वेद कहें यह बात।
प्रसन्न वदन थे सब भये, मौन मुनि साक्षात।। 7150

अपनी बात मनाय कर, कीना उन प्रस्थान।
मार्ग सीधे चल रहे, श्रमिक लावें निशान।। 7151

इस विध उन बहु मास बिताये, पूर्व समुद्र के तट आये।
हर्ष का रहा न पारावार, देखा समुद्र जभी अपार।
यात्रा के थे अंत में आये, लौट चले तब जहां से आये।
पहुंच पाये जब उसी स्थान, हिमालय का जल स्रोत महान।
निर्दिष्ट मार्ग पर जल की धार, भगीरथ छोड़ी पहली बार।
उस धारा के साथ ही साथ, चले सकल वे उस ही पाथ।
पर्वत से वे उछल के जाये, घने वनों में घूम दिखाये।

[1] देखो नीति परक उक्ति :- "मौनं स्वीकार लक्षणं"।

यह था अद्‌भुत महा प्रयास, भगीरथ का प्रयास जो खास।

दो०-भगीरथ के प्रयास से, चला पर्वत से नीर।
झर-झर करता वह चला, संग भगीरथ वीर।। 7152

भगीरथ के विशेषज्ञ, देखें ध्यान लगाय।
उसी मार्ग में जल बहे, जो निश्चित कर पाय।। 7153

समतल भूमि पर जल आया, निश्चित मार्ग पर बह पाया।
भगीरथ जल संग ही चाले, सारा मारग देखे भाले।
सागर तक उस जल पहुंचाया, मन्त्रिन को तब कह वह पाया।
अब तुम पुनः पर्वत पै जाओ, क्रमशः जल प्रवाह बढ़ाओ।
श्रमिकों को उस दीन आदेश, ध्यान तटों का रहे हमेश।
कुपथ पर कहीं न जल चल जाये, प्रयास विफल कहीं न हो पाये।
[1]सब सावधानी से हो पाया, स्वर्गिक जल भारत में आया।
सूखी भूमि भयी खुशहाल, भगीरथ ने था कीन कमाल।
नदी को जन सब आ कर देखें, खुशी खुशी जल बहता पेखें।
[2]जनता आती जाती थी, नदी तो बहती रहती थी।

दो०-बहते नद को देखकर, जनता के मन चाव।
भगीरथ की 'जय जय' कर, प्रकट करें निज भाव।। 7154

जनता कहे "भगीरथी", यह नदी का नाम।
भगीरथ महाराज ने, कीन लोकोत्तर काम।। 7155

---

1. स्वर्ग :- भारत वर्ष के उत्तर के प्रदेशों को आर्य 'स्वर्ग' के नाम से कहते थे।
2. Men may come and men may go, but I go on for ever.

श्रवण कर महाराज ने, कहा सबन को "तात।
यह दिया ऋषि जहु की, 'जाहवी' यह साक्षात"।। 7156

शिव के थे जो भक्तजन, उन कहा तब आन।
शिव स्थान से आ रही, 'गंगा' है अभिधान।। 7157

[1]गणपति संग ऊपजी, यह गणपति की बहन।
शिव की जानिये पुत्री, जलामृत करती वहन।। 7158

लागे कहन "त्रिपथिका", कुछ जन इसको तात।
मार्ग तीन से होय कर, है आई साक्षात।। 7159

तीन मार्ग वे कौन से, इक पर्वत मार्ग पेरव।
दूजा घने वनों का, समतल तीजा देरव।। 7160

देश में गंगा आ गई, भारत भया खुशहाल।
आर्य जनों की बस्तियां, बनी वहां तत्काल।। 7161

ऋषियों के भी आश्रम, थे हुए स्थापित मीत।
गंगा से थी हो गई, सर्व जगत की प्रीत।। 7162

'गंगा गंगा' कहत न, कहते 'गंगा मात'।
मातृ सम सभी पूजते, इस नदी को तात।। 7163

---

1. 'गंगा' शब्द की व्युत्पति इस प्रकार से है:–
'गं' गणेश का वाचक है और 'गा' का अर्थ होता है 'जन्म होना'। इस कारण गणपति की सहोदरी होने के कारण इस नदी को 'गंगा' कहा गया।
(देखिये–इन शब्दों के अर्थ के लिए "पद्मचन्द्र कोष" गणेशदत्त शास्त्री रचित।। मुद्रित 1914)

त्रेता में थी ऊपजी, द्वापर व कलिकाल।
धर्म सनातन के लिए, रही पूज्या तत्काल।। 7164

'गंगा' ना पुकारते, कहते 'गंगा मात'।
भेजी है भगवान ने, सींचन भारत मात।। 7165

यदि न होती यह नदी, मरुस्थल होता देश।
स्वर्ण चिड़िया न बन सकत, नाम न होत विदेश।। 7166

भगीरथ ने तब यह कर पाया, गंगातट पर नगर बसाया।
'अयोध्या' नाम से था विख्यात, निशानी स्वर्ग की थी साक्षात।
स्वर्ग त्याग आर्य थे आये, भारत ही अब स्वर्ग बन पाय।
स्वर्ग में असुरों से संघर्ष, भारत में राक्षसों से संघर्ष।
राक्षसों का था लंका देश, अधिकार जतावें पर इस देश।
चुनौती आर्य उन्हें दे पाये, उनके कान खड़े हो पाये।
करते आर्यों को परेशान, ऋषि आश्रमों का वे अपमान।
आश्रमों को उजाड़ के जाते, ऋषियों को उठा कर ले जाते।

दो०–आश्रमों को उजाड़ते, ऋषियों का आघात।
मनु वंशी थे क्षत्री, करते तब प्रतिघात।। 7167

भारत 'आर्य वर्त' बन पाया, आर्यों का निशान लहराया।
अयोध्या बनी राज की धानी, आर्य राज्य की महान निशानी।
निज संग आर्य वेद थे लाये, श्रुति रूप में थे संग आये।
वेद 'ब्रह्मविद्या' कहलायी, कण्ठस्थ ही थी हो पायी।
उस ज्ञान की सांझ संभाल, 'ब्राह्मण वर्ग' बना तत्काल।

अन्यथा वेद लुप्त हो जाते, ब्राह्मण यदि न इन्हें बचाते।
आर्यों का था वर्ग बन पाया, रक्षा वेदों की कर पाया।
आर्ष विद्या सुरक्षित रह पायी, सभी आर्यों ने जो अपनाई।

दो०-सुरक्षित वेद ज्ञान तब, रहा यहां उस काल।
अनादिकालिक ज्ञान को, इस विध लीन संभाल।। 7168

राक्षस क्षति बहुत पहुंचाते, आर्यों को परेशान कर पाते।
आर्य बस्तियों को दें उजाड़, करें आक्रमण दिन दिहाड़।
आर्यों का इक वर्ग बन पाया, 'क्षत्रिय वर्ग' था जो कहाया।
हमला राक्षस जब कर पाते, क्षत्रिय उन को मार भगाते।
जनता सुरक्षित भयी इस रूप, सामाजिक ढ़ांचा यह अनूप।
राज्य की भी सांझ संभाल, क्षत्रिय वर्ग करता सब काल।
अयोध्या नगरी भयी सुरक्षित, क्षत्रियों द्वारा सदा आरक्षित।
सभी को यही बात सतावे, खाद्य सामग्री किस विध आवे।
वर्ग एक फिर और उपजाया, 'वैश्य' वर्ग था जो कहलाया।
[1]'विश' धातु का अर्थ है खाना, 'वैश्य' का अर्थ खाद्य उपजाना।

दो०-गंगा भूमि सींचती, वैश्य उपजाते अन्न।
इस वर्ग के कारणे, आर्य भये सम्पन्न।। 7169

आर्य जाति तब भयी सम्पन्न, अयोध्या में बहु धन व अन्न।
अजेय अयोध्या थी बन पायी, वेद ध्वनि रहती नभ छायी।
भारत आर्य वर्त बन पाया, ऋषियों ने था धर्म फैलाया।
यह तो प्रभु की ही थी दाया, जिससे महान कार्य हो पाया।

1. 'वैश्य' शब्द 'विश' धातु से बना है जिस का अर्थ शब्द कोष में ऐसे है।

धर्म प्रभु को सदैव प्यारा, धर्म का जान वेद आधारा।
वेद ही धर्म का है आधार, वैदिक धर्म का ले आधार।
आर्यों ने यहां धर्म फैलाया, अनार्यों को था आर्य बनाया।
कृपा प्रभु की थी हो पायी, भारत आर्य भूमि हो पायी।

दो०-राक्षस परास्त होत थे, आर्य विजेता जान।
प्रभु कृपा थी बरसती, आर्यों पर पहचान।। 7170

आर्य धर्म प्रभु को प्रिय, और वेद का ज्ञान।
आर्यों पर जब भीड़ पड़ी, कृपा कीन भगवान।। 7171

ऐतिहासिक कार्य भगीरथ कीन, निज सुत को फिर आसन दीन।
भगीरथ का सुत श्रुत लो जान, पिता सदृश भया शक्तिमान।
रक्षा अयोध्या की कर पाया, राक्षसों से बहु युद्ध कर पाया।
उस का सुत था नाभ नाम धीमान, राजनीति का वह विद्वान।
उसने कीना राज्य विस्तार, वेदों का भी कीन प्रचार।
नाभ नाम से सिन्धु द्वीप उपजाया, उससे अयुतायु था जाया।
मानव वंश का इमि विस्तार, हो रहा था वहां क्रमानुसार।
अयुतायु का भी पुत्र जाया, उस का नाम ऋतुपर्ण सुहाया।

दो०-ऋतुपर्ण महाराज था, सगर वंश का दीप।
राक्षस बहु संहारे, जले अयोध्या दीप।। 7172

ऋतुपर्ण का पुत्र भया, सर्वकाम था नाम।
उसके साम्राज्य में, जनता पूर्ण काम।। 7173

सर्वकाम का पूत सुदास, सुत सुदास का था सौदास।

सुपुत्र उसका अश्मक जाया, अश्मक से मूलक उपजाया।
मूलक का एक और भी नाम, 'नारी कवच' था दूजा नाम।
इस नाम का इतिहास बतायें, लाखों वर्ष पूर्व चल पायें।
उस काल इक वीर था जाया, [1]'परशुराम' था नाम धराया।
क्षत्रियों से उस की ठन पाई, हत्या क्षत्रियों की हो पाई।
मातायें निज सुत संभालें, परशुराम से उन्हें बचालें।
परशुराम से सब थीं डरतीं, 'मूलक' की भी रक्षा करतीं।
मूलक का इस विध यह नाम, 'नारीकवच' से वह बदनाम।
मूलक ने बहु यश कमाया, रक्षा राज्य की वह कर पाया।
मूलक का सुत दशरथ जानो, दशरथ का सुत ऐडविड मानो।
ऐडविड का जो पुत्र जाया, विश्वसिंह उस नाम धराया।
उसका पुत्र खट्वाङ्ग सम्राट, भारत का इक महान सम्राट।

6. चक्रवर्ती सम्राट खट्वाङ्ग का वंश

[2]खट्वाङ्ग ने जो वंश चलाया, विश्व विख्यात वह वंश हो पाया।

---

1. परशुराम महाराज अश्मक के काल में हुए थे, न कि रामचन्द्र के समय में। महाराज रामचन्द्र महाराज अश्मक से कई पीढ़ियों के पश्चात हुए। भक्त तुलसीदास ने अपने राम चरितमानस ग्रंथ में परशुराम को राम का समकालीन वर्णन किया है। इतिहास की दृष्टि से यह ठीक नहीं और इसी कारण बहुत से विद्वानों को भी भ्रांति हुई है। बाल्मीकीय रामायण में परशुराम का रामचन्द्र के साथ कहीं भी वर्णन नहीं मिलता।
(देखें बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग 67)

2. चक्रवर्ती सम्राट खट्वाङ्ग का वंश :-

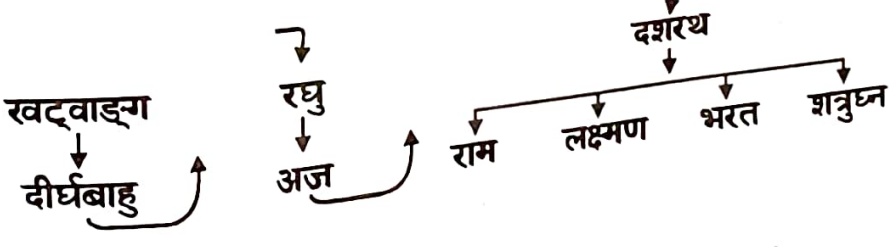

दो०–चक्रवर्ती सम्राट था, खट्वाङ्ग को जान।
उस को जीत न सकत था, शत्रु कोई महान।। 7174

विदेह पुरुष वह एक था, संसार से विरक्त।
राजपाट को त्याग भया, आत्म रूप आसक्त।। 7175

जो पूत खट्वाङ्ग के जाया, दीर्घबाहु उस नाम धराया।
परमवीर व परम तेजस्वी, खट्वाङ्ग समान ही था मनस्वी।
उस का पुत्र रघु महान, जाने जिस का नाम जहान।
यश भारत में उस का छाया, राक्षसों को जो लेश न भाया।
राक्षस आ कर करें प्रहार, मुंह की खाते थे हर बार।
राक्षसों से उस का संग्राम, होता रहता काल तमाम।
रघु का अज था पुत्र जाया, अज से दशरथ था उपजाया।
दशरथ भी था वीर महान, उस की पत्नियां तीन लो जान।

7. महाराज दशरथ का वंश

दो०– दशरथ भी सम्राट था, उस के पुत्र चार।
राम सब से था बड़ा, ईश्वर का अवतार।। 7176

सर्व जगत है मानता, उस को निज भगवान।
देश विदेश में मूर्तियां, बनीं हैं उस की जान।। 7177

राम के भाई अब लो जान, भरत व लक्ष्मण दो पहचान।
तीसरा शत्रुघ्न है मीत, भाइयों से अटूट प्रीत।
यह प्रीत आदर्श लो जान, जग गाता है इस के गान।

त्रेता में राम भया अवतार, धर्म का उसने कीन उद्धार।
पापियों को उस मार मुकाया, धर्म की रक्षा वह कर पाया।
राम अवतार के कर्म महान, करेंगे वर्णन आगे जान।
[1]दशरथ के सब वंश का मीत, कर रहे वर्णन अब सप्रीत।
चारों भाइयों की संतान, क्रमशः लेवो उस को जान।

दो०-राम के पुत्र दोय थे, सीता की संतान।
लव वा कुश दो युगल थे, दोनों वीर महान।। 7178

लक्ष्मण के भी दोय थे, पुत्र वीर महान।
चित्रकेतु एक भया, दूजा अंगद जान।। 7179

---

1. महाराज दशरथ का वंश

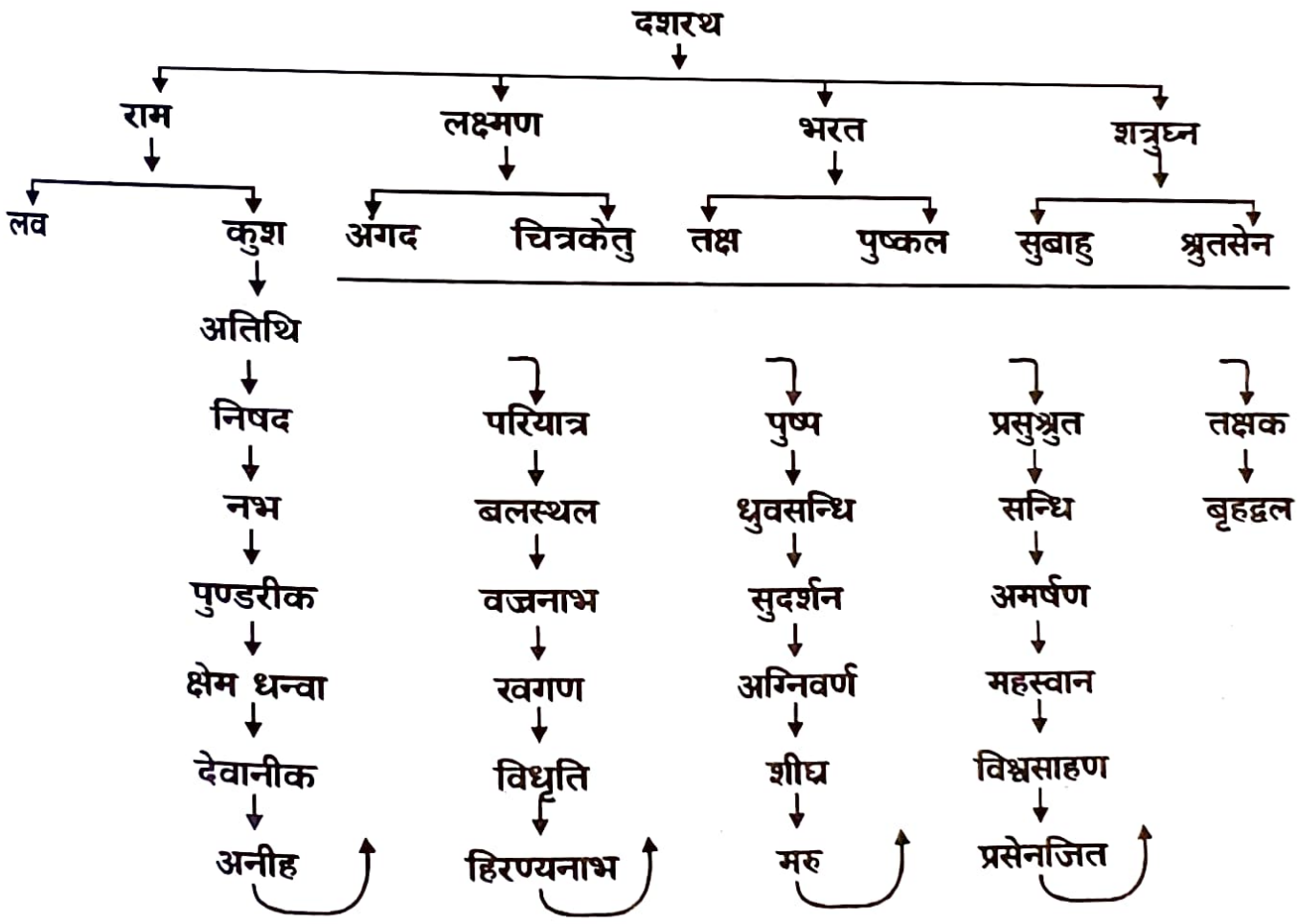

तक्ष पुत्र था भरत का, राक्षस हने अनेक।
दूजा पुष्कल नाम का, उस सम वीर न एक।। 7180

सुबाहु व श्रुतसेन थी, शत्रुघ्न संतान।
वीर शिरोमन जानिये, अपने पिता समान।। 7181

कुश का वंश दीर्घ चल पाया, त्रेता अन्त तक राज्य चलाया।
उस वंश का अब करें बखान, जिस पै राम की दया महान।
पाछे राम के वर्णें कार्य, रक्षक उस के धर्म जो आर्य।
त्रेता का था भयंकर काल, रामलाल बने राम उस काल।
साधु पुरुषों का कीन त्राण, आदि काल से जो करते आन।
जब जब धर्म की होती हान, राम प्रकटें तब जग में आन।
सतयुग त्रेता वा हो कलिकाल, राम सदा लें धर्म संभाल।
द्वापर में भी उन का आना, सब जगत ने था यह जाना।

दो०–युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बनें कभी कृष्ण वे, रामलाल लो चेत।। 7182

युग युग में प्रभु राम जी, आयें ले अवतार।
राम बनें कभी कृष्ण वे, कभी सनत्कुमार।। 7183

आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 7284

चौबीस बार प्रकटे, राम प्रभु इस भूम।
मन 'सेवक' का करत है, ले भूम यह चूम।। 7185

कुश के वंश का करें बखान, अतिथि था उसका सुत लो जान।
अतिथि का सुत निषद लो जान, पिता समान ही वह बलवान।
निषद का पुत्र नभ को जानो, वीर धुरन्धर उस को मानो।
नभ से पुण्डरीक था जाया, यशस्वी राजा वह बन पाया।
क्षेम धन्वा था नृप महान, वह पुण्डरीक का सुत पहचान।
देवानीक भी कीना राज, क्षेम धन्वा का सुत महाराज।
देवानीक का सुत जो जाया, अनीह नाम उस का हो पाया।
परियात्र था अनीह का पूत, राक्षस कीन थे उस ने सूत[1]।
बलस्थल परियात्र के जाया, राक्षस विजय वह भी कर पाया।
बलस्थल का पुत्र था वज्रनाभ, उस की तो थी अलौकिक आभ।
वज्रनाभ से खगण था जाया, वीर शिरोमणि वह कहलाया।
खगण के हां विधृति उपजाया, रक्षा ऋषियों की कर पाया।
विधृति सुत हिरण्यनाभ लो जान, जैमिनी का वह शिष्य पहचान।
राजर्षि उस को लेवो जान, ऋषि मुनियों का रक्षक मान।
योगाचार्य वह कहलाया, प्रजा का था प्रिय बन पाया।
याज्ञवल्क्य जो ऋषि महान, उस भी दीक्षा ली थी आन।
हिरण्यनाभ का शिष्य बन पाया, आध्यात्म योग उसे सिखलाया।

दो०-अध्यात्म योग सिखाय कर, कही ऋषि से बात।
योग विद्या सब से बड़ी, याद रहे हे तात।। 7186

योग प्रिय है राम को, युग युग लें अवतार।
जन भूलें जब योग को, आवें तन वे धार।। 7187

1. सूत - वंश

हिरण्यनाभ का पुत्र जो, पुष्प था उस का नाम।
राज्य किया उस न्याय से, प्रजा थी पूर्ण काम।। 7188

पुष्प का पुत्र ध्रुवसन्धि जाया, दृढ़ता पूर्वक राज्य कर पाया।
अपने राज्य का कीन विस्तार, प्रजा सुखी थी हर प्रकार।
ध्रुव सन्धि का पूत सुदर्शन, प्रजा कहत उस को प्रियदर्शन।
उसके राज्य सुख संपत सारी, अपने राज्य का दृढ़ प्रहारी।
अग्निवर्ण सुदर्शन घर जाया, दीर्घ काल वह राज्य कर पाया।
उस का तेज देखा न जाये, शत्रु कोई न सन्मुख आये।
अग्निवर्ण का पुत्र था शीघ्र, परास्त करत वह शत्रु शीघ्र।
शीघ्र का पुत्र था मरु महान, सिद्ध योगी वह परम सुजान।

दो०-मरु तो था इक सिद्ध पुरुष, राजर्षि लो जान।
हुआ न होगा जगत में, राजा उस समान।। 7189

राम चन्द्र के वंश में, ऐसे नृप अनेक।
सिंहासन पर बैठ कर, गहें प्रभु की टेक।। 7190

यह सब कृपा राम की, युग युग लें अवतार।
राम बनें कभी कृष्ण वे, रामलाल तन धार।। 7191

मरु ने एक ग्राम बसाया, 'कलाप' नाम उस का रख पाया।
उस में रह तपस्या करता, शासन देश का भी था करता।
योग साधन की यही बढ़ाई, ईश्वर होते सदा सहायी।
ईश्वर योगी संग रह पाते, उसके कार्य स्वयं कर पाते।

मरु का पुत्र था भया प्रसुश्रुत, वह भी योगी और सुश्रुत[1]।
प्रसुश्रुत पूत भया था संधि, उसकी भी ईश्वर से सन्धि[2]।
सन्धि का पुत्र अमर्षण जाया, युद्ध राक्षसों से कर पाया।
अनेक राक्षस उस संहारे, आश्रमों में उपद्रव कारे।
अमर्षण का पुत्र महस्वान, पिता समान ही वह बलवान।
महस्वान का पुत्र जाया, विश्वसाहण था नाम धराया।
विश्वसाहण का प्रसेन था जित, विख्यात भया वह विश्व था जित।
प्रसेनजित से तक्षक जानो, रघुकुलभूषण उस को मानो।
तक्षक सुत बृहद्बल मानी, अन्तिम रघुकुल की नीशानी।
द्वापर युग उस काल था आया, पांडवों का यश जग में छाया।
युद्ध अभिमन्यु संग हो पाया, जिसमें काम बृहद्बल आया।

दो०–रामचन्द्र के वंश का, वर्णन कीन इतिहास।
रामचन्द्र भगवान का, करेंगे वर्णन खास।। 7192

8. महाराज निमि का वंश

प्रथम करें उस वंश का, जिस का "मैथिल" नाम।
नृप भये जिस वंश के, योगी परम तमाम।। 7193

आदि पुरुष जो था मनु, उस पर प्रभु की दाय।
सकल सृष्टि में विस्तृत, मानव का समुदाय।। 7194

मनु पर प्रभु की दया महान, आदि नाथ जो राम भगवान।

---

1. सुश्रुत – विद्वान
2. सन्धि – मिलाप

युग युग में वे लें अवतार, मनु पै उन की दया अपार।
[1]मनु से उपजी जो संतान, इक्ष्वाकु पुत्र प्रथम लो जान।
इक्ष्वाकु के पुत्र मुख्य थे दोय, विकुक्षि एक निमि दूसर होय।
विकुक्षि का रघुकुल प्रसिद्ध, निमि के 'मैथिल' नृप थे सिद्ध।
रघुकुल का वर्णन हैं कर पाय, मैथिल वंश अब सन्मुख आय।
निमि से कुल था यह चल पाया, निमि का पुत्र जनक था जाया।
जनक को सारा जग पहचाने, "वैदेह" नाम से उस को जाने।

दो०– दीर्घ काल तक वंश यह, चला त्रेता माँझ।
योगी राजा बहु भये, इस वंश के माँझ।। 7195

इस वंश की परंपरा, अब कहें हे मीत।
श्रवण करो सप्रेम तुम, एकाग्र कर के चीत।। 7196

(54) चौवन पीड़ी वंश की, सब का करूं बखान।
सिद्ध पुरुषों के नाम ले, 'सेवक' का कल्याण।। 7197

प्रभु की थी इस वंश पर, अलौकिक कृपा मीत।
इसी कारण से थी भयी, राम सीता की प्रीत।। 7198

1.

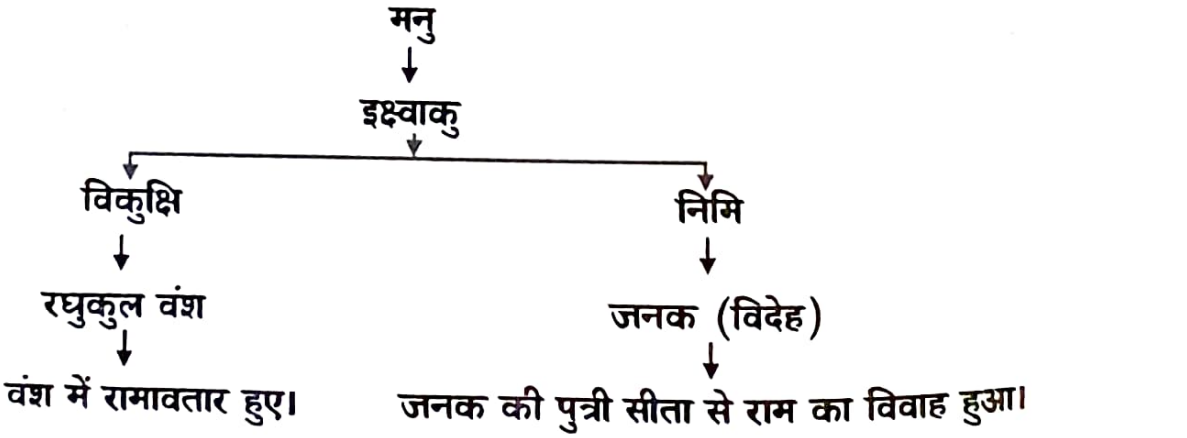

संक्षेप से सब नाम कथ पाऊँ, इस लेखनी का भाग्य जगाऊँ।
नाम में ही सब कुछ आ जाये, 'सेवक' परिचय क्या कराये।
निमि से 'नैमिषारण्य' लो जान, निमि की तपस्थली लो मान।
उस के वंश में मीत प्यारे, योगाभ्यासी नृप थे सारे।
निमि का पुत्र जनक लो जान, जनक का उदावसु लो मान।
उदावसु का था नन्दिवर्धन, उस का सुकेतु वंश का चंदन।
सुकेतु का देवरात महान, देवरात का बृहद्रथ सुजान।
बृहद्रथ का महावीर्य था पूत, महावीर्य का सुधृति सुपूत।
सुधृति से धृष्टकेतु था जाया, धृष्टकेतु से हर्यश्व उपजाया।

दो०–हर्यश्व का पुत्र था मरु, प्रतीपक मरु का जान।
प्रतीपक
प्रतीक से कृतिरथ भया, देवमीढ़ फिर जान।। 7199

देवमीढ़ का था विश्रुत सुत, महाधृति विश्रुत का था पुत्त।
उस से था कृतिराज उपजाया, महारोमा उस बाद था आया।
महारोमा का पुत्र जान, स्वर्णरोमा इस नाम से मान।

"मैथिल" वंश की परंपरा :–

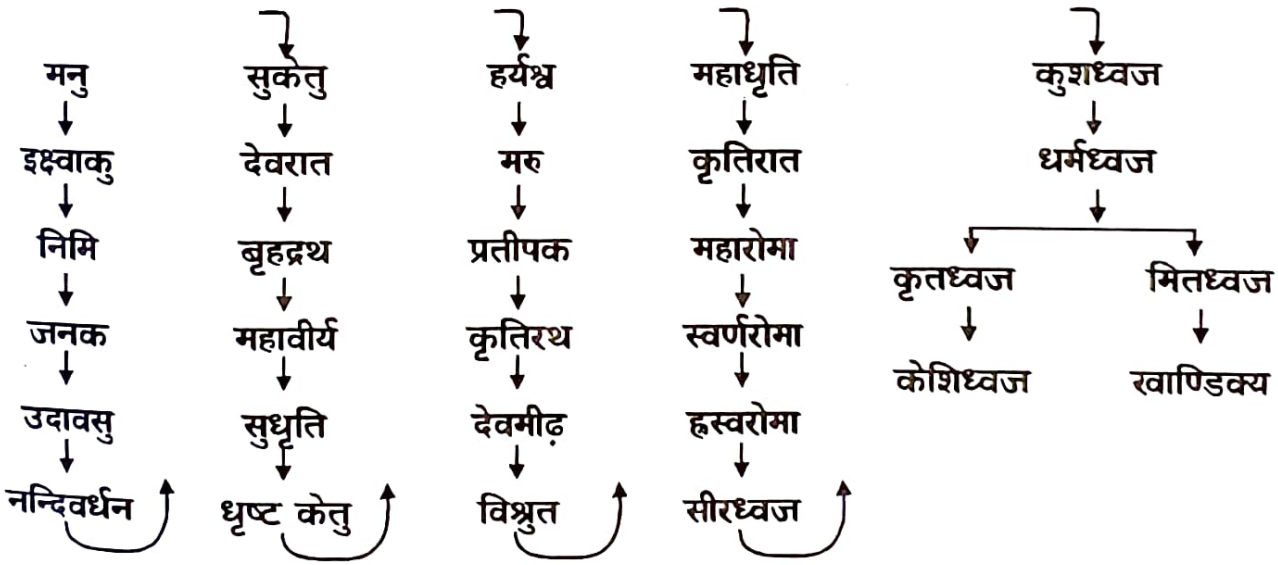

ह्रस्वरोमा था उस का पूत, सीरध्वज फिर भया सुपूत।
सीरध्वज का कुशध्वज मानो, उस का धर्मध्वज पहचानो।
धर्मध्वज के दो थे पूत, कृतध्वज और मितध्वज सुपूत।
कृतध्वज का भया जो पूत, केशिध्वज था महान सुपूत।
मितध्वज का था सुत महान, कर्मकाण्ड का वह विद्वान।
खाण्डिक्य नाम से था विख्यात, विरक्त भया वह जग से तात।
केशिध्वज था योगी महान, आत्म विद वह महा इन्सान।
[1]उस का वंश दीर्घ चल पाया, वर्णन उस का इस विध है आया।

9. मैथिलवंशीय महाराज केशिध्वज का वंश

दो०–केशिध्वज के वंश का, कर रहे अब बखान।
भानुमान था प्रथम सुत, वह भी योगी जान।। 7200

भानुमान का शतद्युम्न सुत, शतद्युम्न का शुचि योगी पुत।
शुचि का सनद्वाज लो जान, उर्ध्वकेतु सनद्वाज का मान।

केशिध्वज का वंश :–

केशिध्वज	अज	सत्यरथ	श्रुत	धृति
↓	↓	↓	↓	↓
भानुमान	श्रुतायु	उपगुरु	जय	बहुलाश्व
↓	↓	↓	↓	↓
शतद्युम्न	सुपार्श्व	उपगुप्त	विजय	कृति
↓	↓	↓	↓	↓
शुचि	चित्ररथ	वस्वनन्त	ऋत	महावशी
↓	↓	↓	↓	
सनद्वाज	क्षेमधि	युयुध	शुनक	
↓	↓	↓	↓	
उर्ध्वकेतु	समरथ	सुभाषण	वीतहव्य	

उर्ध्वकेतु से अज था जाया, अज से था श्रुतायु उपजाया।
श्रुतायु का सुत सुपार्श्व लो जान, चित्ररथ सुत सुपार्श्व का मान।
क्षेमधि सुत चित्ररथ का मानो, क्षेमधि का समरथ पहचानो।
योग में सिद्ध जानो समरथ, उसका पुत्र भया सत्यरथ।
उपगुरु था सत्यरथ का सुत, उस का भी उपगुप्त था पुत।
वस्वनन्त उपगुप्त से जाया, व उससे था युयुध उपजाया।

दो०–सुभाषण युयुध का सुत था, उस का पूत श्रुत।
श्रुत का पुत्र जय को जानो, विजय था जय का पूत।। 7201

विजय से ऋत हि उपजाया, ऋत से शुनक लो मान।
सुत शुनक का वीतहव्य, उस से धृति पहचान।। 7202

धृति से आगे वंश जो उस का करें बखान।
बहुलाश्व धृति का था सुत, कृति उस का पहचान।। 7203

कृति का पुत्र महावशी, समाप्त वंश यह जान।
विदेहों का यह वंश था, योगी यहां महान।। 7204

त्रेता में दो वंश थे, श्राद्ध मनु के जान।
सूर्य वंश तो एक था, मैथिल दूजा मान।। 7205

सूर्य वंश में राम भये, जनक दूज में जान।
दोनों वंश वर्णित किये, इस 'सेवक' अनजान।। 7206

11. त्रेता युग में भगवान राम का अवतार, लंका पर आक्रमण और रावण वध

त्रेता के अवतार थे, रामचन्द्र भगवान।
रावण का संहार कर, जग का कीन कल्याण।। 7207

उस अवतार का वर्णन, 'सेवक' करे बखान।
ले शरण वह राम की, दें 'सेवक' को ज्ञान।। 7208

मनु से लेकर राम तलक, (64)चौसठ पीड़ी जान।
राम से आगे वंश की, (28)अठाइस पीड़ी मान।। 7209

दो युगों का वर्णन, है किया हम मीत।
सतयुग त्रेता दोय में, आर्यों की भयी जीत।। 7210

सतयुग था महान युग, जम्बु द्वीप पै राज।
आर्यों का अकंटक, जगती में समराज।। 7211

त्रेता था निर्माण युग, कीना बहु निर्माण।
भारत की जो भूम थी, समतल कीनी आन।। 7212

गंगा लाई स्वर्ग से, सींचा देश तमाम।
अयोध्या नगरी बस गई, सर्वत्र जग में नाम।। 7213

[1]जगह जगह आश्रम बने, ऋषि मुनियों के जान।
जहां पर होने लग गये, यज्ञ हवन लो मान।। 7214

1. त्रेता युग में भारत वर्ष के ऋषियों के कुछ आश्रम :–
   1. सरयू–गंगा–संगम के समीप विश्वामित्र का आश्रम।

आगे देखें . . .

दूर दूर तक जा बसे, आर्य ऋषि उस काल।
राक्षसों के भये कान खड़े, क्रोध न सके संभाल।। 7215

आश्रमों पर करत तब, निरंतर थे प्रहार।
ऋषि आतंकित थे बहु, राम न सके सहार।। 7216

उन का भया अवतार तब, धर्म की रक्षा हेत।
त्रेता युग में जो किया, श्रवण करो सह चेत।। 7217

अयोध्या का सम्राट था, दशरथ को लो जान।
चार पुत्र उस के भये, रानियों की संतान।। 7218

कौशल्या रानी एक थी, सौमित्रा दूजी जान।
कैकेयी रानी तीसरी, जिस की भरत संतान।। 7219

राम लक्ष्मण और भरत, शत्रुघ्न थे पूत।
दशरथ के ये चारों, रानियों के सपूत।। 7220

दशरथ बूढ़ा जब भया, वन को जाने लाग।
ज्येष्ठ पुत्र था राम को, राज देने वह लाग।। 7221

---

2. चित्रकूट में वाल्मीकि का आश्रम।
3. वन में तापसों का आश्रम मण्डल।
4. शरभङ्ग मुनि का आश्रम।
5. सुतीक्ष्ण का आश्रम।
6. पञ्चाप्सर तीर्थ पर ऋषियों के विभिन्न आश्रम।
7. अगस्त्य मुनि का आश्रम।
8. पम्पासरोवर के तट पर मतङ्गवन में शबरी का आश्रम।

राज कैकेयी चाहती, अपने पुत्र हेत।
हठ किया जब उसने, दशरथ भया अचेत।। 7222

विदित भया जब राम को, पिता के आया पास।
रानी कही सब बात जब, राम प्रसन्न था खास।। 7223

प्रसन्न चित्त से राम ने, कही मात से बात।
चाहता मैं भी हूँ यही, कहो पिता से बात।। 7224

राज करेगा भरत ही, मुझे है वन में काम।
ऋषि मुनि पुकार रहे, प्रातः से ले शाम।। 7225

राक्षसों के आतंक से, हैं वे बहु परशान।
भरत को दे राज मैं, अभी करूँ प्रस्थान।। 7226

राम वनों को चल पड़े, ले सीता को साथ।
लक्ष्मण भी था संग चला, धनुष बाण ले हाथ।। 7227

निर्माण युग के थे हित, प्रकटे राम भगवान।
अयोध्या में क्यों ठहरते, उन का वन में स्थान।। 7228

आगे कहें वह वार्ता, जिमि राम भगवान।
आश्रमों के रक्षक, बने थे सभी स्थान।। 7229

जगह जगह वे करत थे, राक्षसों का संहार।
जहां कहीं वे देखते, ऋषियों पर प्रहार।। 7230

मार्ग में उन कई हते, दुष्ट राक्षस लो जान।
पञ्चवटी वे जा टिके, कर कुटिया निर्माण।। 7231

राक्षसी तब इक आ गई, शूर्पनखा अभिधान।
कीना जब परशान उस, लक्ष्मण काटे कान।। 7232

रोती चिल्लाती वह गई, भाइयों के थी पास।
राक्षस चौदह आ गये, पंचवटी के पास।। 7233

उन चौदह का था किया, हनन राम तत्काल।
प्रतिशोध हित आ गई, सैना इक उस काल।। 7234

जन स्थान में राज्य था, खर दूषण का मीत।
सेना वे ही लाय थे, प्रतिशोध हित चीत।। 7235

चौदह सहस्त्र सेन थी, खर दूषण अधीन।
पंचवटी को घेर लिया, जहां राम आसीन।। 7236

निरख विशाल सेन को, लक्ष्मण से कहा राम।
सीता को तुम लेय कर, गुफा में कर विश्राम।। 7237

निशाचरों को मैं देखूँ, कितना इन में साहस।
ऋषियन को संहारते, मम आये अब पास।। 7238

लक्ष्मण ने तब आज्ञा मानी, सीता सहित गया सन्मानी।
राम ने कवच लिया तब धार, धनुष ले वे भये तैयार।
धनुष की टंकार गुंजाई, चार दिश में गूंज जो पाई।
वेग से सेन बढ़ वह आई, राम दृष्टि चहुं ओर घुमाई।
युद्ध कला में प्रवीण थे राम, ध्यान से देखी सेन तमाम।
खर भी युद्ध कला में दक्ष, रथ निज लाया राम समक्ष।

सैनिक उस थे संग कुछ आये, सिंह नाद सभी कर पाये।
राम को घेर सब खड़ पाये, राक्षसी विद्या जिमि सिखाये।

दो०–खर धनुष से बाण बहु, राम पै दीन चलाय।
आहत कीना राम को, राम अडिग रह पाय।। 7239

सेना ने चहूँ ओर से, कीनी वर्षा बाण।
राक्षसों से तब राम का, युद्ध भयंकर जान।। 7240

कुपित होय कर राम ने, निज शरों से मीत।
बहुत निशाचर कर दिये, प्राण हीन लो चीत।। 7241

नाश सेना का देखकर, दण्डक वन के खेत।
भयंकर योधा आ डटे, राम समक्ष लो चेत।। 7242

शस्त्र छोड़े अनेक उन, राम पर उस काल।
काट दिये सब राम ने, योधा कीन बेहाल।। 7243

राम समझ जब ताब न लागी, आशा प्राणों की उन त्यागी।
युद्ध से भाग गये वे सारे, राम से वे थे सारे हारे।
दूषण मार्ग में मिल पाया, उस ने धैर्य उन्हें बन्धाया।
दूषण लेय धनुष निज हाथ, आया राम समक्ष सब साथ।
सब ने मिल कर धावा बोला, राम रहा उस काल अडोला।
रोमाञ्चकारी युद्ध वह जान, दूषण सेना व राम का मान।
गन्धर्व शस्त्र तब राम चलाया, सैनिक असंख्य घायल कर पाया।
लाशों से थी धरा भर पाई, राम समक्ष जब सेना आई।

दो०-मरती सेना देखकर, दूषण के मन क्रोध।
धावा बोला राम पर, लेन हित प्रतिशोध।। 7244

शक्ति उसने बहुत दिखाई, राम समक्ष वह चल न पाई।
क्षुरबाण तभी राम चलाया, धनुष दूषण का काट दिखाया।
चार बाण फिर राम चलाये, चारों घोड़े मार मुकाये।
बाण चलाया चन्द्राकार, सर सारथि का काटा डार।
एक बाण फिर और चलाया, दूषण की छाती में लग पाया।
निहत्था जब दूषण हो पाया, उसने अपना परिघ उठाया।
टूट पड़ा वह राम की ओर, दीखत न उसे ओर व छोर।
राम उसे जब आता पाया, तीखा उस पर बाण चलाया।

दो०-राम ने बाण चला कर, काटीं दो भुजाऊँ।
भूमि पर वह गिर पड़ा, मर कर उस ही ठाऊँ।। 7245

उसी काल तब नायक तीन, राक्षसी युद्ध में जो प्रवीन।
टूट पड़े वे राम की ओर, उन के नाम कहें इस ठोर।
'स्थूलाक्ष' था एक लो जान, 'प्रमाथी' दूजे का अभिधान।
तीजा 'महापाल' लो जान, जिस के हाथ में 'शूल' महान।
'स्थूलाक्ष' के थी 'पट्टिश' हाथ, 'फरसा' प्रमाथी के था हाथ।
तीनों को राम मार मुकाया, दूषण सेना का भया सफाया।
खर पास जब गई यह बात, दूषण का भी भया है पात।
सकल सेना का हुआ संहार, भया न ऐसा किसी भी बार।
युद्ध हैं हमने बहु कर पाये, इतने सैनिक न मर पाये।
कौन वह ऐसा मानव जाया, जिसने यह उत्पात मचाया।

सेनापति को उस बुलवाया, आदेश कठोर उसे दे पाया।
उस मानव को ले कर आओ, मरा या जीवित जैसे पाओ।
संग में सेना बहु ले जाना, धोखा न अब तुम भी खाना।
ऐसी आज्ञा दे वह पाया, अहंकार में था राक्षस आया।
श्री राम को न उस पहचाना, नर साधारण ही था जाना।

दो०–बुद्धि पर आवरण जब, अहंकार का मीत।
ईश्वर भी न दीखता, यह सृष्टि की रीत।। 7246

समझा न अहंकार वश, और पाया न कुछ ज्ञान।
उन ही के संहार हित, प्रकटे थे भगवान।। 7247

युग युग में प्रभु स्वयं ही, आयें ले अवतार।
राम बनें कभी कृष्ण वे, राम लाल तन धार।। 7248

भरा क्रोध में था खर, कीन आक्रमण आय।
महाप्राक्रमी सैनिक, थे संग उस लाय।। 7249

बारह सैनिक संग था लाया, 'श्येनगाम' नाम इक का आया।
दूजा 'पृथुग्रीव' लो जान, तीजा 'यज्ञशत्रु' पहचान।
चौथा 'विहङ्गम' सैनिक मीत, पंचम 'दुर्जय' लेवो चीत।
'करवीराक्ष' छटा साथी जान, 'कालकार्मुक' को सप्तम मान।
अष्टम 'पुरुष' वीर को जानो, भयंकर योधा उस को मानो।
नवम 'हेममाली' था भाई, दशम 'महामाली' सहायी।
ग्यारहवां 'सर्पास्य' उस साथ, भयंकर आयुध सब के हाथ।
'रुधिराशन' को बारहवां जान, भयंकर राक्षस सभी को मान।

दो०–सैनिक वे सभी टूट पड़े, श्री राम पै मित्त।
उन सभी को राम ने, शीघ्र कीना चित्त।। 7250

बचे खुचे जो राक्षस, उन का भी संहार।
राम ने तत्काल ही, दीने राक्षस मार।। 7251

उस सेना के दो ही, बचे राक्षस लो जान।
खर उन में से इक स्वयं, 'त्रिशिरा' दूजा मान।। 7252

राम से लड़ने था चला, खर स्वयं उस काल।
सेनापति तभी त्रिशिरा, आ पहुंचा तत्काल।। 7253

त्रिशिरा ने फिर खर को रोका, राम से युद्ध करने को टोका।
और कहा उस "हे महाराज, आप का सेवक करे यह काज।
आप समक्ष राम को लाऊँ, पूर्ण इच्छा मैं तव कर पाऊँ"।
एक रथ तब उस मंगवाया, उस पर बैठ रण भूमि सिधाया।
भिड़ पड़ा जा राम के साथ, भयंकर धनुष था उसके हाथ।
होत प्रतीत युद्ध वह ऐसे, सिंह संग गज लड़त हो जैसे।
बाण तीन उस राम पै मारे, लगे ललाट पै राम के सारे।
रोष राम को भी तब आया, उस का सीना बींध दिखाया।
उस के घोड़े मार गिराये, सारथि पर भी बाण चलाये।
ध्वजा भी उस की काट दिखाई, उस की दुर्दशा कर पायी।

दो०–लगा कूदन वह रथ से, रण प्रवीण था राम।
तभी शर बौछाड़ कर, उसे भेजा यम धाम।। 7254

त्रिशिरा का वध खर ने देख, हाव ताव न लेश उस पेख।

तुरन्त राम पर धावा बोल, नाराच चलाये कई अडोल।
अपना कौशल फिर दिखलाया, राम का धनुष काट वह पाया।
अनेकों बाण तब उस चलाये, जिन से राम घायल हो पाये।
राम की लीला जानो न्यारी, रण में नर लीला कर डारी।
राम, कृष्ण व राम हों लाल, जग को दें माया में डाल।
इक राक्षस से पीड़ित होना, जग की आंख में धूल है झोना।
राम की यही विशेष कहानी, रहें गुप्त नहीं दें निशानी।

दो०–राम सदा ही गुप्त रहें, जब भी लें अवतार।
राम कृष्ण राम लाल का, ऐसा सम आचार।। 7255

खर ने जो थे बाण चलाये, राम कवच पर सब लग पाये।
कवच राम का खण्डित होय, गिर पड़ा वह भूमि पर सोय।
खर के तभी अनेकों बाण, धंसे राम के तन वे आन।
देख शत्रु की शक्ति भारी, रोष किया तब राम खरारी।
धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई, ध्वजा शत्रु की काट दिखाई।
छः बाण तभी राम चलाये, लक्ष्य मस्तक का कर थे पाये।
तीन बाण छाती पै मारे, चार से घोड़े चारों मारे।
खर का धनुष खण्डित कीना, तोड़फोड़ उस का रथ दीना।

दो०–रथ हीन वह होय कर, नीचे खड़ हो पाये।
गदा हाथ में लीन उस, राम पै दी चलाय।। 7256

राम ने आकाश में, ही खण्डित कर दीन।
शस्त्र हीन था खर अब, वृक्ष इक उस ने लीन।। 7257

उस को भी उस राम पर, दे मारा उस काल।
वह भी खण्डित राम ने, कर दीना तत्काल।। 7258

उन्मत्त सा वह हो कर, धाया राम की ओर।
आता राम ने देख उसे, ढेर कीन उस ठोर।। 7259

लक्ष्मण सीता देख रहे, वह संग्राम महान।
उसी काल थे आ गये, मरा वे खर को जान।। 7260

राम सीता और लक्ष्मण, ने कीना प्रवेश।
अपने आश्रम में तब, भया था दूर क्लेश।। 7261

ऋषि मुनी तब आश्रम आये, राम लक्ष्मण ने शीश झुकाये।
दीनी राम को उन आशीष, और बोले वे सभी मुनीश।
"आज किया तुम ने है राम, आये थे जो करने काम।
होता धर्म का है जब नाश, धर्मियों को बंधाने आस।
पापियों का करते संहार, स्थापित करने धर्म आचार।
युग युग में इस विध जो आना, वेदों ने है इसे बखाना।
राक्षसों ने था हमें सताया, दण्डकारण्य अन्धेर मचाया।
जनस्थान था उन का वास, आप ने उस का किया विनास।
हो निडर अब यहां रह पायें, हो निशंक तप में लग जायें।
यज्ञों का करे नहीं को नाश, अब से भयी हमें पूर्ण आश"।
इतना कथ तब मुनि चल पाये, राम लक्ष्मण को तब कह पाये।

दो०– "राक्षसों का सम्राट इक, रावण है अभिधान।
राक्षस और भिजवाये, ऐसा मम अनुमान"।। 7262

जनस्थान जब शून्य हो पाया, लंका ओर इक सचिव सिधाया।
'अकम्पन' था उस सचिव का नाम, संदेश पहुंचाना था अब काम।
रावण पास जा वह कह पाया, "राजन सेना का भया सफाया।
खर दूषण भी मर हैं पाये, राम लक्ष्मण दो भाई हैं आये।
उन के साथ जब भई लड़ाई, जनस्थान की हुई सफाई"।
रावण जब संदेश यह पाया, वह भी चलने को उठ पाया।
बोला "मैं वे देखूं जाई, कौन दुष्ट वे हैं दो भाई।
जिन को मौत यहां ले आई, करने लंकेश संग लड़ाई"।

दो०–लंका पति से देव भी, डरते हैं मम मीत।
शिव को भी मैं सकत हूँ, रण क्षेत्र में जीत।। 7263

कहा अकंपन "हे महाराज, विचार बिना न जायें आज।
साधारण नहीं वे दो कुमार, अयोध्या के वे राज कुमार।
उन की शक्ति परम अपार, ऋषि मुनियों के वे रखवार।
राजनीति को आप पहचानें, शत्रु की शक्ति न लघु कर मानें।
उन को शक्तिहीन हो करना, उनकी स्त्री को पड़ेगा हरना।
स्त्री संग वे वन में आये, जिस की शोभा कथी न जाये।
आप यदि उस को हर लायें, अपनी भार्या उसे बनायें।
राम लक्ष्मण को सकोगे जीत, इस काल में यही राजनीत"।
रावण ने कहा "ठीक है भाई, प्रथम मैं देखूं उन को जाई"।
अपना उस विमान मंगाया, चलने का निश्चय कर पाया।
सर्वत्र रावण का था राज, उसे कठिन था न यह काज।
छल बल से सीता हर पाया, लंका ओर तुरंत सिधाया।
राम लक्ष्मण कुटिया में आये, सीता को वहां देख न पाये।

दो०–सीता को नँ देख कर, भये बहुत हैरान।
कहां सीता अब होयगी, वे हुए परेशान।। 7264

इधर उधर वे देखन लागे, वन वन में वे ढूंढन लागे।
जो भी मार्ग में दिख पायें, उन से प्रश्न यही कर पायें।
"क्या तुमने कहीं सीता देखी, यदि देखी तो कब थी पेखी"।
प्रत्येक जन जो मिल पाये, उत्तर "न" में ही दे पाये।
घूम घूम वे भये हैरान, रहा न अपना ठौर ठिकान।
सब देश जब घूम वे पाये, अन्त किष्किन्धा नगरी आये।
वानर जाति का वहां राज, सुग्रीव वहां का था महाराज।
हनुमान था सचिव सयाना, उसने राम को कुछ पहचाना।
सुग्रीव व राम मित्र बन पाये, उन अपने अपने भेद बताये।

दो०–हनुमान जो सचिव था, उस ने सब कथ दीन।
वह समस्या राम ने, शीघ्र हल कर दीन।। 7265

सुग्रीव ने भी राम को, पूर्ण दीन आश्वास।
राम को भी तभी भया, सुग्रीव पर विश्वास।। 7266

सुग्रीव ने बतला दिया, जहां सीता का वास।
रावण जो सम्राट है, सीता उस के पास।। 7267

"पास रावण के पहुंचना, उस से करनी बात।
संभव कैसे हो सके, यही सोच मम तात।। 7268

रावण है महान सम्राट, देवों से भी अधिक है ठाट।
रावण विश्व विजयी कहलाया, आतंक उस का जग में छाया।

उसकी समृद्धि का नहीं पार, कुबेर भी उस दर मांगन हार।
उस के पास कौन जा पाये, और मांग सीता को लाये।
हे राम अब तुम्हीं बताओ, कोई उपाय मुझे सुलझाओ"।
इसी सोच बहु काल बिताया, वर्षा काल तभी चलि आया।
वर्षा ऋतु थी सोच में बीती, समझ आई न को भी रीति।
लक्ष्मण सुग्रीव पास आ पाया, राम का संदेश सुनाया।
"राजन्, काल शरद् है आया, क्या सूझा है कोई उपाया।
शीघ्र सीता को जिमि लायें, सुरक्षित अयोध्या ले कर जायें"।

दो०–राम का संदेश सुन, भया सुग्रीव सुचेत।
मन्त्रिन को बुलाय कर, कथी बात अभिप्रेत।। 7269

नीतिवान मन्त्री उस पास, हनुमान था उन्हीं में खास।
एक ही मत सभी दे पाये, राजदूत भिजवाया जाये।
ले संदेश यही वह जाये, सीता को जिमि वह लौटाये।
राम को भी मत यह भाया, अंगद दूत लंका भिजवाया।
रावण के दरबार में आया, सुग्रीव का संदेश सुनाया।
रावण कीना न कुछ मान, लौटा अंगद हो परशान।
मत सभी तब यही दे पाये, लंका पर आक्रमण हो जाये।
लक्ष्मण को भी मत यह भाया, हनुमान को भी यही सुहाया।
राज्य सभा सुग्रीव बुलाई, मन्त्रिन को दे आज्ञा पाई।
वानर जाति के जितने राज्य, और जो ऋक्ष जाति के राज्य।
अन्य व जातियों के जो राज, मम संदेश पहुंचाओ आज।
"अपनी सेना पूरी लायें, यहां एकत्र सभी हो पायें"।

दो०–असंख्य सैनिक आ जुटे, किष्किन्धा के पास।
नायक उन के साथ थे, वीर धुरन्धर खास।। 7270

सब सैनिक प्रतीख में, कब मिले आदेश।
भुजायें उन की फड़कती, आज उत्साह विशेष।। 7271

सेना राम को जब दिखाई, राम ने दृष्टि उधर लगाई।
बिन शस्त्रों के सेना सारी, युद्ध की कैसी यह तयारी।
सुग्रीव इक जवान बुलाया, शैल श्रृंग उखाड़ जो लाया।
अन्य जब इक और बुलाया, विशाल वृक्ष उखाड़ वह लाया।
शस्त्र सभी के परम कमाल, राम संतुष्ट भया तत्काल।
सुग्रीव कहा राम के ताहीं, प्रवेश करेंगे लंका माहीं।
सैना ने जब आज्ञा पाई, सिंह ध्वनि तब सबन लगाई।
राम को सुग्रीव बतलाया, मार्ग लंका का जतलाया।

दो०–लंका का मग सुगम नहीं, मग में सागर नाथ।
कृपा करेंगे आप यदि, सुगम भयेगा पाथ।। 7272

मन्त्रिन ने तब आज्ञा पाई, "कूच करें" आवाज़ लगाई।
विशाल सैना का सागर जोय, उस का जोश न सके कथ कोय।
समुद्र का तोफान जिमि होय, सेना बढ़ी उस विध ही सोय।
जो भी आई मग में बाध, पार करी सब ने निर्बाध।
समुद्र था मग में जब आया, राम कृपा से पार हो पाया।
लंका में जा छावनी डाली, वहां की भूमि देखी भाली।
सेना के जो नायक महान, उन के नाम लेवें हम जान।

[1]कुछ के नाम इस विध हैं आये, महामेघ हर नील सुहाये।
जाम्बवान और अञ्जन भाई, धूम्र रम्भ संनादन आई।
उशीर बीज प्रमाथी जानो, गवाक्ष केसरी क्रंथन मानो।
शतबलि गवय द्विविद सुबाहु, पनस हनुमान नल वीर बहु।
ये सब अपनी सेना साथ, कोई न शस्त्र किसी के हाथ।

दो०–रामचन्द्र और लक्ष्मण, सशस्त्र खड़े उन साथ।
स्वर्णिम धनुष व बाण थे, उन दोनों के हाथ।। 7273

लंका का सम्राट जो, रावण उस का नाम।
सशस्त्र सेना साथ उस, इधर निशस्त्र तमाम।। 7274

राम प्रभु इन साथ थे, जिन लीना अवतार।
राक्षसों के संहार हित, अधर्मी जो अपार।। 7275

युग युग में अवतार लें, जब हो धर्म की हान।
राम बनें कभी कृष्ण वे, रामलाल भगवान।। 7276

वानर सेना आज्ञा पाई, लंका पर उन कीन चढ़ाई।
लंका घेरी चारों पास, राक्षस गये रावण के पास।
रावण को संदेश सुनाया, रावण आज्ञा तब दे पाया।

---

1. सुग्रीव के सेना पतियों के कुछ नाम:–
   1. हर 2. नील 3. महामेघ 4. अञ्जन
   5. जाम्बवान 6. धूम्र 7. रम्भ 8. सनादन
   9. क्रंथन 10. उशीरबीज 11. प्रमाथी 12. गवाक्ष
   13. केसरी 14. शतबलि 15. गवय 16. नल
   17. द्विविध 18. वीरबाहु 19. सुबाहु 20 पनस
   21. हनुमान

नगर से बाहर चल जाओ, वानरों को तुम सबक सिखाओ।
इक भी वानर बच न पाये, लौट कर जो यहां से जाये।
साहस कभी न को कर पाया, लंका में जो इस विध आया।
सेना नगर से बाहिर जाये, शत्रु का नाम निशान मिटाये।

दो०–रावण की पाय आज्ञा, सेना निकली बाहर।
वानरों को मारन लगी, कर शस्त्रों का प्रहार।। 7277

वानर भी फैंकन लगे, जो भी उन के पास।
पत्थर वृक्ष आदि सब, शस्त्र न उन के पास।। 7278

निहत्थे जन इक ओर थे, सशस्त्र दूजी ओर।
राम प्रभु जिस ओर हों, विजय भये उस ठोर।। 7279

प्रभु कृपा जब होत है, निर्बल होय बलवान।
श्येन से चिड़िया लड़ सके, समझें भक्त सुजान।। 7280

संग्राम एक यह घोर था, दोनों सैना बीच।
वानरों में बल राम का, भरा उत्साह समीच।। 7281

इसी बीच तब छिड़ गया, द्वन्द्व युद्ध लो जान।
राक्षस इन्द्रजित से, अंगद का लो मान।। 7282

ग्यारह द्वन्द्व और भी, होन लगे उस काल।
क्रमशः उन का श्रवण करें, संक्षेप से सब हाल।। 7283

'प्रजंध' राक्षस भिड़ गया, वीर 'सम्पाति' साथ।
'हनुमान' का द्वन्द्व भया, 'जम्बुमाली' के साथ।। 7284

महाबली 'गज' वानर, लड़ा 'तप्पन' के साथ।
महातेजस्वी 'नील' तो, भिड़ा 'निकुम्भ' के साथ।। 7285

'प्रघस' से 'सुग्रीव' का, भया घोर द्वन्द्व।
'विरूपाक्ष' संग 'लक्ष्मण', लागे करन द्वन्द्व।। 7286

श्री 'राम चन्द्र' के साथ, जूझे राक्षस चार।
'वज्रमुष्टि' ने 'मैंद' से, आ कीना तकरार।। 7287

राक्षस चार वे कौन थे, लड़े राम से आन।
'अग्नि केतु' 'रश्मिकेतु' व, 'सप्तघन''यज्ञकोप' लो मान।। 7288

'अशनिप्रभ' लड़ने लगा, 'द्विविद' वीर के साथ।
राक्षस प्रसिद्ध 'प्रतपन', भिड़ा 'नल' के साथ।। 7289

महाकपि 'सुषेण' वहां, सुत धर्म का जान।
'विद्युन्माली' से युद्ध, लो ग्यारहवां मान।। 7290

द्वन्द्व युद्ध जो थे भये, लंका में उस काल।
उन का वर्णन कर रहे, राक्षसों का संहार।। 7291

हनुमान द्वारा धूम्राक्ष का वध

रावण था आदेश दे पाया, धूम्राक्ष रण मध्य पठाया।
धूम्राक्ष जब रण में आया, सिंह नाद से गगन गुंजाया।
वानर करन लाग प्रहार, धूम्राक्ष पर चले नहीं वार।
राक्षस बाण वर्षा कर पाया, सेना में अंधेर मचाया।
भाग गये जब वानर सारे, हनुमान उसे आ ललकारे।

हनुमान की सुन कर ललकार, उस मन उमड़ा क्रोध अपार।
हनुमान समक्ष गदा ले आया, हनुमान पर प्रहार कर पाया।
हनुमान ने महा शिला उठाई, उस के ऊपर वही चलाई।

दो०–चूर चूर अंग थे भये, उस शिला की मार।
प्राण परखेरु उड़ गये, निशाचर के उस काल।। 7292

अंगद द्वारा वज्रदंष्ट्र वध

धूम्राक्ष का श्रवण वध, रावण चित्त क्रोध।
वज्रदंष्ट्र बुलाय कर, भेजा हित प्रतिशोध।। 7293

क्रोध आये न काम कुछ, विपक्ष में भगवान।
राम लीन अवतार है, न रावण को था ज्ञान।। 7294

वही राम फिर प्रकटे, कृष्ण रूप इक काल।
पापी जन जब बहु भये, आये बन रामलाल।। 7295

वज्रदंष्ट्र ने आय कर, छोड़े बाण अनेक।
वानर सेना आहत भयी, ली अंगद की टेक।। 7296

वानरों को जब भागते देखा, अंगद ने वज्रदंष्ट्र पेखा।
दोनों में तब भयी लड़ाई, दोनों महावीर थे भाई।
अंगद ने इक लीन चट्टान, वज्रदंष्ट्र पर मारी आन।
मूर्छित भया राक्षस उस काल, रुधिर बहा और भया बेहाल।
जब होश में राक्षस आया, मुक्कों से वह युद्ध कर पाया।
मुक्कं मुक्का भई लड़ाई, लड़ते लड़ते थक गये भाई।

मुखों से रक्त भी बहने लागा, लड़ने का न विचार त्यागा।
लंबा अर्सा भयी लड़ाई, हार किसी की न हो पाई।

दो०–अंगद आया क्रोध में, ली निकाल तलवार।
काटा उस का मस्तक, उस तलवार की धार।। 7297

हनुमान द्वारा अकम्पन का वध

वज्र दंष्ट्र का सुन निधन, रावण कीन विचार।
कौन जाये संग्राम में, करने को प्रतिकार।। 7298

सेनापति प्रहस्त था, रावण के ही पास।
उसे आज्ञा तत्काल दी, अकम्पन पर विश्वास।। 7299

वही जाये अब सेन ले, करन शत्रु का नाश।
उससे को न बच सकत, चाहे छिपे आकाश।। 7300

अकम्पन युद्ध भूमि में आया, पराक्रम देख चकित हो पाया।
विशाल रथ में था आसीन, वर्षा बाणों की आ कीन।
असंख्य वानर आहत हो पाये, हनुमान निरख क्रोध में आये।
लपक अकम्पन पास वह आया, पर्वत समान थी उसकी काया।
अकम्पन ने बहु बाण बरसाये, हनुमान के तन जो घुस पाये।
हनुमान ने इक वृक्ष उखारा, अकम्पन के सर पर दे मारा।
अकम्पन न सका सह वह वार, तन से बही खून की धार।
गिरा भूमि पर वह निष्प्राण, रावण का महारथी महान।

दो०–चोट वृक्ष की खाय कर, गिरा अकम्पन धरत।
मृत्यु का भया ग्रास वह, राम कृपा यह करत।। 7301

कहां निहत्थे वानर, कहां रावण सम्राट।
महारथी उस के मरे, करिश्मा इक विराट।। 7302

राम कृपा से यह भया, लीना जग ने जान।
भेड़ भेड़िये को खा गई, इक आश्चर्य महान।। 7303

राम वही फिर आयेंगे, रामलाल के रूप।
जग को आ दरशायेंगे, किरपा दिव्य अनूप।। 7304

नील द्वारा सेनापति प्रहस्त का वध

अकम्पन वध का जब मिला, रावण को समाचार।
विस्मय मन उस बहु भया, हुई किमि यह हार।। 7305

सेनापति को तुरत बुलाया, प्रहस्त उसी काल चलि आया।
सेनापति को दीन आदेश, शक्ति शत्रु की जान विशेष।
सेना ले कर एक महान, करिये विजय हेतु प्रस्थान।
विशाल सेना प्रहस्त जुटाई, लंका से वह बाहिर लाई।
उस संग जो सचिव थे आये, वध वानरों का कर वे पाये।
नील देखा जब यह उत्पात, आ डटा वह वहां साक्षात।
बाण वर्षा प्रहस्त कर पाया, घायल नील उन से हो पाया।
नील ने एक पेड़ उखाड़ा, प्रहस्त ऊपर वही दे मारा।

दो०–पेड़ का आघात पाय, भया प्रहस्त क्रुद्ध।
बाण वर्षा करने लगा, भया भयंकर युद्ध।। 7306

'नील' पर्वत शिखर इक लाया, 'प्रहस्त' ऊपर उस वही चलाया।
'प्रहस्त' सहन न वह कर पाया, उसी चोट से मर वह पाया।

राम द्वारा कुम्भकर्ण का वध

प्रहस्त की मृत्यु जब सुन पाई, रावण की थी होश उड़ पाई।
सेना पति का जो संहार, राष्ट्र पर वह घोर प्रहार।
किंकर्तव्य विमूढ़ वह होय, कुम्भकर्ण पास पहुंचा सोय।
देश पर जोय विपत्ति आई, कुम्भकर्ण को खोल सुनाई।
और कहा अब रण में जाओ, शत्रु को परास्त कर पाओ।
विशालकाय वह रण में आया, वानरों को भयभीत कर पाया।
उसका सामना करने हेत, वानर नायक आये रण खेत।
'ऋषभ''शरभ' व 'मैन्द''हनुमान', आये 'धूम्र' 'नील' भी जान।
'कुमुद''सुषेण''रम्भ' और 'तार', 'द्विविध' 'पनस' में क्रोध अपार।
वीर पुरुष वे सभी महान, झपटे कुम्भकर्ण पै आन।

दो०–कुंभकर्ण पै फैंक दी, वृक्ष शिलायें अनेक।
कुंभकर्ण के देह पर, लगी न उनमें एक।। 7307

देख विवशता राम ने, नायकों की उस काल।
कुंभकर्ण की ओर तब, बढ़े दीन दयाल।। 7308

राम ने रौद्रास्त्र तब लीन, बाण संधान उस पर कर दीन।
अनेक तीखे बाण चलाये, कुंभकर्ण को विदीर्ण कर पाये।
धूमिल चेतनता हो पाई, गदा उस के कर से गिर पाई।
खून से लथपथ था वह सारा, पर्वत शिखर तब इक उखारा।
उस को राम पै दीना मार, बाण से राम ने काट वह डार।
वायव्यास्त्र फिर राम चलाया, बाईं भुजा को काट दिखाया।
उखाड़ वृक्ष इक भुजा से लाया, राम प्रति वह बढ़ कर आया।

राम ने ऐन्द्रास्त्र तब लीन, दूसरी भुजा भी खण्डित कीन।
बिन भुजाओं दौड़ कर आया, आक्रमण करने को था धाया।

दो०–बाण लिया तब राम ने, अर्ध – चन्द्राकार।
उस के दोनों पैर तब, राम ने काटे डार।। 7309

दोनों पैर व भुजायें, काटीं उस की मीत।
गर्जना करता वह बढ़ा, राम ओर लो चीत।। 7310

मुँह भयंकर था खुला, काटूँ जा कर राम।
तीरों से वह भर दिया, कीना काम तमाम।। 7311

पास आते निरख उसे, राम चलाये तीर।
गर्दन सारी कट गयी, मुर्दा भया शरीर।। 7312

रावण के संबन्धी जन, दुखी भये तमाम।
कुंभकर्ण के निधन पर, समझे "न मानव राम"।। 7313

"शक्ति एक लोकोत्तर, लंका कीन प्रवेश।
हर लाये जो सीत को, यह अपराध विशेष"।। 7314

भेद न अपना देत हैं, प्रकटें जब भगवान।
त्रेता में वे राम बने, द्वापर कृष्ण लो जान।। 7315

रामलाल कलिकाल में, लाये शक्ति योग।
पाप ताप को हरन हित, समर्थ केवल योग।। 7316

अंगद द्वारा नरान्तक का वध

कुंभकर्ण का जब सुना, मरा राम के हाथ।
रावण की तत्काल ही, टूट गई सब आस।। 7317

नरान्तक भया तब घुड़सवार, रणक्षेत्र में गया तत्काल।
सात सौ सैनिक तभी संहारे, वानर भय से भागे सारे।
सुग्रीव भागती सेना पाई, आज्ञा अंगद को दे पाई।
"चिरञ्जीव तुम शीघ्र जाओ, उस राक्षस का अंत कर पाओ"।
अंगद तो था वीर महान, परन्तु निःशस्त्र लेवो जान।
रण में तत्काल वह आया, शत्रु को ललकार वह पाया।
नरान्तक ने भाला दे मारा, खाली गया प्रहार वह भारा।
अंगद ने तब भुजा उठाई, घोड़े को चपेट लगाई।
घोड़े का सर उस से फूटा, जानो दम ही उसका टूटा।
नरान्तक अति क्रोध में आया, उसने मुक्का तान चलाया।
अंगद का सर इस से फूटा, इस से उस का दम भी टूटा।
मूर्छित होकर वह गिर पाया, बाद देर कुछ होश में आया।
मुक्का दृढ़ तान वह पाया, शत्रु ऊपर उसे जमाया।

दो०–मुक्के की उस मार से, उड़ गई सब होश।
नरान्तक भू पर गिर गया, मूर्छा में बेहोश।। 7318

हनुमान द्वारा देवान्तक और त्रिशिरा का वध

भाई का जब वध सुन पाया, क्रुध देवान्तक रण में आया।
हनुमान पै उस कीना वार, परिध से था कीन प्रहार।

हनुमान ने इक मुक्का मारा, मुक्के ने सर फोड़ था डारा।
मुख से खून बहु बहने लागा, उसी क्षण उस प्राण त्यागा।
देवान्तक का वध देख जब पाया, त्रिशिरा का क्रोध न तन समाया।
धनुष बाण तत्काल वह लाया, हनुमान ऊपर तीर चलाया।
बहुत तीर इस विध उस मारे, हनुमान के तन चुभे जो सारे।
हनुमान को क्रोध बहु आया, पर्वत शिखिर इक उस उठाया।

दो०–पर्वत शिखर को फैंका, त्रिशिरा की उस ओर।
त्रिशिरा ने निज बाण से, फोड़ा शिखर कठोर।। 7319

पर्वत शिखर को देख कर, खण्डित भया विशेष।
हनुमान लगाई झड़ी, वृक्षों की निःशेष।। 7320

वृक्ष भी सभी काट दिखाये, त्रिशिरा ने तत्काल।
क्रुद्ध भया हनुमान तब, उछला वह उस काल।। 7321

जा चढ़ा रथ अश्व पर, फोड़ा उस का माथ।
त्रिशिरा ने तब क्रोध कर, लीनी शक्ति हाथ।। 7322

जब चलाई शक्ति वह, हनुमान की ओर।
हनुमान ने तब पकड़ कर, थी दीनी वह तोड़।। 7323

त्रिशिरा ने तलवार से, घायल कीन हनुमान।
घायल हो हनुमान ने, तमाचा मारा तान।। 7324

थप्पड़ की उस मार से, त्रिशिरा भया अचेत।
तलवार भी थी गिर पड़ी, युद्ध के उस खेत।। 7325

सचेत भया जब त्रिशिरा, उठा वह तत्काल।
हनुमान ने तलवार से, काटा उस का भाल।। 7326

लक्ष्मण द्वारा अतिकाय का वध

अतिकाय ने देख कर, राक्षसों का संहार।
क्रोध उस के चित्त भया, लीना मन उस धार।। 7327

रणक्षेत्र में जाय कर, वानर हनूँ अनेक।
मेरा सामना जो करे, वहां पर वीर न एक।। 7328

रथ विशाल अतिकाय ले आया, वानरों में आतंक बहु छाया।
कुमुद, द्विविद, मैन्द और नील, शरभ आदि प्रधान जो वीर।
शैलश्रृंग ले वृक्ष विशाल, उस पर झपटे सभी इक काल।
अतिकाय जब तीर चलाये, वे सभी वहां ठहर न पाये।
अतिकाय तभी रथ घुमाया, जो मिला उसे मार मुकाया।
लक्ष्मण के जब सन्मुख आया, और लक्ष्मण पर बाण चलाया।
अर्धचन्द्र तब लक्ष्मण मारा, उस का तीर काट ही डारा।
पांच बाण उस क्रुद्ध हो मारे, वे भी लक्ष्मण काट ही डारे।

दो०–लक्ष्मण ने तब बाण इक, भयंकर छोड़ा खास।
उस के लगा ललाट में, रुका तब उस का श्वास।। 7329

सात बाण अतिकाय चलाये, लक्ष्मण ने वे काट दिखाये।
विफल भये थे सारे बाण, अतिकाय लीना तीक्ष्ण बाण।
ज़ोर लगा कर उसे चलाया, लक्ष्मण के सीने चुभ पाया।
कुपित भया तब लक्ष्मण भारी, बाण वर्षा उस भी कर डारी।

पर वे सभी विफल हो पाये, फिर अतिकाय जो बाण चलाये।
उन से लक्ष्मण आहत हो पाया, दो घड़ी बाद होश में आया।
होश लक्ष्मण को जब आई, बाण वर्षा उस भी कर पायी।

दो०–शत्रु की ध्वज काट दी, रथ भी तोड़ा साथ।
निशाचर भू पर गिर पड़ा, बिंधी थी उस की गाथ।। 7330

लक्ष्मण द्वारा इन्द्रजित का वध

राक्षसी संहार निरख, रावण मन था क्रोध।
भेजा निज कुमार उस, लेवे जा प्रतिशोध।। 7331

महातेजस्वी वीर वह, इन्द्रजित अभिधान।
विश्वविजेता जानिये, अपने पिता समान।। 7332

रथ ऊपर आरूढ़ हो, प्रमुख वीर ले साथ।
बाहर आया नगर से, शस्त्र सब के हाथ।। 7333

उस के देख स्वरूप को, वानर भये भयभीत।
लगा संहारन सबन को, इधर उधर सब रीत।। 7334

रोका लक्ष्मण ने उसे, उस चलाया बाण।
आहत लक्ष्मण को किया, छिड़ा द्वन्द्व महान।। 7335

लक्ष्मण भी क्रोध में आया, तीखा उसने बाण चलाया।
उस के धनुष को काट दिखाया, उस का तन भी क्षत कर पाया।
गहरी चोट राक्षस को आयी, छाती घायल थी हो पायी।
देख कर लक्ष्मण की चतुराई, बाणों की उस झड़ी लगाई।

लक्ष्मण ने भी बाण चलाये, उस के बाण सब काट दिखाये।
फिर इक ऐसा बाण चलाया, सारथी का जिस शीश उड़ाया।
और इन्द्रजित के मुख का रूप, किया उस बाणों से कुरुप।
इन्द्रजित था वीर महान, था लक्ष्मण रघुकुल की शान।
विश्वविख्यात युद्ध यह एक, सैनिक निरख रहे प्रत्येक।

दो० – भयंकर इक द्वन्द्व यह, ऐतिहासिक लो जान।
इन्द्र और वृत्र के, था यह युद्ध समान।। 7336

पराक्रमी दो वीर थे, परस्पर करें प्रहार।
दोनों की ही तनों से, बहे लहू की धार।। 7337

जीत न किसी की हो रही, शस्त्र चले बहु खास।
जग इसे था देखता, रोके अपना श्वास।। 7338

बहु लंबा जब युद्ध भया, लक्ष्मण कीन विचार।
अब विलंब न मैं करूँ, करूँ इस का संहार।। 7339

लक्ष्मण लीना अस्त्र वह, ऐन्द्रास्त्र अभिधान।
शत्रु जिस बहु हने, अस्त्र दिव्य महान।। 7340

[1]स्मर्ण किया उस राम को, इन शब्दों के साथ।
"राम सत्य प्रतिज्ञ यदि, हनूँ इसे इस साथ"।। 7341

---

1. धर्मात्मा सत्यसंधश्च रामो दाशरथि यदि।
पौरुषे चा प्रतिद्वन्द्व स्तदैनं जहि रावणिम्।। (बाल्मीकीय रामायण युद्ध काण्ड 90.69)
अर्थः यदि दशरथ नन्दन भगवान श्री राम धर्मात्मा और सत्यप्रतिज्ञ हैं तथा पुरुषों में उनकी समानता करने वाला दूसरा कोई वीर नहीं है तो हे अस्त्र! तुम इस रावण पुत्र का वध कर डालो।

"प्रतिज्ञा राम की है यही, राक्षस पापी जोय।
हनन करूँ मैं सबन का, इस देश में जोय"।। 73 42

[1]इन शब्दों के साथ जब, छोड़ा उस ने बाण।
देह राक्षस की बिन्धी, निकली उस की जान।। 73 43

श्री राम और रावण का घोर युद्ध और रावण का वध

सब योधा जब मर थे पाये, भाई बन्धु भी काम में आये।
इन्द्रजित का अंत हो पाया, कुंभकर्ण भी काम में आया।
कुंभकर्ण का प्राण जब छूटा, रावण का जिमि बाजू टूटा।
इन्द्रजित का निधन यह जानो, कटी रावण की टांग पहचानो।
रावण की थी परम लाचारी, हताश हो रण की कीन तय्यारी।
स्वयं राम के सन्मुख आया, उस से द्वन्द्व युद्ध कर पाया।
राम रावण का द्वन्द्व लो जान, विश्व का इक करिश्मा मान।
अपने में थी एक मिसाल, जग ने देखा यह कमाल।

दो०–राम रावण का युद्ध वह, चलत रहा दिन रात।
लहू लुहान थे हो रहे, दोनों के ही गात।। 73 44

क्रूरता पूर्वक युद्ध था, राम रावण का एक।
दृश्य भयंकर जानिये, जन चकित हर एक।। 73 45

---

1. तच्छिरः सशिरस्त्राणं श्री मज्जवलित कुण्डलम्।
प्रमथ्येन्द्रजितः कायात् पातयामास भूतले ।। (बाल्मीकीय रामायण युद्ध काण्ड नवतितमसर्गः श्लोक 7)
अर्थः धनुष से छूटते ही ऐन्द्रास्त्र ने जगमगाते हुए कुण्डलों से युक्त इन्द्रजित के शिरस्त्राण सहित दीप्तिमान मस्तक को धड़ से काटकर धरती पर गिरा दिया।

वानर राम को देखते, राक्षस रावण ओर।
वीर शिरोमणि दोनों, भिड़ रहे उस ठोर।। 73 46

राम ने इक तीर चलाया, रावण का ध्वज काट दिखाया।
ध्वजा कटी जब रावण पायी, क्रोध की ज्वाला मन उपजायी।
बाण वर्षा की बाढ़ लगाई, राम भी धारा प्रवाह चलाई।
भयंकर था वह बाण बवंडर, कीना उस ने थल वह खण्डर।
अति तीखे राम बाण चलाये, रावण के रथ पर लग पाये।
घोड़े पीछे को मुड़ पाये, रावण के मन न रोष समाये।
तीखे बाण बहु राम पै मारे, राम ने काट सभी थे डारे।
राम ने रथ पै झड़ी लगाई, बाण वर्षा वह रुक न पाई।

दो०–बाण वर्षा से रावण, भया बहुत अधीर।
गदा मूसल उस फैंके, त्याग बाण के तीर।। 73 47

पीड़ित कीना राम को, रावण ने उस काल।
विशेष बाण तब राम ने, निकाल लिया तत्काल।। 73 48

राम रावण के युद्ध को, जो देखें उस काल।
उनके मुख से निकलती, बात एक तत्काल।। 73 49

[1]समुद्र समुद्र समान है, आकाश आकाश समान।
राम रावण का युद्ध यह, रावण राम समान।। 73 50

---

1. गगनं गगनाकारं, सागरः सागरोपमः।
रामरावणयोर्युद्धं राम रावणयोरिव।।

बाल्मीकीय रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 107, श्लोक 51–52

अगस्त्य ऋषि था दीना बाण, कांपता ऋषि से सकल जहान।
उस का बाण तेजस्वी जानो, कई राक्षस संहारे मानो।
कुपित होय वह बाण चलाया, राम के कर से निकल जब पाया।

दो०–रावण के वह देह में, घुस गया तत्काल।
समा गया तब रावण, महा काल के गाल।। 7351

असुर संहारे राम ने, रावण भी उन साथ।
राम प्रकटे इस हेत ही, ऋषियन करन सनाथ।। 7352

त्रेता में थे प्रकटे, रामचन्द्र के नाम।
कीनी रक्षा धर्म की, रावण काम तमाम।। 7353

द्वापर में प्रभु आये, कृष्ण चन्द्र अभिधान।
अधर्मी उन संहारे, दिया गीता का ज्ञान।। 7354

कलि में वे फिर आये, रामलाल के रूप।
पाप ताप जग के हरे, प्रचारा योग अनूप।। 7355

त्रेतायुग जिस को कहें, निर्माण युग वह जान।
भारत का निर्माण जो, इस युग में लो मान।। 7356

भगीरथ ने यहां गंगा लाई, शस्य श्यामला भू हो पाई।
भारत भूमि सम हो पाई, अयोध्या नगरी भी बन पाई।
अयोध्या जैसे नगर अनेक, सुन्दर जो थे एक से एक।
भारत में थे बहु बन पाये, सुशोभित देश को कर पाये।
राक्षसों का था भया सफाया, ऋषि जनों का आशिष पाया।
था घर घर वेदों का प्रचार, यज्ञों का सर्वत्र संचार।

कई शास्त्रों का हुआ निर्माण, वर्णाश्रम का भया विधान।
आर्य धर्म तब भया प्रधान, समाय राक्षस भी इस में आन।
भारत आर्यवर्त कहलाया, जगती में प्रसिद्ध हो पाया।

दो०–भारत का निर्माण जो, हुआ त्रेता काल।
द्वापर में फिर देखना, हो जाएगा क्या हाल।। 7357

त्रेतायुग का वर्णन, भया संपूर्ण आज।
संवत बी सौ इकासठ, वीरवार है आज।। 7358

[1] है मार्गशीर्ष अठारह, प्रभु की दया महान।
लिपिक से लिखवा रहे, यह इतिहास लो जान।। 7359

*****

1. 18 मार्गशीर्ष, वृहस्पतिवार सम्वत् विक्रमी 2061 तदानुसार 2 दिसंबर सन ई० 2004 ।

ॐ

श्री योग महादिव्य रामायण

(हिन्दू धर्म का इतिहास)

(सतयुग – त्रेता – द्वापर – कलियुग)

अध्याय तीसरा – "द्वापर युग" में हिन्दू धर्म

दो० – प्रभु कृपा से लिख रहा, 'सेवक' युग 'विनाश'।
चल रही है लेखनी, हो कर परम हताश।। 7360

1. चन्द्रवंश

'द्वापर' युग का करें बखान, 'विनाश युग' जिस का अभिधान।
अत्रि था राजर्षि महान, सतयुग में जिस का भया बरवान।
उस की संतति जो हो पाई, द्वापर में उस की थी प्रभुताई।
अत्रि का पुत्र चन्द्र सुजान, वह था एक सम्राट महान।
[1]उस के नाम से चला यह वंश, वही कहलाया चन्द्र वंश।

---

1. राजर्षि अत्रि के पुत्र चन्द्र का वंश

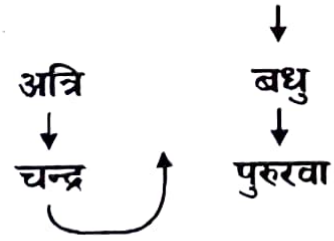

चन्द्र की रानी तारा जानो, सुत उस का था 'बधु' पहचानो।
बधु की पत्नी इला लो जान, 'पुरुरवा' उस की संतति मान।
पुरुरवा के वंश का अब बखान, परंपरागत यह वंश महान।
चन्द्र वंश में कुछ ऐसे वीर, भारत की बदली जिन तकदीर।

दो०–चन्द्र वंश महान है, इतिहास में प्रसिद्ध
ऐसे भी सम्राट यहां, भये जो योगी सिद्ध।। 7361

इसी वंश में कृष्ण का, भया था अवतार।
जिस का वर्णन हम करें, यथा क्रमानुसार।। 7362

[1]पुरुरवा की पत्नी उर्वशी जान, छः पुत्र उस के गर्भ से मान।
आयु, श्रुतायु, सत्यायु तीन, रय, विजय, जय और लो चीन।
श्रुतायु का पुत्र था वसुमान, सत्यायु का श्रुतञ्जय जान।
रय के पुत्र का नाम एक, और जय का पुत्र अमित था एक।
विजय का पुत्र भीम लो जान, भीम से चला इक कुल महान।

---

1. चन्द्र वंश के पुत्र पुरुरवा का वंश

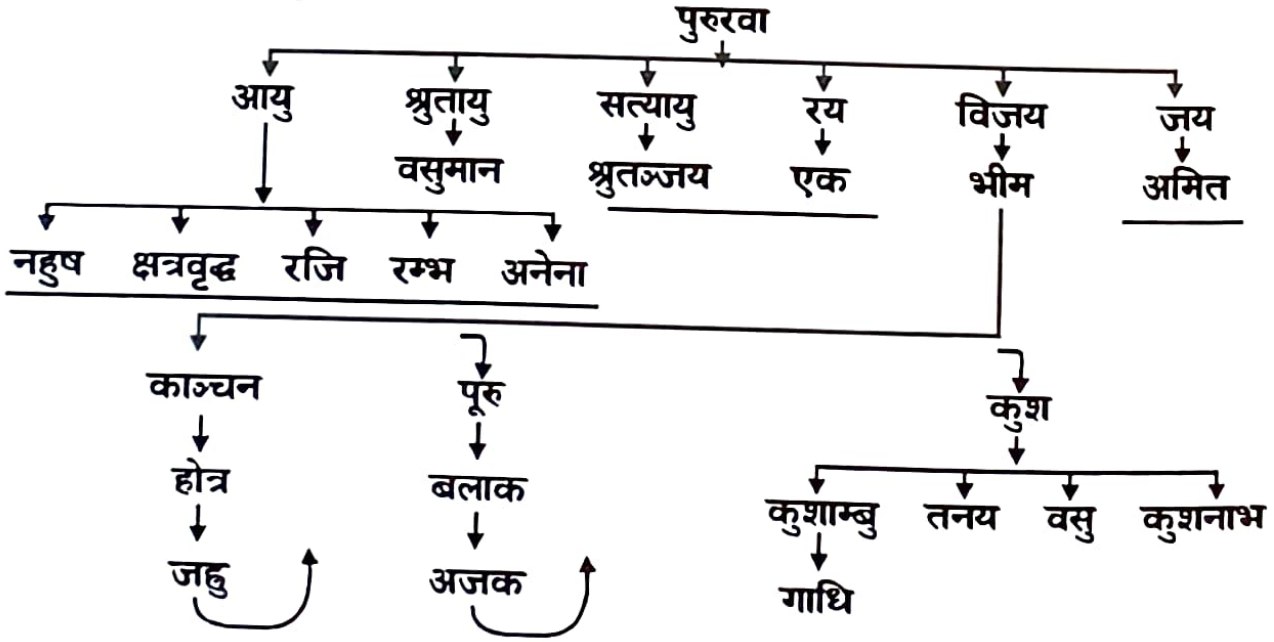

भीम के सुत का काञ्चन नाम, काञ्चन से था होत्र ललाम।
होत्र का था जह्नु जाया, जह्नु ने पूरु सुत था पाया।
पूरु का पुत्र जो हो पाया, बलाक उस का नाम धराया।
बलाक का पुत्र अजक लो जान, था अजक का पुत्र कुश महान।

दो०–कुश के पुत्र चार थे, सुन लो उन के नाम।
कुशाम्बु वा कुशनाभ थे, वसु व तनु अभिराम।। 73 63

कुशाम्बु का पुत्र एक था, [1]गाधि उस का नाम।
परशु राम का जानिये, वह नाना अभिराम।। 73 64

[2]आयु पुत्रों के वंश का, करेंगे अब बखान।
क्षत्रवृद्ध के वंश में, शासक भये महान।। 73 65

---

1. गाधि की कन्या सत्यवती थी जिसके गर्भ से जमदग्नि का जन्म हुआ। जमदग्नि ने रेणु ऋषि की कन्या रेणुका से विवाह किया जिस के पुत्र परशुराम हुए।

2. पुरुरवा के पुत्र आयु के पुत्रों की वंश परंपराः–

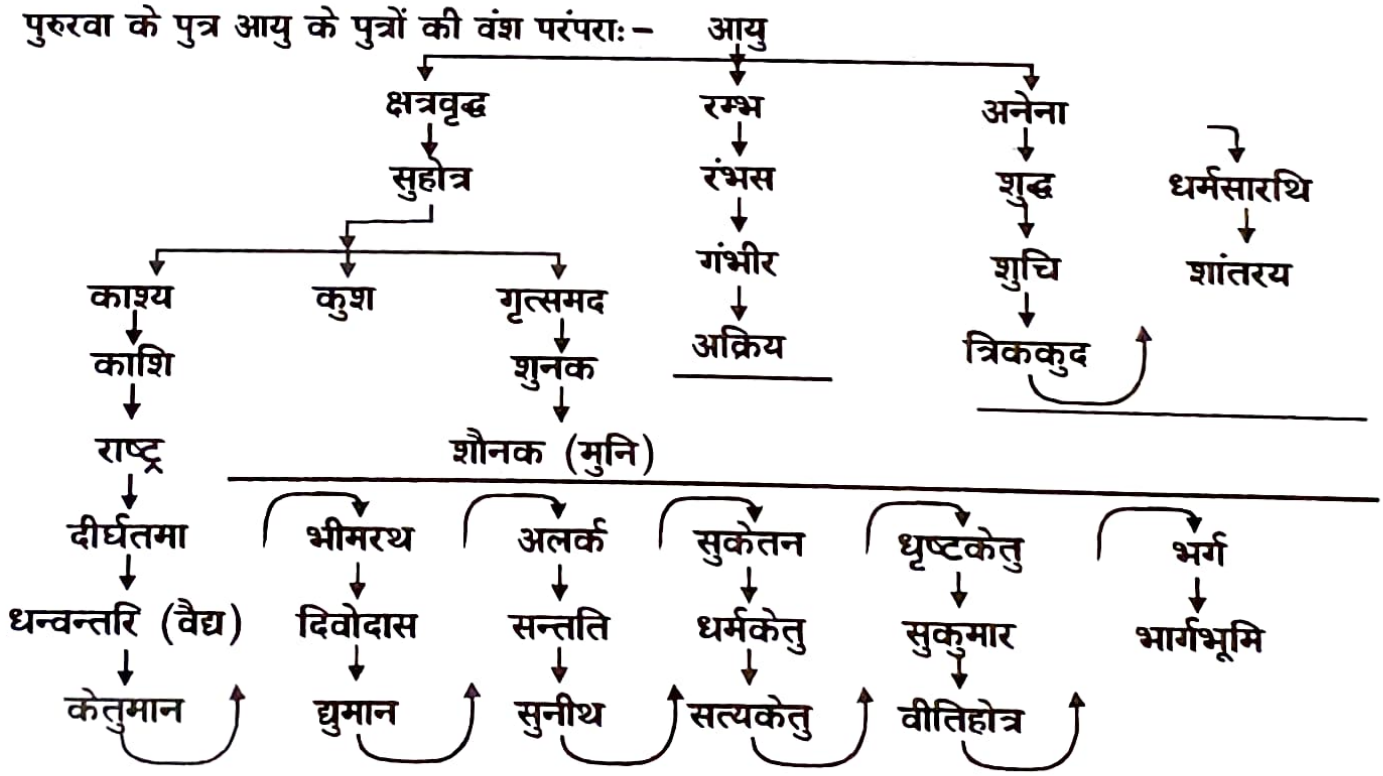

2. क्षत्र वृद्ध का वंश

सुहोत्र क्षत्रवृद्ध का, वह था पुत्र सुजान।
उसके पुत्र तीन भये, काश्य कुश लो जान।। 7366

तीसरा पुत्र जो भया, गृत्समद था नाम।
वह नरपति महान था, जग में उस का नाम।। 7367

गृत्समद का पुत्र जाया, शुनक उस का नाम धराया।
शुनक का पुत्र शौनक जानो, महान प्रसिद्ध ऋषि पहचानो।
सुहोत्र का पुत्र काश्य महान, काश्य का पुत्र था काशि जान।
काशि के वंश का बहु विस्तार, कथें संक्षेप से उस का सार।
काशि से राष्ट्र जाया जानो, राष्ट्र से दीर्घतमा ही मानो।
दीर्घतमा से धन्वन्तरी जाया, जो प्रसिद्ध वैद्य हो पाया।
केतुमान धन्वन्तरी का सुत, भीमरथ केतुमान का पुत।

---

1. पुरुरवा के पुत्र आयु के चौथे पुत्र नहुष की दीर्घ वंशावली: –

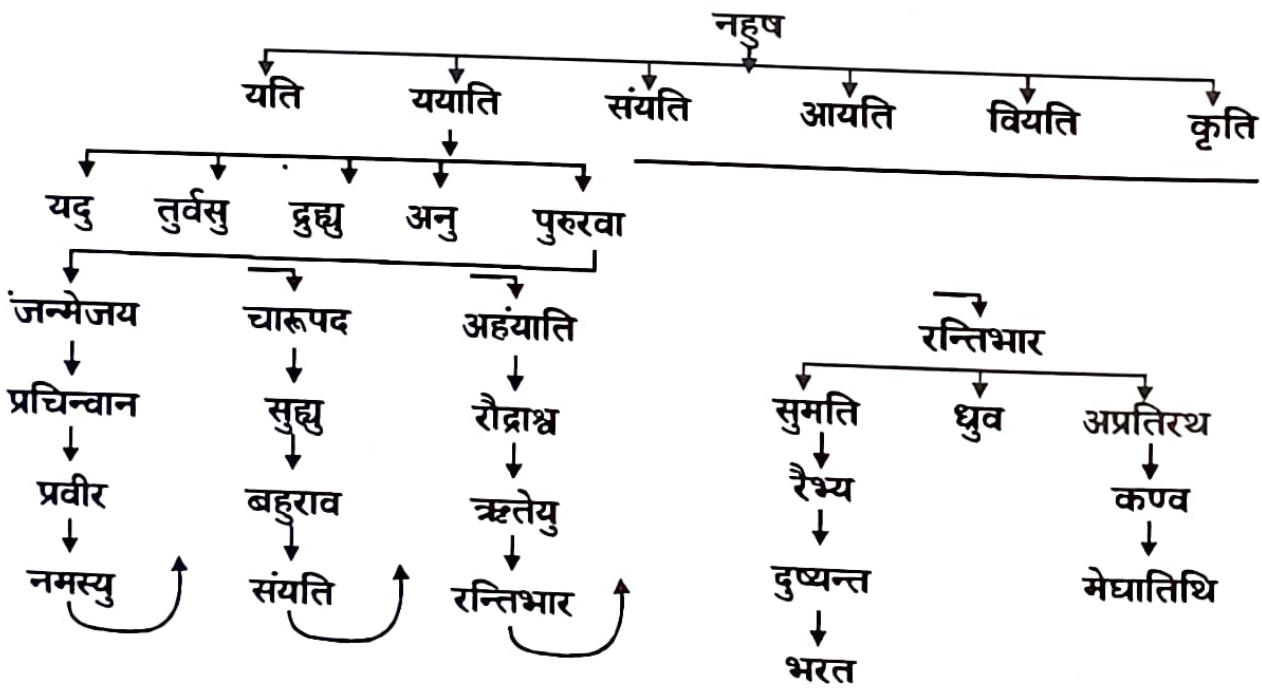

भीमरथ से दिवोदास लो जान, दिवोदास से द्युमान पहचान।
द्युमान था अति प्रसिद्ध नरेश, उस के और भी नाम विशेष।
शत्रुजित, वत्स दो नाम लो जान, ऋतध्वज, कुवलाश्व पहचान।
द्युमान से सुत अलर्क उपजाया, दीर्घकाल वह राज कर पाया।

दो०–दीर्घकाल तक अलर्क रहा, शास्त्र करें बखान।
अलर्क की संतान जो, सन्तति था अभिधान।। 7368

संतति का पुत्र सुनीथ महान, सुनीथ से सुकेतन लो जान।
सुकेतन का पुत्र धर्म था केतु, धर्मकेतु से था सत्यकेतु।
सत्यकेतु से जो पुत्र जाया, धृष्टकेतु था नाम धराया।
धृष्टकेतु का सुकुमार सुत, सुकुमार का वीतिहोत्र पुत।
वीतिहोत्र से भर्ग पहचान, भर्ग से भार्गभूमि लो जान।
यह सभी 'काशि' की संतान, जग में प्रसिद्ध जो भई महान।

रंभ का वंश

रंभ की अब कहें संतान, रंभ का पुत्र रंभस जान।
रंभस का गंभीर था सुत, गंभीर का अक्रिय था पुत।

अनेना का वंश

दो०–रंभ का इक भाई था, अनेना उस को जान।
अनेना के ही वंश का, आगे करें बखान।। 7369

अनेना का सुत शुद्ध उपजाया, शुद्ध से शुचि वंश में आया।
शुचि की त्रिककुद थी संतान, त्रिककुद की धर्मसारथि मान।
शांतरय धर्म सारथि हां जाया, शांतरय केवल धर्म कमाया।
संतति उस की न हो पाई, वंश परंपरा यहीं रुक पाई।

3. नहुष का वंश

आयु का पुत्र नहुष लो जान, उसे महान सम्राट पहचान।
उस का वंश चला जो मीत, द्वापर अंत तक उस की रीत।
महारथी इस वंश में जाये, सिद्ध योगी भी बहु हो पाये।
बहु ऐतिहासिक हस्तियां जान, इसी वंश में उपजी मान।
यथा स्थान उन का हो बखान, आर्य जाति के तारे मान।

दो०–आर्य जाति में नहुष का, उज्ज्वल कथा स्थान।
जिस के वंश में ऊपजे, नामी पुरुष महान।। 7370

नहुष के पुत्र छः मान, यति व ययाति दोय।
संयति उन में तीसरा, आयति चौथा होय।। 7371

दो पुत्र जो और थे, उन के नाम लो जान।
वियति पंचम पुत्र थे, कृति को छटा मान।। 7372

ययाति का अब होय बखान, उसी से वंश चला लो मान।
नहुष जब था स्वर्ग सिधारा, शासन तब ययाति संभारा।
यति स्वीकार न राज्य को कीन, ययाति ही हुआ राज्यासीन।
भाई चार जो थे बच पाये, चार दिशाओं के नृप बनाये।
ययाति के वंश का करें बखान, दीर्घ वंश वह लेवो जान।
ययाति के पुत्र पांच पहचान, यदु, द्रुह्यु वा अनु पहचान।
चौथा तुर्वसु पुत्र लो जान, पंचम पुरुरवा सम्राट महान।
पुरुरवा की विस्तृत संतान, क्रमशः उस का करें बखान।

दो०–प्रभु कृपा से ही भया, द्वापर में विस्तार।
आर्य राज्य थे बहु बने, प्रभु भी लीन अवतार।। 7373

प्रभु तो राखन हार हैं, आर्य जाति के मीत।
वैदिक धर्म प्रिय उन्हें, भारत से भी प्रीत।। 7374

युग युग में अवतार लें, समय के अनुसार।
राम बने कभी कृष्ण वे, रामलाल तन धार।। 7375

4. पुरुरवा का वंश

पुरुरवा का पुत्र जन्मेजय जान, जन्मेजय पुत्र प्रचिन्वान।
प्रचिन्वान से प्रवीर उपजाया, प्रवीर से नमस्यु था हो पाया।
नमस्यु का चारूपद था सुत, चारूपद का भया सुद्यु पुत।
सुद्यु से बहुराव लो जान, बहुराव से संयाति मान।
संयाति से अहंयाति मानो, अहंयाति से रौद्राश्व जानो।
[1]रौद्राश्व के दस पूत लो जान, ऋतेयु से चला वंश लो मान।
ऋतेयु का सुत था रन्तिमान, उस के तीन पुत्र लो जान।
अप्रतिरथ था उन्हीं में एक, दूसरे ध्रुव को प्रभु की टेक।
उसकी तो संतान न कोय, सुमति था तीसरा पुत्र होय।
अप्रतिरथ का था कण्व सुत, कण्व का मेधातिथि था सुत।
अब सुमति की संतान लो जान, रौभ्य उस का पुत्र मान।

---

1. रौद्राश्व के दस पुत्र :–
   1. ऋतेयु 2. कुक्षेयु 3. स्थण्डिलेयु 4. कृतेयु
   5. जलेयु 6. सन्तेयु 7. धर्मेयु 8. सत्येयु
   9. व्रतेयु 10. वनेयु

रौभ्य से दुष्यन्त उपजाया, दुष्यन्त से भरत हो पाया।
दुष्यन्त का अब वंश बतायें, आर्यकुल की लीक चलवायें।

दो०–आर्यवंश की क्या कहें, जग में उस का मान।
प्रभु कृपा से यहां भये, बहु योधा धीमान।। 7376

दुष्यन्त और उस के पुत्र आर्य कुलभूषण

सम्राट भरत का वंश

[1]भरत भया दुष्यन्त से, भारत का सम्राट।
दिग्विजयी यह था भया, यशस्वी राज विराट।। 7377

[2]आर्य द्रोही जातियां, उन का जो महाराज।
हनन किये सब भरत ने, छीने उनके राज।। 7378

भरत का पुत्र था जो जाया, भरद्वाज वह था कहलाया।
वितथ भी था उस का अभिधान, वितथ का पुत्र मन्यु जान।
मन्यु पुत्र पांच थे जाये, बृहत्क्षत्र जय दो कहलाये।
महावीर्य और नर लो जान, पांचवा [3]गर्ग लो पहचान।
नर का पुत्र जो हो पाया, उसका संस्कृति नाम धराया।

---

1. भरत की माता शकुन्तला थी।
2. आर्य द्रोही जातियां : किरात, हूण, यवन, अन्ध, कङ्क, खश, शक, मलेच्छ।
3. दुष्यन्त का वंश

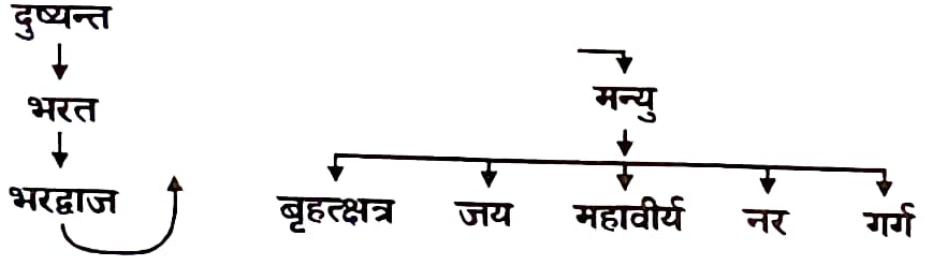

आगे देखें . . .

संस्कृति के हुए दो थे पूत, गुरु और [1]रन्तिदेव सुपूत।
रन्तिदेव महादानी जान, दान वीर वह प्रसिद्ध जहान।
गर्ग का पुत्र शिनि हो पाया, शिनि से [2]गार्ग्य था उपजाया।

दो०–दुरितक्षय के सुत तीन थे, कवि त्रय्यारुणि दोय।
पुष्करारुणि तीसरा, ब्राह्मण तीनों होय।। 7379

5. भरत के वंशज मन्यु पुत्र बृहत्क्षत्र का वंश

बृहत्क्षत्र से हस्ती जाया, जिस ने हस्तिनापुर बसाया।
हस्ती के हुए तीन थे सुत, एक भया अजमीढ़ था पुत।
द्विमीढ़ दूजा पुत्र लो जान, तीसरा पुरूमीढ़ पहचान।
अजमीढ़ का वंश वृस्तृत जान, महापुरुष भये उसमें मान।
बृहदिषु था अजमीढ़ का सुत, बृहद्धनु भया बृहदिषु का पुत।
बृहत्काय उस का पुत्र जान, उस का फिर जयद्रथ पहचान।
जयद्रथ का पुत्र विशद था मीत, विशद का सेनजित लो चीत।
चार सुत सेनजित के जाये, वत्स व काश्य दृढ़हनु कहाये।

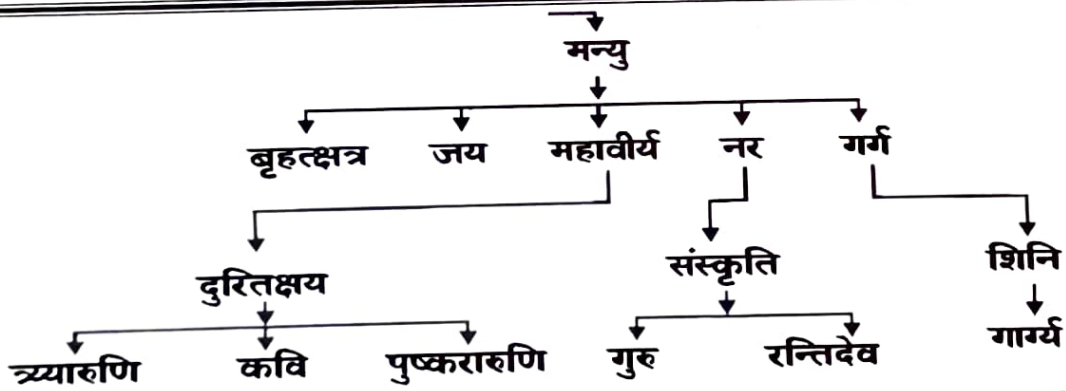

नोट: आज हिन्दुओं को विचार करना चाहिए कि हम किस भरत की संतान हैं और नशों में अब मदहोश हो रहे हैं।

1. रन्तिदेव का यश सर्वत्र प्रसिद्ध है। वह परम दानी था। (देखो श्रीमद्भागवत पुराण 9.21 19.21)
2. गार्ग्य – इसी गार्ग्य से इसी नाम का ब्राह्मण वंश चला।

चौथा सुत जो उस का जाया, रुचिराश्व उस का नाम धराया।

दो०– रुचिराश्व का जो वंश था, उस का करें बखान।
रुचिराश्व का सुत पार था, पार के दो सुत जान।। 73 80

उनके नाम यहां कहें, नीप और पृथुसेन।
नीप से ब्रह्मदत्त भया, उससे विश्वक्सेन।। 73 81

ब्रह्मदत्त था योगी महान, उस का पुत्र भी योगी जान।
[1]विष्वक्सेन उस का अभिधान, योग शास्त्र का रचयिता मान।
उदकस्वन विष्वक्सेन का पुत, और उस का था भल्लाद पुत।
[2]बृहदिषु के वंश का कीन बखान, अब नील के कुल का करें बयान।
नील के पुत्र का शांति था नाम, शान्ति के पुत्र का सुशांति नाम।
सुशांति का पुत्र पुरुज लो जान, और पुरुज का अर्क पहचान।

---

1. विष्वकसेन द्वारा रचित योगशास्त्र अब उपलब्ध नहीं है।
2. अजमीढ़ की दो पत्नियां थीं। एक का पुत्र बृहदिशु हुआ और दूसरी नलिनी का पुत्र नील था। जिस के कुल का वर्णन आगे है।

भरत के वंशज मन्यु पुत्र बृहत्क्षत्र का वंश :

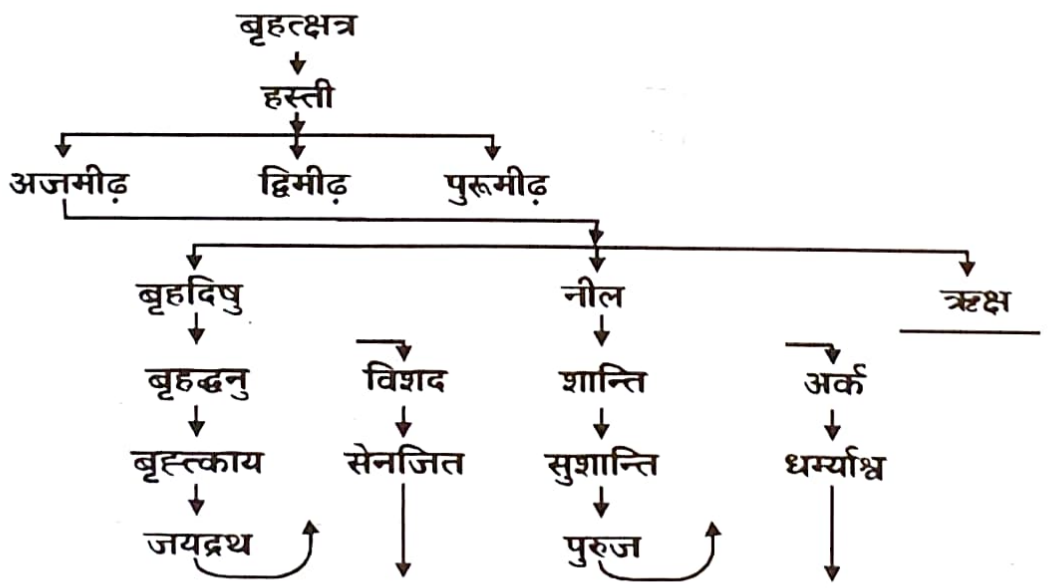

आगे देखें . . .

धर्म्याश्व भया अर्क का सुत, धम्यार्श्व के भये पांच थे पुत।
पांच पुत्रों के नाम बतायें, उन के आगे वंश चलायें।

दो०– पांच पुत्रों के नाम जो, मुद्गल पहला जान।
[1]मुद्गल से जो वंश चला, उपजे वीर महान।। 7382

यवीनर और काम्पिल्य, दो पुत्र ये जान।
बृहदिषु और सुञ्जय, इस विध पांचों मान।। 7383

पांचों पुत्र वीर बहु, पांच देशों में राज।
'पञ्चाल' इन को जन कहें, शांति इन के राज।। 7384

मुद्गल की भयी यमज संतान, एक पुत्र और पुत्री जान।
दिवोदास पुत्र का था नाम, पुत्री का था अहिल्या नाम।
गौतम की पत्नी अहिल्या जान, शतानन्द सुत उन से मान।
शतानन्द का सत्यधृति था सुत, सत्यधृति का शरद्वान पुत।
शरद्वान की संतति जान, कृपाचार्य व कृपी लो मान।

1. मुद्गल से मौद्गल्य ब्राह्मण गौत्र चला।

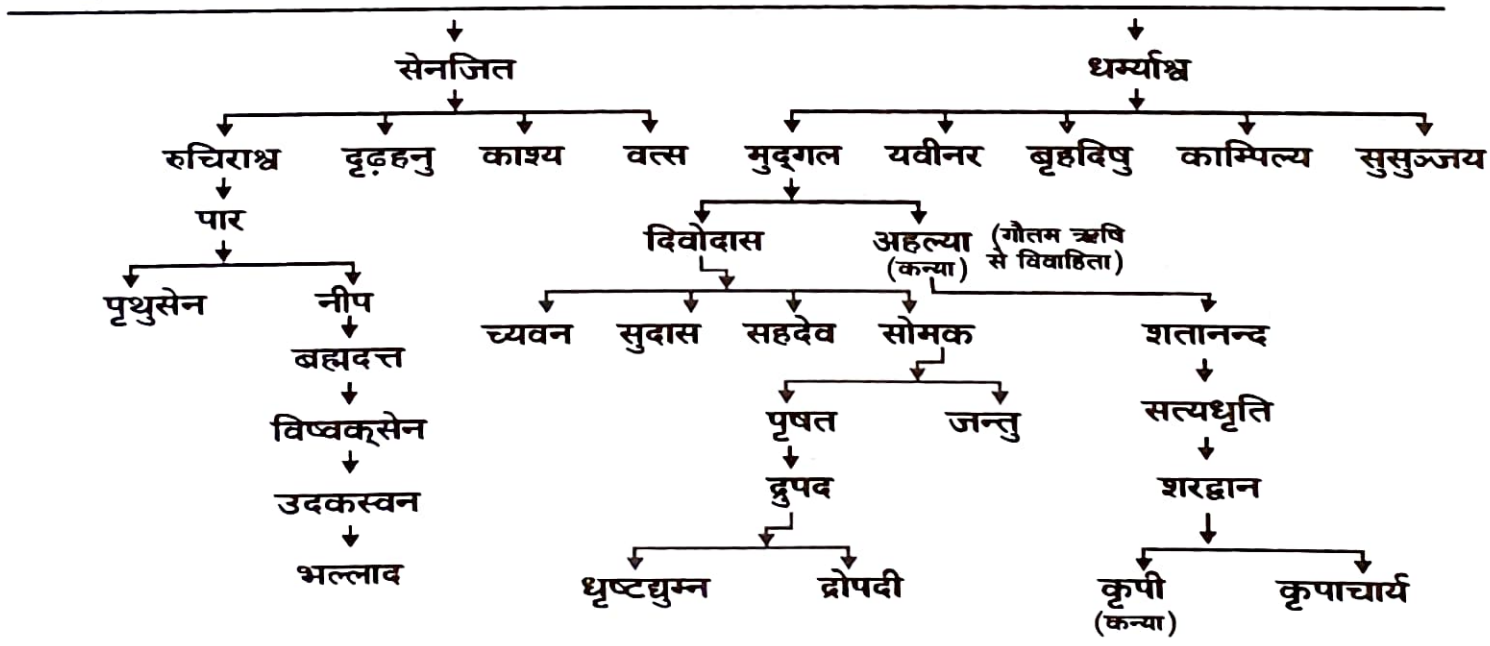

6. भरत वंशज कुरु का वंश (कौरव)

अजमीढ़ का पुत्र ऋक्ष लो जान, उस का सुत संवरण पहचान।
संवरण की थी कुरु संतान, कुरु से चला कुरुवंश लो मान।
कुरु के चार पुत्र पहचान, परीक्षित सुधन्वा दो लो मान।
जह्नु और निषधाश्व आये, विश्व विजेता ये कहलाये।
सुधन्वा का अब वंश चलायें, जिसमें महारथी हम पायें।
सुधन्वा से सुहोत्र उपजाया, सुहोत्र से च्यवन हो पाया।
च्यवन का सुत कृती लो जान, कृति का उपरिचरवसु पहचान।
उपरिचरवसु का बृहद्रथ सुत, बृहद्रथ के दो जाये फिर पुत।
बृहद्रथ को सम्राट लो चीन, कई देश बृहद्रथ अधीन।
'कुशाम्ब''मतस्य' देश उस अधीन, 'प्रत्यग्र' और 'चेदिप' चीन।

भरत वंशज कुरु का वंश (कौरव)

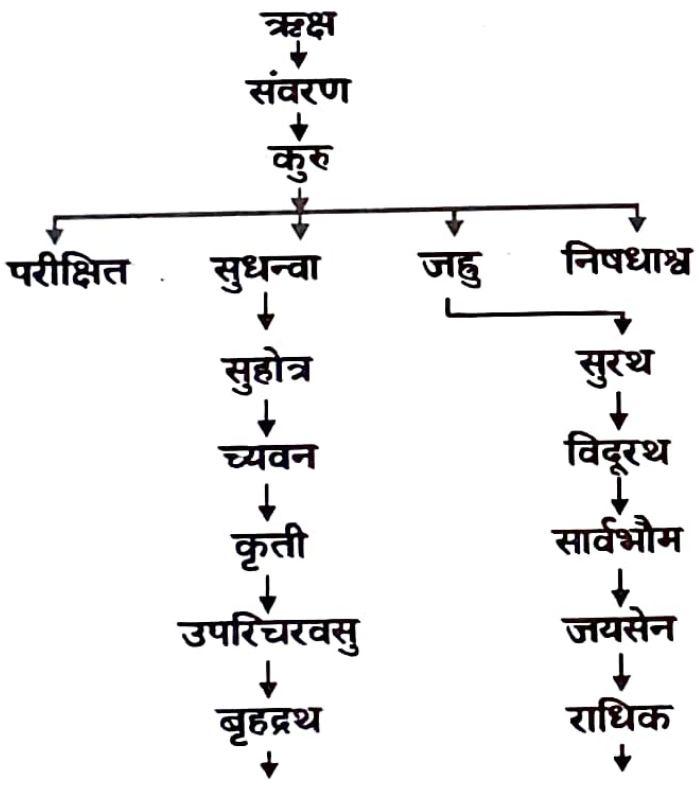

आगे देखें . . .

बृहद्रथ के दो सुत थे जाये, कुशाग्र, जरासन्ध हो पाये।
कुशाग्र से ऋषभ हो पाया, ऋषभ से सत्यहित उपजाया।
पुष्पवान सत्यहित का पुत, जह्नु था पुष्पवान का सुत।

दो०–बृहद्रथ का पुत्र था, [1]जरासन्ध अभिधान।
उस का वंश चलत रहा, कलियुग तक लो जान।। 7385

अब जो वंश हूँ कथ रहा, उस ने कीन विनाश।
समूल जाति का जानिये, लेखनी मम हताश।। 7386

1. जरासन्ध के जन्म की विचित्र कथा है। जरासन्ध के जन्म से एक शरीर के दो टुकड़े थे। उन्हें माता ने बाहर फैंकवा दिया। तब "जरा" नाम की राक्षसी ने उन दोनों टुकड़ों को जोड़ दिया। उसका नाम हुआ जरासन्ध। . . . आगे देखें . . .

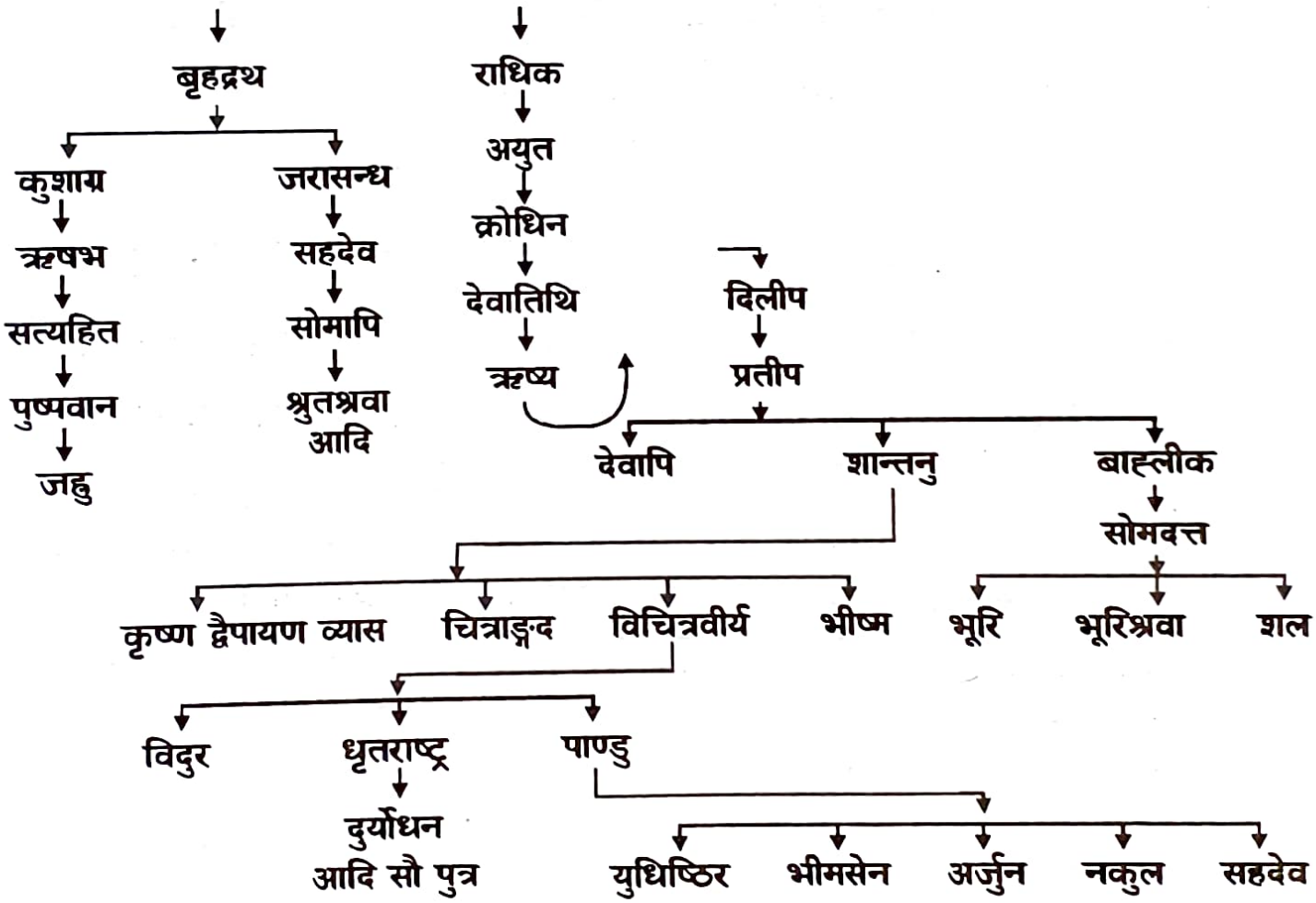

कुरु से जह्नु उपजा मानो, जह्नु से सुरथ हुआ था जानो।
विदूरथ सुरथ से उपजाया, सार्व भौम विदूरथ से हि जाया।
उस का जयसेन पुत्र जानो, जय सेन से राधिक पहचानो।
राधिक से अयुत था हो पाया, अयुत से क्रोधन जग में आया।
क्रोधन का देवातिथि था पूत, देवातिथि का भया ऋष्य सुपूत।
दिलीप का जन्म ऋष्य से मान, दिलीप से प्रतीप पहचान।
प्रतीप से तीन सुत उपजाये, देवापि शान्तनु दो कहलाये।
तीजे को बाह्लीक लो जान, कुरुवंश के स्तंभ पहचान।

दो०–कुरु वंश के स्तंभ सब, इन से भया विस्तार।
देर तलक न टिक सका, वंश का विस्तार।। 7387

अपने घर को राख किया, घर के ही चिराग।
मिटा सका न काल भी, वह पाप का दाग़।। 7388

प्रतीप के पश्चात फिर, था शान्तनु महाराज।
देवापि पुत्र ज्येष्ठ था, न लीना उस ने राज।। 7389

[1]शान्तनु के चार पुत्र मान, विचित्र वह इतिहास पहचान।
भीष्म और व्यास को जानो, चित्राङ्गद तीजा हि पहचानो।

जरासंध मगध देश का नरेश था। वह कंस का ससुर था। इसने महाभारत के युद्ध में न कौरवों का और न ही पांडवों का पक्ष लिया। इस प्रकार आर्य कुलों का जब युद्ध में समूल नाश हो गया था तो जरासन्ध का ही वंश बचा रहा और कलियुग में भी राज्यासीन रहा।

---

1. महाराज शान्तनु के परिवार का रोचक इतिहास : शान्तनु के द्वारा 'गंगा' के गर्भ से नैष्ठिक ब्रह्मचारी 'भीष्म' का जन्म हुआ। शान्तनु दाशराज की कन्या सत्यवती के गर्भ से दो पुत्र हुए 'चित्राङ्गद' और 'विचित्र वीर्य'। चित्राङ्गद को एक गन्धर्व ने मार डाला। इसी दाशराज की कन्या सत्यवती से पराशर जी के द्वारा "कृष्ण द्वैपायन व्यास" जी का जन्म हुआ। उन्होंने वेदों की रक्षा की।

आगे देखें . . .

चौथा विचित्र वीर्य है मीत, इन चारों की कर लो प्रतीत।
'विचित्र वीर्य' की संतति जोय, धृतराष्ट्र पाण्डु विदुर थे सोय।
धृतराष्ट्र के सौ (100) जानो पूत, दुर्योधन सब से बड़ा सुपूत।
पांडु की थी पांच संतान, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन जान।
नकुल और सहदेव भी दोय, पांचों का नाम 'पाण्डव' होय।
दुर्योधन आदि 'कौरव' जान, वैरी पाण्डवों के पहचान।

दो०–वैर का परिणाम सब, वर्णित आगे मीत।
विनाश युग(द्वापर)को देखना, जिस की थी यह रीत।। 7390

विनाश युग में नाश का, अधर्म कारण मीत।
उस के अभ्युत्थान हित, प्रकटे कृष्ण लो चीत।। 7391

7. चन्द्रवंशीय कुरुवंश में पांडवों की कुल परंपरा

पाण्डु के पुत्र पांच थे, युधिष्ठिर अर्जुन भीम।
नकुल और सहदेव भी, यह परिवार असीम।। 7392

शान्तनु के दूसरे पुत्र 'विचित्र वीर्य ' ने काशिराज की कन्या 'अम्बिका' और 'अम्बालिका' से विवाह किया। विचित्र वीर्य राजयक्ष्मा रोग से मृत्यु को प्राप्त हुआ। माता सत्यवती के कहने से व्यास ने अपने संतान हीन भाई की स्त्रियों से 'धृतराष्ट्र' और 'पाण्डु' दो पुत्र उत्पन्न किये। उनकी दासी से तीसरे पुत्र विदुर हुए। धृतराष्ट्र की पत्नी गन्धारी थी। धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे।

. . . देखें श्री मद्भगवत गीता ४.७

चन्द्रवंशीय कुरुवंश में पाण्डवों की कुल परंपरा

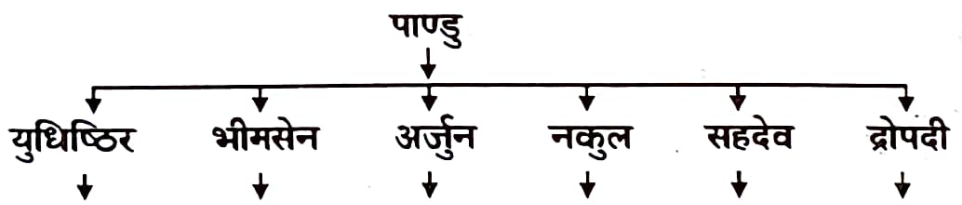

आगे देखें . . .

पुत्र वधु भी द्रौपदी, ललना वीर सुजान।
दुख सहे थे सबन ने, यह इच्छा भगवान।। 7393

देवक युधिष्ठिर से था जाया, भीम से घटोत्कच उपजाया।
सर्वगत भी था भीम का सुत, दोनों थे वीर शिरोमणि पुत।
पौरबी देवक जननी जानो, घटोत्कच की हिडिम्बा मानो।
सर्वगत की काली माता मान, सहदेव की पत्नी विजया जान।
सहदेव का सुहोत्र भया था पुत, विजया माँ से भया वह सुत।
नकुल की पत्नी करेणुमती जान, उसका पुत्र नरमित्र पहचान।

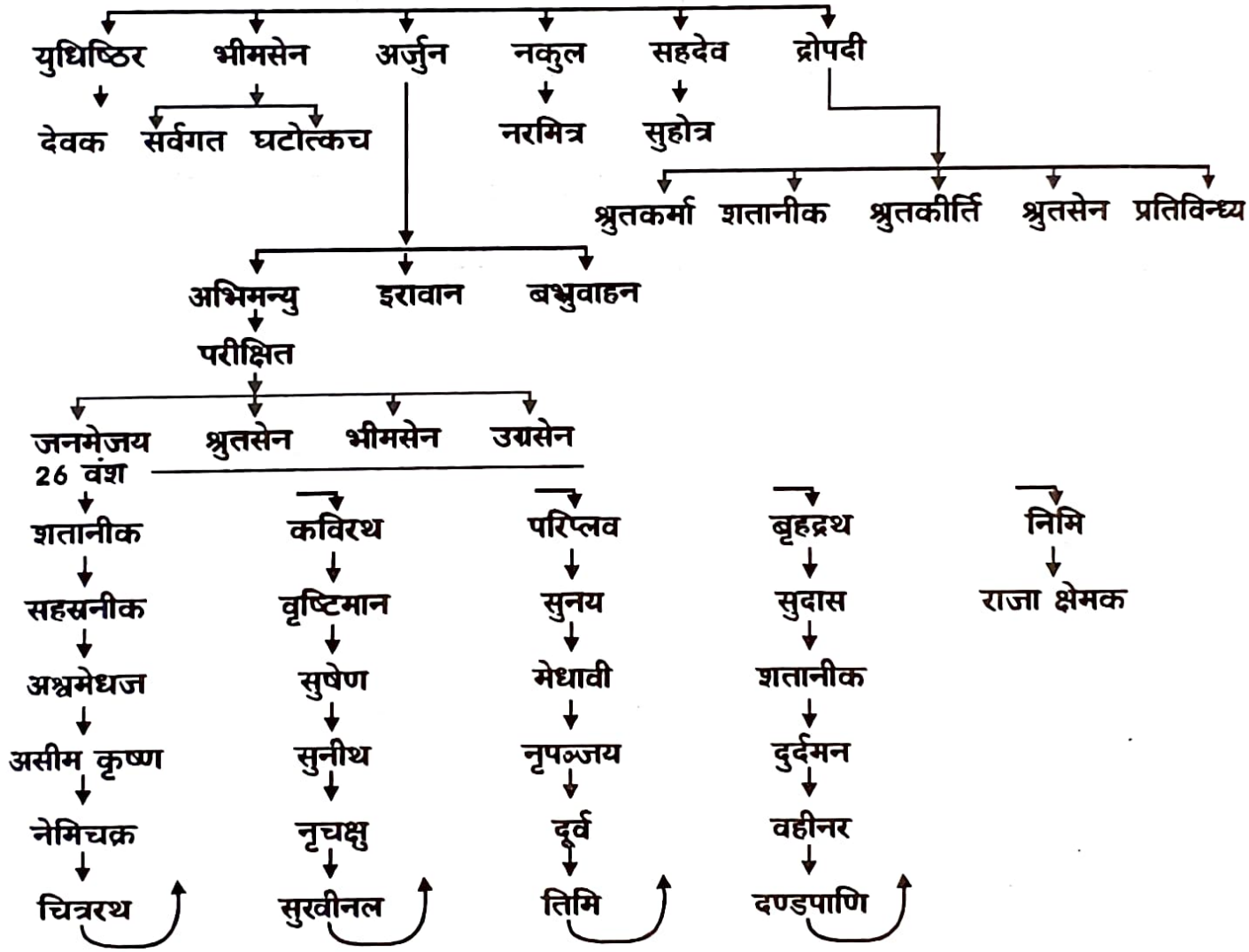

अर्जुन पत्नी उलूकी मानो, नागकन्या इक उस को जानो।
उसके गर्भ से था इरावान, अन्य पत्नी से बभ्रुवाहन।
अर्जुन पत्नी सुभद्रा जान, उस से अभिमन्यु वीर महान।
अभिमन्यु पुत्र परीक्षित मान, परीक्षित से जनमेजय लो जान।
थे और पुत्र भी श्रुतसेन, थे भीमसेन और उग्रसेन।
जनमेजय का वंश महान, छब्बीस पीड़ी तक पहचान।

8. चन्द्रवंशीय ययाति सुत यदु के वंश (यादव वंश) की परंपरा

(जिसमें श्री कृष्ण अवतार हुए)

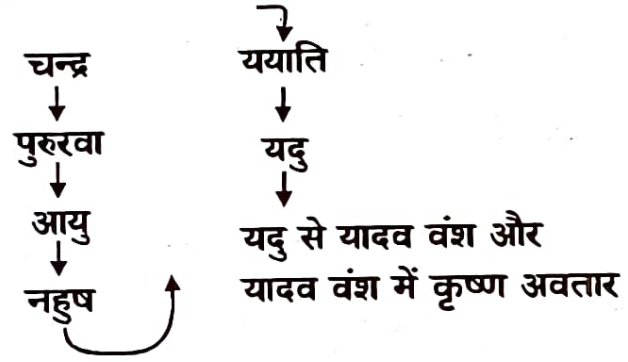

9. श्री कृष्ण का संदेश – श्री मद्भगवद्गीता

दो० – द्वापर युग में था भया, भगवान का अवतार।
कृष्ण चन्द्र के रूप में, धर्म के राखन हार।। 7394

द्वापर में बहु पाप बढ़ा, कलियुग का जो द्वार।
कलियुग में तो होत है, जग में पाप सवार।। 7395

भगवान ने अवतार ले, कीना योग प्रचार।
और बतलाया जगत को, धर्म का योग आधार।। 7396

तपस्वी से योगी बड़ा, कर्मियों से महान।
ज्ञानियों से भी है बड़ा, योगी समान न आन।। 7397

योग कथा था कृष्ण ने, व्यास ने लिपिबद्ध कीन।
[1]योग शास्त्र के नाम से, जग को गीता दीन।। 7398

उस शास्त्र को जन कहें, श्री मद्भगवद्गीत।
यह ग्रंथ महा ज्ञान का, लेवे जग यह जीत।। 7399

अध्याय अठारह ग्रंथ के, क्रमशः योग उपदेश।
प्रथम पाठ वैराग्य का, अन्तिम मोक्ष विशेष।। 7400

सभी अध्याय देख लें, इक इक कर के मीत।
पूर्ण ज्ञान जिस से मिले, योग की हो प्रतीत।। 7401

श्रीमद्भगवद्गीता का प्रथम अध्याय 'विषाद योग'

पहले में वैराग्य है, 'विषाद योग' है नाम।
अर्जुन भया विरक्त था, लड़ने से अविराम।। 7402

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता का नाम योग शास्त्र भी है – देखें प्रति अध्याय के अंत में:–

ओं तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योग शास्त्रे . . आदि और प्रति अध्याय को योग का अध्याय बतलाया है।

[1]"हाथ मेरे हैं कांपते, देह साथ न देत।
नश्वर राज्य के कारणे, क्यों लड़ूँ इस खेत।। 7403

[2]चाहे मुझे कोई मार दे, मुझे नहीं परवाह।
संबंधिन को मैं न हनूँ, मुझे न राज्य की चाह"।। 7404

यह जो अर्जुन ने कहा, वह वैराग्य का रूप।
संस्कार वश ही प्राप्त हो, ऐसा ज्ञान अनूप।। 7405

यह वैराग्य का रूप है, जो प्रदर्शित कीन।
जन इस में क्या कुछ करे, आगे शिक्षा दीन।। 7406

गीता का दूसरा अध्याय 'सांख्य योग'

वैराग्य मोक्ष की सीढ़ी जान, ज्ञान का आरंभ पहचान।
गुरु का यदि आदेश पा जाये, अन्तर्मुखी तब जन हो जाये।
असत से सत की ओर हो रुख, अन्तर में मिले जन को सुख।
अन्तर में आत्मा का है वास, उसे निरख भये ज्ञान प्रकाश।

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता १.१९–३०, १.३२
2. श्रीमद्भगवद्गीता १.३५

श्रीमद्भगवद्गीता निरीक्षण :

द्वापर युग में प्रभु का श्री कृष्ण रूप में अवतार लेना और श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से 'योगशास्त्र उपनिषद्' का उपदेश संसार को देना उस युग की परम उपलब्धि है। विद्वानों का मत है कि इस जैसा ज्ञान संसार में अन्यत्र नहीं। गीता शास्त्र के इस महत्व को देख निम्नलिखित पक्तियों में उस के सभी अठारह अध्यायों का पुनः सिंहावलोकन कर रहे हैं जो इस प्रकार से है:–

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार जीवन का ध्येय 'मोक्ष' है। देखें गीता का अन्तिम अठारहवां अध्याय 'मोक्ष–सन्यास'। मोक्ष साधना का आरंभ 'वैराग्य' से होता है अर्थात सांसारिक कर्मों से ग्लानि (देखो गीता का प्रथम अध्याय 'विशाद योग')।

आगे देखें . . .

दूसरा अध्याय यही बताये, आत्म दर्शन ज्ञान कहाये।

दो० – यह अध्याय ग्रंथ का, इस में है उपदेश।
नश्वर से वैराग्य जब, भीतर करें प्रवेश।। 7407

भीतर तो वह जोत है, जिस का होत न नाश।
उस पै चित्त टिकाय जन, उस का महा प्रकाश।। 7408

'सांख्य योग' के नाम से, गीता दे उपदेश।
'ज्ञान योग' इस को कहें, इस में ज्ञान विशेष।। 7409

है अध्याय दूसरा, लो गीता में चीन।
विरक्त का मन स्थिर भये, आत्मा में हो लीन।। 7410

प्रथम अध्याय वैराग्य का, दूजा ज्ञान का जान।
वैराग्य बिना न ज्ञान हो, गीता का फरमान।। 7411

आत्म दर्शन ज्ञान है, जो भीतर मिल पाय।
विरक्त जन ही पा सकत, रागी भ्रांत हो जाय।। 7412

संसार असत्य है तो उस से ग्लानि होने पर सत्य की खोज आवश्यक है (देखो गीता का दूसरा अध्याय 'सांख्य ज्ञान योग')। इसके लिए भी जन अन्तर्मुखी हो जायें।

मनुष्य हर समय अन्तर्मुखी नहीं रह सकता। उसे शरीर के लिए कर्म भी करने होते हैं। (देखो तीसरा अध्याय 'कर्म योग')। कर्म के साथ उन का फल भी संलग्न है।

कर्म में प्रवृत्त होने पर यह शंका होती है कि कहीं मन का वैराग्य और ज्ञान खण्डित न हो जाये क्यों कि हर कर्म के साथ फल लगा रहता है। अतः वैराग्य – ज्ञान – कर्म तीनों इकट्ठे होने चाहिएं (देखें गीता का चौथा अध्याय 'ज्ञान–कर्म–सन्यास–योग') अर्थात् फल

आगे देखें . . .

ज्योति रूप है आत्मा, हो न उस का नाश।
अविनाशी उस को जानिये, अनश्वर है प्रकाश।। 7413

आत्मा जन्म न लेत है, मरती भी न सोय।
उस आत्मा को निरखते, आत्म ज्ञानी जोय।। 7414

आत्मा को न काट सकें, आग भी न जलाय।
आत्मा को जो देखता, ज्ञानी वह कहलाय।। 7415

देह का होता अन्त है, देही का न होय।
उस देही को देखते, आत्म ज्ञानी जोय।। 7416

इस काल जो प्रकट भयी, पूर्व काल भी सोय।
यह तथ्य जो जानते, आत्म ज्ञानी होय।। 7417

आत्मा को ही निरखते, सर्व विश्व में जोय।
भेद भाव न मानते, आत्म ज्ञानी सोय।। 7418

सांख्य योग जो कृष्ण बताया, रहस्य योग का स्पष्ट जताया।
नश्वर से जन चित्त हटाये, अनश्वर में फिर उसे लगाये।
अनश्वर ही है स्वरूप हमारा, चित्त का वही स्थिर सहारा।

की इच्छा त्याग ज्ञान–पूर्वक करना। इस अवस्था को "विदेह" अवस्था जानो, जो राजा जनक की थी। इस कारण वह 'विदेह' नाम से प्रसिद्ध है।

'विदेह' का जन्म फिर योगियों के घर होता है जहां पर उसको योग में और प्रवृत्ति होती है।

गीता का लक्ष्य मोक्ष है। अतः जीव जन्म मरण से छूटना चाहता है। परन्तु कर्म भी करना पड़ता है। इसका समाधान गीता के पांचवे अध्याय "कर्म सन्यास योग" में है। जिसके अनुसार

आगे देखें . . .

मन जब आत्मा में टिक पाये, योग युक्त तब जन हो जाये।
कृष्ण का बस यही आदेश, बाहर चित्त न रहे हमेश।
इस प्रकार जब जन हो जाये, "स्थिर प्रज्ञ" वह जन कहलाये।
मन की कामना सर्व त्यागे, आत्म चिन्तन में अनुरागे।
दुख में होय नहीं मन अधीर, सुख में रहे पुरुष वह धीर।
राग भय व क्रोध से मुक्त, वह सांख्य योग में जानो युक्त।
कच्छवा जिमि अंग सहारे, तिमि योगी मन वश कर डारे।
जिमि समुद्र विशाल महान, योगी का मन हो उसी समान।
गीता का है सांख्य यह योग, संकेत कृष्ण का समझें लोग।

दो०–कृष्ण का उपदेश यही, उपजे मन वैराग।
अन्तर्मुखी जन हो रहे, न जाये जग से भाग।। 7419

खास बात जो कृष्ण कही, ले आगे जन देख।
अन्तर्मुखी जब जन भये, ले कर्तव्य भी देख।। 7420

अन्तर्मुखी जब जन भये, रहे कर्म का ध्यान।
कर्म योग यह जानिये, जिस का आगे ज्ञान।। 7421

वैराग त्यागे न कभी, संग ध्यान भी होय।
कर्म करे वह देह से, कर्म योगी जन सोय।। 7422

योगी देखता है कि कर्म आत्मा नहीं करती इन्द्रियां करती हैं। आत्मा निर्लेप है। आत्मा और कर्म के संबंध विच्छेद का नाम "कर्म सन्यास" है। इस अवस्था का नाम "प्रकृति–लय" अवस्था है जो अवतारी आत्माओं की होती है।

परन्तु साधारण व्यक्ति प्रकृति–लय अवस्था में नहीं पहुँच सकता। यहां तक पहुँचने के लिए जिन साधनों की परम आवश्यकता है उन्हें देखें गीता के छटे अध्याय "आत्म संयम योग" में।

आगे देखें . . .

गीता का तीसरा अध्याय 'कर्म योग'

कर्म योग का ज्ञान जो, कृष्ण दीना जग आय।
विलक्षण ही वह ज्ञान है, मोक्ष का जान उपाय।। 7423

कर्म से बंधन होत है, कर्म योग से नाहीं।
यह भेद जो जान ले, मुक्त जीव हो जाहीं।। 7424

कर्म योग और कर्म में, भेद क्या है मीत?
वैराग्य सहित जो कर्म है, कर्म योग लो चीत।। 7425

कर्मयोग त्रिवेणी जानो, कर्म, वैराग्य, ध्यान की मानो।
देह से कर्म व मन से ध्यान, कर्म योग इस को ही जान।
विस्तार से मिले यह ज्ञान, गीता में लें पढ़ कर जान।
संक्षेप से ही यहां बतायें, कर्म योग का रहस्य जतायें।
अर्जुन ने था प्रश्न उठाया, मुक्ति का जब ज्ञान उपाया।
क्यों कर्म को बीच में लायें, मोक्ष मार्ग में बाधा पायें[1]।
कृष्ण कहा "हे अर्जुन प्यारे, जग में बहु जन भूलन हारे।
कर्म त्याग जो मुक्ति चाहें, भूल में ही वे जन भ्रमाहें[2]।
प्रकृति के जन वश रह पावे, प्रकृति उस से कर्म करावे।

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ३.१–२
2. श्रीमद्भगवद्गीता ३.३–४

संयम शरीर का करना होता है जो आत्मा से भिन्न है। अतः आत्मा और शरीर दोनों के बारे में जानकारी होनी आवश्यक है। आत्मा को जानना 'ज्ञान' है, शरीर का जानना 'विज्ञान'। इसे जानने के लिए गीता का सातवां अध्याय "ज्ञान–विज्ञान योग" है।

आगे देखें . . .

दो०–इन्द्रियों को जो रोक कर, सिमरे विषय तमाम।
मिथ्याचारी मूढ़ वह, उसे न कहीं विश्राम[1] ।। 7426

विषय न सिमरण जो करत, सिमरे जो भगवान।
इन्द्रियों से करे कर्म जन, कर्म योगी वह जान[2] ।। 7427

नियत कर्म जन करत रहे, त्यागे कर्म न को।
कर्म त्याग से है बड़ा, कर्म का करना जो[3] ।। 7428

संग रहित रह कर्म करे, फल की इच्छा त्याग।
कर्म योगी वह जानिये, गीता के अनुसार।। 7429

कर्म योग को यज्ञ कहा, गीता में भगवान।
यज्ञ उस को कहत हैं, जहां स्मरण भगवान[4] ।। 7430

रह आसक्त जो कर्म करे, कर्म योगी वह जान।
कर्म द्वारा सिद्ध भये, जनक आदि विद्वान[5] ।। 7431

आम लोग जिमि कर्म करें, रह सक्त संसार।
योगी तिमि सब कुछ करे, रह असक्त संसार[6] ।। 7432

विघ्न की भी बात इक, कर्मयोग के साथ।
संग कर्म के फल तिमि, धुआँ आग जिमि साथ।। 7433

1. श्रीमद्भगवद्गीता ३.५
2. श्रीमद्भगवद्गीता ३.७
3. श्रीमद्भगवद्गीता ३.८
4. श्रीमद्भगवद्गीता ३.९
5. श्रीमद्भगवद्गीता ३.२०
6. श्रीमद्भगवद्गीता ३.२५

संयमी मनुष्य की आत्मा मुक्ति प्राप्त करती है। उसे ब्रह्म में लीन होना होता है जो अनश्वर है। परंतु वह क्या है, इसके लिए देखें गीता का आठवां अध्याय "अक्षर–ब्रह्म योग"।

आगे देखें . . .

मन समक्ष यदि फल रहे, हो विराग की हान।
विराग के इस हान से, ध्यानी रहे परशान।। 7434

इस विघ्न से किमि बचे, जो अभ्यासी होय।
इसी का समाधान तो, आगे चल कर होय।। 7435

अगला पाठ ग्रंथ का, यही बात बतलाय।
फल का अंश लेश भी, योगी चित्त न आय।। 7436

गीता का चौथा अध्याय 'ज्ञान कर्म सन्यास योग'

फल प्रेरक है कर्म का, सार्थक उस से होय।
कर्म करे जब जन कोई, विसरे न फल सोय।। 7437

विसर पाये न फल यदि, किमि हो काम की हान।
यही शिक्षा अब दे रहे, कृष्ण चन्द्र भगवान।। 7438

ज्ञान युक्त जो कर्म हो, और संग सन्यास।
रूप कर्म का बदलता, मिटती फल की आस।। 7439

कर्म व फल विछिन्न हों, ताना बाना अलग।
हो जायें जिमि पट के, ताने बाने विलग।। 7440

उस अक्षर ब्रह्म स्वरूप का वर्णन कोई नहीं कर सकता। जो उसे प्राप्त कर लेता है वह उस में समा जाता है और लौटता नहीं। "अक्षर–ब्रह्म योग" की साधना जनसाधारण के लिए संभव नहीं। क्या मुक्ति का कोई सरल मार्ग नहीं? वह है गीता का नवम अध्याय "राज विद्या–गुह्य विद्या योग"। इसमें पांच प्रकार के अभ्यास हैं जो सभी कर सकते हैं।

वे निम्नलिखित हैं–

राज विद्या योग–

1. ईश्वर को सर्वव्यापक देखना (गीता ९.६)

आगे देखें . . .

[1]कर्म फलों को छोड़ कर, संग भी उन का त्याग।
नित्य तृप्त वह जन रहत, बिन आस महाभाग।। 7441

[2]कर्मों में प्रवृत्त रह, करता कुछ भी नाहीं।
आशा न उस मन बसत, अपना कुछ भी नाहीं।। 7442

[3]देह से केवल कर्म हो, पाप लगे न कोय।
जो कुछ हो प्राप्त उसे, संतोष उस में होय।। 7443

सिद्धि असिद्धि में सम चित्त, करे कर्म सब सोय।
बांध सकें न कर्म उसे, कर्म–सन्यासी होय।। 7444

इस दशा में योगी जो, 'देह मुक्त' कहलाय।
'विदेही' उस को जानिये, जनक समान हो जाय।। 7445

'विदेह अवस्था' जान लो, उस योगी की होय।
'ज्ञान कर्म सन्यास' में, सिद्धि पावे जोय।। 7446

[4]सर्व कर्म उस योगी के, हों संकल्प विहीन।
ज्ञान अग्नि से दग्ध हों, जो कर्म हों कीन।। 7447

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ४.२०
2. श्रीमद्भगवद्गीता ४.२१
3. श्रीमद्भगवद्गीता ४.२२
4. श्रीमद्भगवद्गीता ४.२९

---

2. भक्ति में नित्य युक्त रहना (गीता ९.१४, २२)
3. सकाम भक्ति न करना (गीता ९.२०, २१)
4. सर्व कर्म ईश्वर अर्पित करने (गीता ९.२६, २७)
5. अनन्य भक्त होना (गीता ९.३०, ३२, ३४)

आगे देखें . . .

भव अन्य में जात जब, जन्म योगिन के घर होंय।
[1]जन्म से ही सिद्धियां, सब उस के घट होंय।। 7448

'विदेह अवस्था' जानिये, मोक्ष का इक स्थान।
और सोपान मोक्ष के, आगे लेना जान।। 7449

तीन सोपान मोक्ष के, इक 'विदेह' कहलाय।
दूसरा 'प्रकृतिलय' फिर, 'ब्रह्मलीन' हो जाय।। 7450

गीता का पांचवा अध्याय कर्म–सन्यास योग

कर्म–सन्यास पाठ में, कृष्ण बताया मीत।
छूटे जीव किमि कर्म से, लेवो अब यह चीत।। 7451

कर्म से ही जब जन छूट पाये, प्रकृति से तभी मुक्ति पाये।
[2]'प्रकृति–लय' अवस्था यह जानो, 'मोक्ष सोपान' दूसरा मानो।
जीव प्रकृति से हो कर मुक्त, समस्त विश्व से होता युक्त।
जहां चाहे पहुंच वह पाये, स्वेच्छा से लोकान्तर जाये।
जब चाहे वह जग में आये, जब चाहे वह यहां से जाये।

---

1. देखो योग दर्शन १.१९ 2. योग दर्शन १.१९

मोक्ष के तीन स्थान हैं

1. विदेह अर्थात् जीवन मुक्ति 2. प्रकृति लय–स्वेच्छा से जन्म व मरण होना
3. ब्रह्मलीन – समुद्र में बिन्दुवत समाना।

इस योग का नाम 'राज गुह्य' इस कारण है क्योंकि इसकी अधिक चर्चा द्वारा यह पाखण्ड मार्ग भी हो जाता है।

कठिनाई यह है कि ईश्वर को सर्वव्यापक देखते रहने से मन स्थिर नहीं हो पाता। मन ईश्वर में स्थिर रह सके इसके लिए देखें गीता का दसवां अध्याय "विभूति योग" जिस द्वारा जगत में सर्वत्र मिलने वाली ईश्वर की विभूतियों में से किसी एक पर चित्त स्थिर हो सकता है।

आगे देखें . . .

यह अभ्यास कृष्ण बतलाया, इस अध्याय में है वह आया।
[1]अभ्यासी योगी ले यह मान, "कर्ता हूँ न" ले सत्य पहचान।

दो०-"मैं शुद्ध बुद्ध हूँ आत्मा, कर्ता न हूँ मीत"।
इस तथ्य को जानता, सिद्ध योगी निज चीत।। 7452

इन्द्रिन ही हैं देखतीं, वे सांस ले पांय।
आत्मा तो निर्लेप है, योगी जानन पांय।। 7453

स्पर्श न आत्मा करत है, सूंघत भी है नाहीं।
आत्मा तो निर्लेप है, योगी जानन पाहीं।। 7454

आत्मा खाती है नहीं, जाय कहीं भी नाहीं।
आत्मा तो निर्लेप है, योगी जानन पाहीं।। 7455

आत्मा स्वप्न न लेत है, लेत श्वास भी नाहीं।
आत्मा तो निर्लेप है, योगी जानन पाहीं।। 7456

आत्मा बात न करत है, त्याग करे कुछ नाहीं।
आत्मा तो निर्लेप है, योगी जानन पाहीं।। 7457

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ५.८ आदि "कर्म सन्यासी तो देखता हुआ, सुनता हुआ, स्पर्श करता हुआ, सूंघता हुआ, भोजन करता हुआ, गमन करता हुआ, सोता हुआ, श्वास लेता हुआ, बोलता हुआ, त्यागता हुआ, ग्रहण करता हुआ तथा आंखों को खोलता और मूंदता हुआ भी सब इन्द्रियां अपने अपने कामों में बरत रही हैं ऐसा जानता है और वह स्वयं कुछ भी नहीं करता।

अनन्य भक्त की तुष्टि विभूतियों को देखने से नहीं हो पाती। वह ईश्वर के साक्षात दर्शन करना चाहता है। इसके लिए देखें गीता का ग्यारहवां अध्याय "विश्वरूप दर्शन"।

विश्वरूप दर्शन गुरु की कृपा और शक्तिपात से संभव है जैसा कि श्री कृष्ण ने अर्जुन को अपनी शक्ति से युद्ध भूमि में विराट स्वरूप के दर्शन करवाये।

आगे देखें . . .

आत्मा ग्रहण न करत है, दृष्टि झपकत नाहीं।
आत्मा तो निर्लेप है, योगी जानन पाहीं।। 7458

[1]इन्द्रिन तन मन बुद्ध से, करते योगी कर्म।
आसक्ति को त्याग कर, ये योगी के कर्म।। 7459

योगी रहत है सुख में, मन से कर्म त्याग।
वह तो करता कुछ नहीं, रहत कर्म में लाग।। 7460

'कर्म सन्यास' की सीख, दीन कृष्ण ने खास।
देह से करे कर्म जन, मन में हो सन्यास।। 7461

'कर्म सन्यास' का पाठ, अति गुप्त है मीत।
अन्यत्र कहीं न मिलत यह, निज कृष्ण की रीत।। 7462

भेद भाव इस योग में, होय कभी भी नाहीं।
सबन को सम दृष्टि से, देखत वह सब थाहीं।। 7463

[2]यही इस की विशेषता, सब में है भगवान।
ब्राह्मण, गौ और हस्ती, कुत्ता सभी समान।। 7464

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ५.११, ५.१३ 2. श्रीमद्भगवद्गीता ५.१८

इस कृपा को प्राप्त करने के लिए देखें गीता का बारहवां अध्याय "भक्ति योग"। इस भक्ति के प्रभाव से भक्त ईश्वर को जान सकता है, देख सकता है और उसमें प्रवेश भी कर सकता है। (गीता ११.५३)

ऐसी अनन्य भक्ति किस प्रकार संभव है? इसके लिए देखें गीता का तेरहवां अध्याय "क्षेत्र – क्षेत्रज्ञ विभाग योग"। क्षेत्रज्ञ (आत्मा) तथा क्षेत्र (शरीर) के संबंध का ज्ञान और संबंध विच्छेद की साधना।

आगे देखें . . .

[1]सम दृष्टि से देखता, सब से सम व्यवहार।
नव द्वार इस देह में, करे न कुछ भी कार।। 7465

[2]अन्तरात्मा में सुखी, रमन करत मन माहिं।
अन्तर्ज्योति निरखता, वह ब्रह्म जग माहिं।। 7466

उस पुरुष को जानिये, वह अवतारी होय।
करता तो सब कर्म वह, अकर्ता फिर भी सोय।। 7467

कर्म सन्यासी जानिये, ईश्वर रूप ही मीत।
पुरुष अवतारी होत वह, लो यह मन में चीत।। 7468

'कर्म योग' इक योग है, दूजा 'कर्म सन्यास'।
इन दोनों में जानिये, है भेद कुछ खास।। 7469

उस भेद को जानते, योगी जो प्रवीण।
उल्लेख कहीं भी है नहीं, यह तो ज्ञान नवीन।। 7470

'कर्मयोगी' का कर्म हो, आसक्ति से हीन।
'कर्मसन्यासी' के प्रति, ज्ञान विलक्षण चीन।। 7471

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ५.२३ 2. श्रीमद्भगवद्गीता ५.२४

शरीर और आत्मा के बंधन का कारण क्या है? इसके लिए देखें गीता का चौदहवां अध्याय "गुणत्रय विभाग योग" और जानें कि किस रीति से आत्मा उस बंधन से छूट सकती है और आत्मदर्शन हो सकता है।

आत्मा या ईश्वर जिसे देखना है उस का स्वरूप क्या है? इसके लिए देखें गीता का पंद्रहवां अध्याय "पुरुषोत्तम योग" तथा उसे देखने के लिए जो साधन चाहिएँ वे क्या हैं।

ईश्वर दर्शन के लिए भक्त में कौन–2 से गुण होने चाहिएँ। इसके लिए देखें गीता का सोलहवां अध्याय "देवासुर संपद् विभाग योग"।

आगे देखें . . .

उस विलक्षण ज्ञान का, करते जभी विचार।
करत करत विचार भी, जाता मन भी हार।। 7472

'कर्मसन्यासी' करत है, सभी कर्म मम मीत।
करत करत वह कर्म को, करे न कुछ लो चीत।। 7473

[1]इच्छा भय व क्रोध का, न नाम मात्र उस बीच।
"कर्म–सन्यासी" जानिये, मुक्ति मध्य समीच।। 7474

इस स्थिति तक पहुँचना, है परम दुश्वार।
अगले पाठ में हैं कथे, साधन इस अनुसार।। 7475

उन साधनों को जो करे, दीर्घ काल हे मीत।
'कर्म–सन्यासी' बन सके, सदा रहे यह चीत।। 7476

'कर्मयोग' सब कहत हैं, 'कर्म सन्यास' न कोय।
'कर्म सन्यास' है बड़ा, विरला जाने सोय।। 7477

---

1. विगतेच्छा भयक्रोधाय सदा मुक्त एवं सः। गीता ५.२८

दैवीगुणों को प्राप्त करने के लिए मन में जो श्रद्धा होनी चाहिए, वह क्या है? इसके लिए देखें गीता का सतारहवां अध्याय "श्रद्धात्रय विभाग योग"।

भक्ति और श्रद्धा का फल क्या होगा? इसके लिए देखें गीता का अन्तिम अठारहवां अध्याय "मोक्ष सन्यास योग"। जब भक्त मोक्ष की कामना से भी मुक्त हो जाता है तब वह "पूर्ण काम" हो जाता है।

–इति–

गीता का छटा अध्याय 'आत्म संयम योग'

कर्म योग कर्म सन्यास बताया, प्राप्त करने के जो उपाया।
उस हेतु जो योग हो मीत, "आत्म संयम योग" वह चीत।

दो०– आत्म संयम योग को, सुनिये मेरे मीत।
आत्म संयम के बिना, सके न मन को जीत।। 7478

बिना साधन न सिद्धि हो, गीता का उपदेश।
जो लिखा इस पाठ में, साधन करें हमेश।। 7479

आत्म संयम हेतु जन, बैठ जाय एकान्त।
शरण गुरु की ग्रहण कर, कर ले मन को शान्त।। 7480

[1]निरन्तर करे अभ्यास जन, बैठ एकान्त में मीत।
आशा तृष्णा त्याग कर, माया से मन जीत।। 7481

लगाय शुद्ध स्थान पर, अपना आसन मीत।
न ऊँचा नीचा भूमि से, स्थिर जो हो हर रीत।। 7482

उस आसन पर बैठ कर, करे एकाग्र चित्त।
संयमित इन्द्रिन को करे, अन्तर शुद्धि हित।। 7483

सिर, गर्दन और काय जो, रहें सीध में मीत।
नासाग्र पर दृष्टि होय, हो निश्चल सप्रीत।। 7484

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ६.१०–२८

अन्तरात्मा शान्त हो, मन में भय न कोय।
ब्रह्मचर्य का व्रत हो, स्मरण प्रभु ही होय।। 7485

दृढ़ चित्त से जो बैठ इमि, करता सदा ध्यान।
वह योगी प्रभु कृपा से, पाता है निर्वान।। 7486

बहुत खाये न योगी होय, भूखा रहे न योगी होय।
बहुत सोये न योगी होय, जागत रहे न योगी होय।
युक्त आहार विहार जो होय, युक्त कर्म करे सभी सोय।
हो उठना बैठना जिस का युक्त, सर्व दुखों से रहे वह मुक्त।
जिस का चित्त नियमित होय, आत्मा में ही स्थित हो सोय।
हर प्रकार की कामना त्यागे, युक्त होय सो योग में लागे।
मन स्थिर इस विध कर पाये, दीपशिखा जिस विध दिख पाये।
निवात स्थान जो राखी होय, किञ्चिन्मात्र हिले न जोय।

दो०–मन का हो निरोध जिमि, योग साधन से मीत।
आत्मा निरखे आत्म को, आत्म तुष्ट सब रीत।। 7487

मन से ऊपजे काम सब, योगी देवे त्याग।
मन से ही सब इन्द्रियां, वश करे महाभाग।। 7488

आत्मा में मन स्थित हो, बुद्धि को संग गोय।
चिन्तन करे न और कुछ, आत्म स्थित इमि होय।। 7489

चंचल मन होय चंचल, यदि न वश में आय।
जिधर को वह जात होय, योगी वापस लाय।। 7490

योगी पाप मुक्त यदि, इस विधि कर अभ्यास।
ब्राह्मी सुख को पात वह, सुख अथाह जो खास।। 7491

इस विध कृष्ण चन्द्र बतलाई, 'आत्म संयम' की रीत जताई।
'आत्म संयम' से योगी होय, 'आत्म संयम' बिन न कुछ गोय।

दो०–ज्ञानी जन को चाहिए, कुछ बाहिर का भी ज्ञान।
अगले पाठ में दे रहे, वह ज्ञान भगवान।। 7492

गीता का सातवां अध्याय 'ज्ञान–विज्ञान योग'

आत्मा का जो ज्ञान है, वह ज्ञान है मीत।
प्रकृति भी उस संग जोय, वह विज्ञान लो चीत।। 7493

पूर्ण ज्ञानी जानिये, जिसे दोनों का ज्ञान।
इस कारण इस पाठ में, यह दीना भगवान।। 7494

[1]ज्ञान को विज्ञान संग, जो जन लेवे जान।
फिर नहीं कुछ रहत है, जानन को ले जान।। 7495

प्रभु को जानना ज्ञान है, प्रकृति को विज्ञान।
दोनों को जो जानता, योगी वह मान।। 7496

प्रकृति का जो ज्ञान होय, वह विज्ञान कहाय।
उसी प्रकृति के भीतर, ईश्वर भी रम पाय।। 7497

प्रकृति अन्दर देखता, जो ईश्वर को मीत।
ज्ञानी वह जन होत है, लो यह मन में चीत।। 7498

1. श्रीमद्भगवद्गीता ७.२

प्रकृति भीतर देखना, ईश्वर को हे मीत।
ईश की रचना देखते, ज्ञानी जन लो चीत।। 7499

प्रकृति पुरुष का ज्ञान यह, है सम्पूर्ण ज्ञान।
"ज्ञान विज्ञान" के पाठ में, इस का कीन बखान।। 7500

ज्ञान सम्पूर्ण जानना, इस पाठ का लक्ष्य।
इस भाव को समझते, जन ज्ञानी जो दक्ष।। 7501

विज्ञान बिना ज्ञान अधूरा, ज्ञान बिना विज्ञान न पूरा।
गीता में यह तथ्य बताया, "ज्ञान–विज्ञान–योग" लिख पाया।
प्रकृति का अब करें बखान, उसके तत्व हम लेवें जान।
[1]प्रकृति दो प्रकार की जानो, अपरा और परा पहचानो।
अपरा आठ प्रकार की जान, 'भूमि' 'जल' और 'आग' पहचान।
[2]'वायु' 'आकाश' 'मन' हैं तीन, 'बुद्धि' और 'अहंकार' लो चीन।
परा प्रकृति जीवात्मा जानो, जग रचना में मुख्य हि मानो।
ईश्वर सब से ऊपर भाई, कर्ता हर्ता वही कहलाई।
ईश्वर का अब करें बखान, जिमि गीता में वर्णित जान।

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ७.४–६
2. गीता के अनुसार प्रकृति के दो भेद अपरा और परा।

अपरा आठ प्रकार की:

1. भूमि	2. जल	3. अग्नि	4. वायु
5. आकाश	6. मन	7. बुद्धि	8. अहंकार

परा प्रकृति : जीवआत्मा

सांख्य के अनुसार प्रकृति के तत्वः–

1. 5 महाभूत– पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश

आगे देखें . . .

दो० – [1]ईश्वर कारण जगत का, और प्रलय का जान।
ईश्वर के न कुछ परे, योगी लेत पहचान।। 7502

मणियां जिमि पिरोयी हों, सूत्र में मम मीत।
ईश्वर सब के बीच है, योगी लेता चीत।। 7503

जो भी जिस में गुण हैं, ईश्वर से ही जान।
ईश्वर बिन गुणहीन सब, योगी लेता जान।। 7504

तीन गुणों से मोहित हो, सके न जग पहचान।
परम आत्मा भगवान को, योगी लेत पहचान।। 7505

परमात्मा ही ब्रह्म है, अखण्ड मण्डलाकार।
उस को जो पहचानता, योगिन में सरदार।। 7506

'ब्रह्म शब्द' को श्रवण कर, अर्जुन पूछी बात।
ब्रह्म किस को कहत हैं, मुझे बताओ तात।। 7507

किस विध उसे पहचानते, इस का चाहूँ ज्ञान।
सभी विदित है आप को, हो सर्वज्ञ भगवान।। 7508

जो उत्तर इस का दिया, अर्जुन को भगवान।
पाठ अगले में है वही, लें वहीं से जान।। 7509

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ७.६–१३

2. 5 तन्मात्रा – गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द
3. 4 अन्तःकरण– मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार
4. 10 इन्द्रियां–श्रोण, त्वचा, चक्षु, रसना, नासिका, वाक, पाणि, पाद, उपस्थ, पायु
5. 1 काल : जोड़ – २५ तत्व।

[1]एक बात जो है कथी, अर्जुन को भगवान
प्रयाण काल में ज्ञान हो, ब्रह्म का लेवो जान।। 7510

गीता का आठवां अध्याय 'अक्षर–ब्रह्म योग'

'अक्षर–ब्रह्म' ब्रह्म का रूप, अनादि काल से एक स्वरूप।
उस को जो जन जानन चाहे, 'अक्षर–ब्रह्म योग' कर पाये।
प्रयाण काल उस को ले जान, 'अक्षर–ब्रह्म' की तभी पहचान।
प्रयाण काल का जो अभ्यास, वही कथा इस पाठ में खास।
प्रयाण काल से पहले मान, इसका नहीं हो सकता ज्ञान।
ब्रह्म में जब जन जा समाये, ब्रह्म का ज्ञान तभी हो पाये।
वह तो परम गति लो जान, इस से आगे न कुछ है मान।
इस गति को वही जन पाये, साधन कथित जो जन कर पाये।

दो०–साधन हैं वे कथन किये, गीता में भगवान।
विरला ही जन कर सके, उन साधनों को मान।। 7511

पूरण योगी जो भये, वही करे अभ्यास।
ब्रह्म स्थिति को पाय कर, लौटे न जग पास।। 7512

परम गति वह जानिये, वह है अक्षर मीत।
अव्यक्त भी तो है वही, इमि लो इस को चीत।। 7513

ऐसे परम धाम को, पा कर योगी मीत।
लौटत न संसार में, लेवो यह मन चीत।। 7514

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ७.३०

ब्रह्म मुक्ति यह जानिये, अंत काल हो पाय।
जल बिन्दु जिमि नीर में, आत्म ब्रह्म समाय।। 7515

[1]सब द्वारों को बंद कर, हृदय में मन गोय।
मूर्धा में धर प्राण को, स्थित योग में होय।। 7516

ओं अक्षर के साथ ही, करे ब्रह्म स्मरण।
त्याग देह वह करत है, परम गति का वरण।। 7517

प्रयाण काल जब योगी, निश्चल मन के साथ।
भक्ति में निमग्न मन, योग शक्ति भी साथ।। 7518

[2]भ्रुओं मध्य धर प्राण को, त्यागे जब वह प्राण।
परम गति को पात वह, न मृत्यु उस समान।। 7519

[3]वेद पाठ और तप से, व यज्ञ दान से मीत।
पुण्य मिले जो जनन को, उस से योग अतीत।। 7520

अक्षर–ब्रह्म–योग का, सुगम न मार्ग मीत।
इस हेतु श्री कृष्ण कहा, अन्य मार्ग लो चीत।। 7521

वह मार्ग हम जान लें, 'राज–विद्या' कहलाय।
सर्व साधारण चल सके, और मोक्ष को पाय।। 7522

उस मार्ग की रीत जो, पाठ अगले में मीत।
श्रद्धापूर्वक जान कर, अपनाना सप्रीत।। 7523

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ८.१२–१३ 2. श्रीमद्भगवद्गीता ८.१०
3. श्रीमद्भगवद्गीता ८.२८

गीता का नवम अध्याय 'राजविद्या–राजगुह्य योग'

'राजमार्ग' जनता का मार्ग, सर्व साधारण चले इस मार्ग।
'गुह्य–मार्ग' इस को कह पाये, साधक साधन गुप्त रख पाये।
प्रदर्शन करे न लो मन चीत, जिमि पाखण्डी करते मीत।
साधन करे न शोर मचाये, अपने तक हि उसे रख पाये।
प्रदर्शित करता जो अभ्यास, उसे नहीं मिलती सिद्धि खास।
[1]प्रत्यक्ष लाभ इस से जन गोये, साधन भी सुखपूर्वक होये।
"गुह्यतम" है यह कथ पाया, और वैज्ञानिक मार्ग बताया।
[2]जो जन इस पर चल पाये, अशुभ उस के निकट न आये।

दो०– इस मार्ग के अभ्यास हित, साधन पांच बताये।
भगवान के स्वरूप को, साधक मन ध्याये।। 7524

दूजा साधन जान लो, सर्वव्यापक नाथ।
साधक कभी न त्यागे, उस नाथ का साथ।। 7525

तीजा साधन है कथा, नित्य युक्त रहे साध।
बिन बाधा के सदैव, प्रभु को ले आराध।। 7526

चौथा साधन है इमि, अर्पित करे निज कर्म।
प्रभु के दिव्य चरणों में, यह गूढ़ है मर्म।। 7527

पंचम साधन जो कथा, उसे न भूले साध।
अनन्य भाव से ही सदा, ले इष्ट आराध।। 7528

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ९.२ 2. श्रीमद्भगवद्गीता ९.१

स्पष्ट किया इन सबन को, गीता में भगवान।
साधक को यह चाहिए, क्रमशः लेवे जान।। 7529

राज विद्या अनुसार जो, करना चाहे अभ्यास।
सर्व व्यापक ईश है, मन माने इमि खास।। 7530

[1]जिस प्रकार आकाश में, सर्वत्र वायु होय।
ऐसे ही भगवान में, भूत पदार्थ गोय।। 7531

दूजी बात भी जान लो, नित्य युक्त जन होय।
सतत कीर्तन हो नाथ का, दृढ़ नेम यह गोय।। 7532

भक्ति भाव से नमन करे, सन्मुख देख भगवान।
नित्य युक्त जो इमि रहे, [2]भगवत् प्रेमी जान।। 7533

बात तीसरी देख लो, मन मारन की मीत।
लौकिक इच्छा त्याग कर, भजन होय सप्रीत।। 7534

यज्ञादि जो कर्म करें, इच्छा मन में धार।
इच्छा पूर्ण होय पर, छूटत न संसार।। 7535

स्वर्ग में भी जा बसें, फिर लौटें संसार।
आवागामी रहत वे, [3]स्वेच्छा के अनुसार।। 7536

बात चौथी भी याद रहे, जो अभ्यासी होय।
भूल पाय कभी न इसे, मुक्ति को तब गोय।। 7537

1. श्रीमद्भगवद्गीता ९.६
2. श्रीमद्भगवद्गीता ९.१४, २२
3. श्रीमद्भगवद्गीता ९.२०, २२

आत्म समर्पण वह करे, ईश्वर को मम मीत।
स्मरण करे भगवान को, कर एकाग्र चीत।। 7538

स्वीकार करें उस का प्रभु, समर्पित करे वह जोय।
पत्र पुष्प फल तोय भी, ग्रहण करें जो होय।। 7539

जो भी करता कर्म वह, खाना पीना आद।
यज्ञ आदि भी जो करे, [1]हो अर्पित प्रभु पाद।। 7540

राज–विद्या के योग में, बात पांचवी मीत।
अनन्य भाव से प्रभु भजो, एक इष्ट से प्रीत।। 7541

एक इष्ट की करत जो, सदा भक्ति मन लाय।
पापी भी तर जात है, होते इष्ट सहाय।। 7542

अवगुण उस के दूर हों, साधु वह हो जाय।
अनन्य भक्ति के कारणे, पापी भी तर जाय।। 7543

इष्ट में ही चित्त रमे, इष्ट का ही भक्त।
इष्ट का ही यज्ञ करे, पूर्ण रूप आसक्त।। 7544

ऐसा भक्त जो होत है, मिले इष्ट में जाय।
जीवन के पश्चात वह, [2]मुक्ति को ही पाय।। 7545

राज–विद्या योग का, पूरण भया बखान।
सर्वव्यापक ईश की, इस में भक्ति जान।। 7546

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ९.२६–२७ 2. श्रीमद्भगवद्गीता ९.३०–३४

[1] अजन्मा और अनादि, सर्व लोकों का नाथ।
इस विध प्रभु को जानकर, भज कर होत सनाथ।। 7547

राज–विद्या यह योग, है सरल महान।
जन साधारण के लिए, पर कठिन भी जान।। 7548

स्पष्ट कथी कठिनाई वह, अर्जुन ने उस काल।
सर्वव्यापक ईश को, किमि सिमरूँ हर काल।। 7549

[2] सिमरूँ किस किस भाव में, ईश्वर को मम मीत।
सर्वव्यापक में प्रभो, मन भटके इस रीत।। 7550

आकाश में तो दीखता, है मुझे कुछ नाहिं।
मन कहां पर टिक सके, इस विध हे मम साईं।। 7551

कुछ नहीं में कुछ खोजना, यह अजीब है बात।
कैसा ज्ञान मुझ को कहा, हे कृष्ण मम तात।। 7552

कृष्ण चन्द्र तब बात बताई, अगले पाठ में है जो आई।

गीता का दसवां अध्याय 'विभूति योग'

दो०–व्योम में प्रभु हैं रम रहे, और वे व्योमातीत।
उस प्रभु को जो भजे, उत्तम योगी चीत।। 7553

[3]सतत भजन जो करत है, उस प्रभु का मीत।
ज्ञान मिले उस को बहु, और मुक्ति भी चीत।। 7554

1. श्रीमद्भगवद्गीता ९.३०–३४ 2. श्रीमद्भगवद्गीता १०.८
3. श्रीमद्भगवद्गीता १०.१०

यदि कठिन तुझ को लगत, यह योग की रीत।
सुगम मार्ग मैं इक कहूँ, उसकी सुन लो रीत।। 7555

अर्जुन को इस विध कहा, कृष्ण चन्द्र उस काल।
निराकार में यदि न दिखे, सगुण में प्रभु भाल।। 7556

प्रभु जगत में रम रहे, हर वस्तु में मीत।
वहीं प्रभु को देखना, यह सनातन रीत।। 7557

प्रत्येक वस्तु में हैं प्रभु, सगुण रूप का ध्यान।
यह सुगमतर रीत है, इस को लेवो जान।। 7558

कण कण में प्रभु रम रहे, शून्य न कोई स्थान।
हे अर्जुन! तू सगुण में, कर ले प्रभु का ध्यान।। 7559

कहा अर्जुन "मैं भ्रांति में, पड़ गया हूँ मीत।
सारे जगत में किस तरह, ध्यान करे मम चीत"।। 7560

[1]कहा कृष्ण "इक और भी, रीत है मेरे मीत।
विशेष 'विभूति' नाथ की, उस को ले जन चीत"।। 7561

अर्जुन ने तब पूछ लिया, "हे कृष्ण मम मीत।
क्या विभूति होत है, जिस को लूँ मैं चीत"।। 7562

कहा कृष्ण "मैं तुझे बताऊँ, विभूतिन का मैं ज्ञान कराऊँ।
विशेष गुण जब जिसमें पाओ, शक्ति ईश्वर की वह ध्याओ।
इस विध ईश्वर का आभास, होगा तुझे सर्वत्र खास।

1. श्रीमद्भगवद्गीता १०.४१

जल व थल में सर्वत्र मीत, लो तुम प्रभु को इस विध चीत"।
कहा अर्जुन "उन सब का ज्ञान, स्पष्ट बताओ तो लूँ मैं जान"।
कहा कृष्ण "सुनो ला ध्यान, स्पष्ट रूप से दूँ मैं ज्ञान।
देवों में तुम सकोगे देख, मनुष्यों में भी लोगे पेख।
पशुओं में तुम को दिख पाये, जड़ में भी तो वही लखाये।
देवों में विष्णु लो जान, ज्योतियों में सूरज पहचान।
मरुतों में है मरीचि भाई, शशी नक्षत्रों में है आई।
पित्रों में अर्यमा लो जान, संयमों में यम को पहचान।
महर्षियों में भृगु को देख, चित्ररथ गन्धर्वों में पेख।
वृक्षों में अश्वत्थ महान, देवर्षियों में नारद जान।
दैत्यों में प्रह्लाद है भाई, कपिल सिद्धों में कहलाई।
मुनियों में व्यास लो जान, [1]उशना कवियों में पहचान।
शस्त्र धारियों में है राम, वृष्णियों में मैं खुद हूँ शाम।
पाण्डवों में मैं अर्जुन देखूँ, हाथियों में ऐरावत पेखूँ।
मृगादियों में मृगेन्द्र सोहे, मनुष्यों में नराधिप होये।
गरुड़ पक्षियों में है मीत, मकर झषाओं में लो चीत।

दो०–ईश्वर को हो देखना, लो विभूतिन में पेख।
विभूतिन का न अंत है, लेंत जिज्ञासु देख"।। 7563

श्रवण विभूतियों का कर, कहा अर्जुन हे मीत।
जो सुना मैं आप से, मन मम भयी प्रतीत।। 7564

1. "उशना कवि" अवश्य ही महान कवि हुआ होगा जिस का उल्लेख केवल यहां पर गीता में ही भगवान की विभूतियों में मिलता है, अन्यत्र नहीं। इस कवि की कोई भी रचना इस समय उपलब्ध नहीं। संभवतः भविष्य में कहीं से प्राप्त हो जाये।

ये विभूतियां मित्र मम, ईश्वर को प्रकटायें।
सब परोक्ष रूप में, समक्ष न दिखलायें।। 7565

मैं तो चाहूँ देखना, ईश्वर को हे तात।
वह योग बतलाइये, हो दर्शन साक्षात।। 7566

इस का उत्तर जो दिया, कृष्ण चन्द्र उस काल।
पाठ अगले में देखें, यह था कठिन सवाल।। 7567

गीता का ग्यारहवां अध्याय 'विश्वरूप दर्शन' योग

अर्जुन चाहे देखना, ईश्वर को साक्षात।
उत्तर दीना कृष्ण ने, हे अर्जुन मम तात।। 7568

[1]ईश्वर को न देख सकें, ये आखें तव मीत।
दिव्य दृष्टि मैं दूँ तुझे, करो तभी प्रतीत।। 7569

इस प्रकार तब कथन कर, श्री कृष्ण ने उस काल।
अर्जुन को दिखला दिया, विराट रूप तत्काल।। 7570

दिव्य दृष्टि से देखा, अर्जुन ने जो रूप।
कथनी में न आ सके, था इक दृश्य अनूप।। 7571

सहस्त्रों सूर्य उदय हों, एक दम आकाश।
[2]उन का जिमि प्रकाश हो, उस से अधिक प्रकाश।। 7572

देखा अर्जुन क्या तब, समस्त जगत उस माँझ।
[3]अनेक विध विभक्त सभी, उसी रूप के माँझ।। 7573

1. श्रीमद्भगवद्गीता ११.८ 2. श्रीमद्भगवद्गीता ११.१२ 3. श्रीमद्भगवद्गीता ११.१३

न अन्त न ही मध्य वहां, न ही आदि दिख पात।
ऐसा विश्व रूप निरख, [1]भया रोमाञ्चित गात।। 7574

चारों दिक् वह तेज है, समता जिस की नाहिं।
[2]अर्जुन कहा न निरख सकूँ, कथ सकूँ कुछ नाहिं।। 7575

द्युलोक और पृथ्वी सब, तथा बीच का भाग।
इक ईश्वर से व्याप्त है, सर्व दिशा यह लाग[3]।। 7576

मैं कहां पर हूँ खड़ा, होश मुझे न लेश।
मुझे संभालो हे प्रभो, हे कृष्ण सर्वेश[4]।। 7577

मैं तुम्हें था मानता, अपना बन्धु मीत।
क्षमा करो वह भूल मम, अब लिया सब चीत[5]।। 7578

मुझे अब पहला रूप ही, पुनः दर्शाओ नाथ।
कृपा करो हे जगत पिता, भया हूँ मैं सनाथ[6]।। 7579

तब कृष्ण ने स्वरूप निज, प्रकट किया उस पास।
स्वस्थ भया तब अर्जुन, उपजा मन विश्वास[7]।। 7580

कहा कृष्ण "हे मित्र प्यारे, दृष्टि गत जो भया तिहारे।
देव भी इस को सकें न देख, तप आदि से को सके न पेख"[8]।
क्या विधि फिर इस की होय, पाठ अगले में देखें सोय।

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता ११.१६
2. श्रीमद्भगवद्गीता ११.१७
3. श्रीमद्भगवद्गीता १०.२०
4. श्रीमद्भगवद्गीता ११.२५
5. श्रीमद्भगवद्गीता ११.४१
6. श्रीमद्भगवद्गीता ११.४५
7. श्रीमद्भगवद्गीता ११.५०,५१
8. श्रीमद्भगवद्गीता ११.५२–५३

गीता का बारहवां अध्याय 'भक्ति योग'

दो०-'विश्व रूप' जो ईश का, किमि सके को देख।
इस का उत्तर कृष्ण जो, दीना, लें अब पेख।। 7581

अर्जुन ने जो रूप था देखा, विरले किसी ने ही हो पेखा।
विधियां जप तप पाठ अनेक, सफल न हो उनमें कोई एक।
कौन उपाय फिर ऐसा होय, 'विश्वरूप' देख सके जन सोय।
कहा कृष्ण "मैं विधि बतलाऊँ, 'भक्ति योग' की रीत जताऊँ।
'अनन्य भक्ति' जो जन अपनाय, योग में 'युक्ततम' कहलाय।
'युक्ततम' भक्त के गुण अनेक, वर्णित हैं इस पाठ प्रत्येक।
'पैंतीस' गुण जो हैं गिन पाये, अर्जुन को भगवान बतलाये।
उन्हें भक्त जो ले अपनाय, "विश्वरूप" को देख वह पाय।

दो०-पैंतीस गुण जो हैं कथे, गीता में भगवान।
उन सभी को ध्यान से, ले जिज्ञासु ज्ञान।। 7582

"अर्पित करे मन बुद्धि को", प्रभु प्रति मम मीत।
प्रथम गुण है यही कथा, भजे प्रभु सप्रीत।। 7583

"नित्य रहे जो युक्त जन", व्यवधान न हो पाय।
गुण जिसमें यह दूसरा, प्रभु कृपा वह पाय।। 7584

"श्रद्धा परम मन में बसे", भजन करे सप्रीत।
गुण जिस में यह तीसरा, योग युक्त वह मीत[1]।। 7585

1. श्रीमद्भगवद्गीता १२.२

"इन्द्रिय संयम भक्त का", दृढ़ नेम यह जान।
गुण चौथा यह जानिये, इसे आवश्यक मान।। 7586

"सम बुद्धि जो जन रहत", सर्वत्र सब प्रति मीत।
गुण पंचम तो है यही, अगर प्रभु से प्रीत[1] ।। 7587

"सर्वभूत रत जो भये", बिन भेद के मीत।
गुण जिसमें यह छटवां, जन विशेष लो चीत।। 7588

"ईश अर्पित सब कर्म हों, प्रभु परायण मीत"।
गुण सातवां जिस में भये, भक्त उत्तम वह चीत।। 7589

ध्यान धरे निज इष्ट का, अनन्य भाव से जोय।
गुण अष्टम उस भक्त में, प्रभु दर्शन को गोय[2] ।। 7590

और गुण जो कृष्ण कहे, भक्ति के मम मीत।
उन को भी हैं कथ रहे, श्रद्धा से लो चीत।। 7591

नवम गुण अब जानिये, "अर्पित करे निज आत्म"।
प्रभु चरणों में भक्ति से, मिल जाय परमात्म[3] ।। 7592

दसवां गुण महान है, "सर्वभूत अद्वेष"।
प्रिय बने सब जगत का, इस में शक न लेश।। 7593

"निरहंकारी जन बने", गर्व न राखे चित्त।
गुण ग्यारहवां यह कथा, कृष्ण चन्द्र हे मित्त।। 7594

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता १२.४
2. श्रीमद्भगवद्गीता १२.६
3. श्रीमद्भगवद्गीता १.५२.३१–३३ "मय्येवात्मानमर्पय तदा मोक्षमवाप्स्यसि"।

"करुणा भाव जिस में भये", भक्त उत्तम लो जान।
गुण द्वादश जानिये, भक्त की यह पहचान।। 7595

"भक्त निर्मम होत है", मोह माया से हीन।
तेरहवां गुण यह भक्त का, इस को भी लो चीन।। 7596

"मैत्री सब से राखिये", शत्रु होय न कोय।
गुण चौदहवां जब भये, सर्व प्रिय जन होय।। 7597

"दुख सुख में जो सम रहे", जन भक्त मम मीत।
उस पुरुष सम को भये, गुण पंदरहवां चीत[1] ।। 7598

"जन संतोषी सदा सुखी", यह अटल सिद्धांत।
गुण सोलहवां जो गहे, रहे सदा ही शांत।। 7599

"भक्त होय संयतात्मा", संयमित जीवन होय।
नेम सतरहवां धार यह, पथ मोक्ष का गोय।। 7600

"भक्ति में दृढ़ निश्चय हो", प्रमाद करे न लेश।
गुण अठारहवें पर चल, रहत न लेश क्लेश[2]।। 7601

योगी का स्वभाव यह, "उद्विग्नकारी न होय"।
गुण उन्नीसवां है यही, सुखकर सब को होय।। 7602

"उद्विग्न हो न स्वयं भी", देख अन्य के दोष।
गुण बीसवां है यही, भक्त रहे निर्दोष।। 7603

1. श्रीमद्भगवद्गीता १२.१३ 2. श्रीमद्भगवद्गीता १२.१४

"हर्षामर्ष न छू सके, भय आदि भी मीत"।
गुण इक्कीसवां जान लो, यह योगी की रीत[1]।। 7604

गुण बाइसवां जान लो, भक्त आकांक्षा रहित।
"जन 'अनपेक्ष' कहलाय", इस गुण के जो सहित।। 7605

"तन मन से जो शुद्ध हो", भक्त वही लो जान।
जानो गुण यह तइसवां, गीता करत बखान।। 7606

"जीवन में हो दक्षता", निज कर्म में मीत।
गुण चौबीसवां है यही, ले भक्त चित्त चीत।। 7607

"उदासीन जो जन भये, लाभ हानि से मीत"।
उस योगी में होत है, गुण पच्चीसवां चीत।। 7608

दुख में दुखी होंय सभी, योगी दुखी न होय।
'गत व्यथा' गुण छबीसवां, योगी का वह सोय।। 7609

जन आरंभे कर्म को, निज इच्छा अनुसार।
"सर्वारंभपरित्यागी", योगी सब प्रकार।। 7610

सताइसवां गुण है यही, योगी का लो जान।
मोक्ष उसे ही मिलत है, कथन कीन भगवान[2]।। 7611

"हर्ष न योगी के चित्त, ना ही होत द्वेष"।
यह गुण अठाइसवां, योगी मुक्त क्लेष।। 7612

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता १२.१५
2. श्रीमद्भगवद्गीता १२.१६

"शुभाशुभ परित्यागी", योगी जग प्रसिद्ध।
यह गुण ऊनतीसवां, योगी में जो सिद्ध[1]।। 7613

योगी का व्यवहार इक, "मित्र व शत्रु साथ।
समदृष्टि योगी सदा", योगी जग का नाथ।। 7614

गुण तीसवां जानिये, "साम्यता" का जोय।
इसी गुण के कारणे, सर्व प्रिय वह होय।। 7615

"मान अपमान में भी, सम योगी रह पाय"।
चाह न उस को मान की, न अपमान सताय।। 7616

इकतीसवां यह गुण है, योगी में जो होय।
जग भूखा है मान का, न योगी ऐसा होय।। 7617

"शीतोष्ण में सम रहत", योगी का स्वभाव।
सहन करत वह शीत को, ग्रीष्म भी सह चाव।। 7618

गुण बतीसवां है यही, विरले में जो होय।
योगी तपस्वी जानो, नहीं विचलित होय।। 7619

गुण तैतीसवां है कहा, गीता में भगवान।
"बहुसंगी न होत वह", योगी को लो जान।। 7620

मौन गुण महान होय, "योगी मौनी होय"।
मननशीलता जानिये, ज्ञान की जननी सोय।। 7621

1. श्रीमद्भगवद्गीता १२.१७

चौंतीसवां यह गुण है, समाधि का जो सार।
इस गुण के अभ्यास से, भव से हो जन पार।। 7622

अन्तिम गुण अब हम कहें, "योगी स्थिरमति होय"।
स्थित प्रज्ञता योग में, कृष्ण बताई सोय।। 7623

पैंतीस गुण ये जानिये, जिस योगी में होंय।
प्रभु दर्शन के योग्य तब, बन सकेगा सोय।। 7624

ईश्वर को हो देखना, प्रकृति में लो जान।
उस प्रकृति का ज्ञान भी, आगे दीन भगवान।। 7625

प्रकृति को कहें क्षेत्र है, है क्षेत्रज्ञ भगवान।
इन दोनों का ज्ञान जो, [1]ज्ञान उसी को जान।। 7626

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता १३.२
योगी भक्त के ३५ गुण :–
1. मन बुद्धि भगवान के अप्रण करना।
2. नित्य युक्त रहना।
3. परम श्रद्धा होना।
4. इन्द्रियों का संयम।
5. सर्वत्र सम बुद्धि।
6. सर्वभूतरत अर्थात सब प्राणियों से प्रेम।
7. सब काम ईश्वर अर्पण करने अर्थात् भगवत परायण रहना।
8. अनन्य योग से ध्यान करना।
9. आत्मा को भगवान के अर्पित करना।
10. सर्व भूतों में अद्वेष भावना।
11. निरहंकारी रहना।
12. करुणा भावना।
13. निर्मम रहना।
14. सर्वत्र मैत्री भाव।
15. सुख दुख में सम रहना।
16. संतोष।
17. संयतात्मा।
18. दृढ़निश्चयता।
19. उद्विग्न कारी न होना।
20. स्वयं अद्विग्न न होना।
21. हर्षामर्ष से रहित।
22. आकांक्षा रहित होना।

आगे देखें . . .

गीता का तेरहवां अध्याय 'क्षेत्र क्षेत्रज्ञ विभाग योग'

पुरुष प्रकृति में बसत है, प्रकृति पुरुष के साथ।
इन दोनों के संबंध की, जान अनादि गाथ।। 7627

सर्व जगत को दीखता, वह क्षेत्र कहलाये।
है उस में जो आत्मा, क्षेत्रज्ञ वह कहाये।। 7628

शरीर को कहें क्षेत्र है, आत्मा क्षेत्रज्ञ जान।
दोनों का ही ज्ञान जो, गीता कीन बखान।। 7629

क्षेत्र सविकारी होत है, बहु तत्व का समुदाय।
महाभूत अहंकार का, बुद्धि भी संग आय।। 7630

अंग प्रत्यंग देह के, और उनमें जो ज्ञान।
विषय भी उन के जान लो, सभी क्षेत्र पहचान।। 7631

[1] क्षेत्रज्ञ है परमात्मा, अविकारी वह मीत।
निर्गुण और वह अव्यय, अलिप्त देह में चीत।। 7632

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता १३.३१–३२

---

23. तन, मन से शुद्ध।
24. कर्मों में दक्षता।
25. लाभ हानि से उदासीन।
26. गतव्यथा लाभ हानि से दुखी न होना।
27. सर्वारंभ परित्यागी होना अर्थात इच्छा रख कर कर्म न करना।
28. द्वेष भावना का परित्याग।
29. शुभाशुभ परित्याग।
30. मित्र शत्रु प्रति समभाव।
31. मान अपमान में सम भाव।
32. शीतोष्ण में सम रहना।
33. बहु संगी न होना।
34. मौन रहना।
35. स्थित प्रज्ञता।

सूक्ष्म रूप आकाश जिमि, सर्व जगत के माँझ।
लिपायमान न होत है, आत्मा तिमि देह माँझ।। 7633

[1]यह ज्ञान जो है कथा, ले भक्त जो पाय।
मोक्ष पद उपलब्ध उसे, परम गति को जाय।। 7634

उस भक्त के चित्त में, उदित ज्ञान लो मान।
उस ज्ञान का वर्णन, गीता में लो जान।। 7635

कर्म कसौटी ज्ञान की, ज्ञान कर्म से जान।
उस के अन्तर ज्ञान जो, लेता जग पहचान।। 7636

[2]उन्नीस गुण जो हैं लिखे, भगवद्गीता माँझ।
ज्ञानी में वे सब मिलें, साधारण के न माँझ।। 7637

ज्ञानी का गुण प्रथम है, मन रहित हो सोय।
दूजा गुण भी जान लो, दम्भरहित वह होय।। 7638

अहिंसक ज्ञानी होत है, क्षमाशील भी सोय।
आर्जवम गुण विशेष है, पूर्णज्ञानी जो होय।। 7639

आचार्य की उपासना, ज्ञानी जन में मीत।
शौच कर्म उस को प्रिय, जग ले मन में चीत।। 7640

स्थित प्रज्ञता विशेष है, ज्ञानी का गुण जान।
उस का जो संकल्प हो, सदा अटल लो मान।। 7641

1. श्रीमद्भगवद्गीता १३.३४
2. श्रीमद्भगवद्गीता १३.७–११

आत्म विनिग्रह और गुण, विषयों से वैराग।
अहंकार का न नाम भी, होय न उस में राग।। 7642

दोषदर्शी होत वह, जन्म मृत्यु न व्याध।
जरा अवस्था निरख उसे, ग्लानि होत अगाध।। 7643

पुत्र दारा गृहादि में, आसक्ति उसे न हो।
और सदा समचित रहे, इष्टानिष्ट कुछ हो।। 7644

भक्ति अव्यभिचारिणी, अनन्य भाव से होय।
विविक्त देश में रहत वह, जन समूह न गोय।। 7645

आत्मज्ञान में निरत, नित्य रहे वह मीत।
तत्व ज्ञान विचारना, हर दम उस की रीत।। 7646

ज्ञानी का स्वभाव यह, गुण व उस का जान।
देह को क्षेत्र जानता, क्षेत्रज्ञ को भगवान।। 7647

निर्गुण है परमात्मा, देह न निर्गुण होय।
[1]गुण होत वे कौन से, पाठ अगले में सोय।। 7648

---

1. ज्ञानी का स्वभाव व गुण–
   1. अमानित्व
   2. अदम्भित्व
   3. अहिंसा
   4. शान्ति
   5. आर्जवम
   6. आचार्य उपासना
   7. शौच
   8. स्थैर्य
   9. आत्मविनिग्रह
   10. इन्द्रियार्थों में वैराग्य
   11. अनहंकार
   12. जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि में दोषानुदर्शन

आगे देखें . . .

गीता का चौदहवां अध्याय 'गुणत्रय विभाग योग'

आत्मा तो है निर्गुण, देह सगुण लो जान।
आत्मा अंश ईश का, देह को प्रकृति मान।। 7649

प्रकृति के हैं तीन गुण, रज तम सत पहचान।
उन तीनों का वर्णन, विशद कीन भगवान।। 7650

आत्मा के वे तीन गुण, बांध रखें इस देह।
विकार रहित जो आत्मा, वशीभूत गुणों के वह[1]।। 7651

वश में किस विध होत है, अव्ययी आत्मा जोय।
गीता करत स्पष्ट यह, पढ़े जो जाने सोय।। 7652

सत्व गुण बांध रखत है, आत्मा को इस देह।
देता संग है सुख का, और ज्ञान का वह।। 7653

रागात्मक है रजोगुण, तृष्णा उस के संग।
कर्म भी उस के साथ ही, देही पै उन का रंग।। 7654

तमोगुण अज्ञानमय, मोह में डाले सोय।
[2]प्रमाद आलस्य निद्रा, इन का बन्धन होय।। 7655

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता १३.३१
2. श्रीमद्भगवद्गीता १४.६–८

13. पुत्र, दारा, गृह आदि में असक्ति
14. इष्टानिष्ट में समचित
15. अनन्ययोग द्वारा अव्यभिचारी भक्ति
16. विविक्त देश में वास
17. जन संसद में अरति
18. अध्यात्म ज्ञान में नित्य निरत रहना
19. तत्वज्ञानार्थ दर्शनम्

इन तीन का प्रभाव जो, हो देही पै मीत।
वर्णन कीन भगवान ने, लो गीता में चीत।। 7656

[1]ऊर्ध्व गति हो सत्व से, रजो से मध्यम जान।
होती तम से अधोगति, गीता करत बखान।। 7657

तीन गुणों के संग से, हो छुटकारा मीत।
होता जीव मुक्त तभी, लो यह मन में चीत[2]।। 7658

तीन गुणों से मुक्त जब, ज्ञानी जन हो पाय।
क्या पहचान उस पुरुष की, जग को जो दिख पाय[3]।। 7659

अर्जुन ने यह प्रश्न जब, कीन कृष्ण से मीत।
जो उत्तर भगवान तब, दीना लो वह चीत।। 7660

अर्जुन को कहा कृष्ण ने, हे पार्थ लो जान।
त्रिगुणातीत जो पुरुष हो, उस की यह पहचान।। 7661

मान और अपमान में, इक सम उस का चित्त।
भेद नहीं उस को जरा, शत्रु होय व मित्त।। 7662

अनन्य भाव से करत वह, सदा प्रभु का ध्यान।
परब्रह्म का रूप वह, जाने उसे जहान।। 7663

परब्रह्म क्या होत है, अर्जुन का यह सवाल।
इस का उत्तर जानिये, अगले पाठ इस काल।। 7664

1. श्रीमद्भगवद्गीता १४.१८
2. श्रीमद्भगवद्गीता १४.२०
3. श्रीमद्भगवद्गीता १४.२१
4. श्रीमद्भगवद्गीता १४.२५–२६

गीता का पंदरहवां अध्याय 'पुरुषोत्तम योग'

परब्रह्म का रूप क्या, जिज्ञासु जान्न चाहे।
किस प्रकार वह प्रकट हो, यह भी जानन चाहे।। 7665

परब्रह्म पुरुषोत्तम, विशेष पुरुष लो जान।
सृष्टि में तो है नहीं, उस के कोई समान।। 7666

[1]उस का रूप तो मिलत कहां, न जिस का आदि अन्त।
व्याप रहा जो विश्व में, वेद कहें बेअन्त।। 7667

[2]परब्रह्म को खोजता, लेता उस को पाय।
परब्रह्म वह होत है, लौट न जग में आय।। 7668

[3]क्षर अक्षर जो सृष्टि है, इस से विलक्षण जान।
उसे "पुरुषोत्तम" कहत हैं, इसी कारण से मान।। 7669

[4]सूर्य में जो तेज है, वा चन्द्र में जान।
अग्नि में जो तेज है, वह वहीं से मान।। 7670

अर्जुन चाहे जानना, ब्रह्म किमि दिख पाय।
श्री कृष्ण जो था कहा, गीता वह दर्शाय।। 7671

कहा कृष्ण "हे अर्जुन प्यारे, यत्न करें जो योगी सारे।
अपने भीतर देख वे पायें, सफल मनोरथ वे हो जायें।

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता १५.२
2. श्रीमद्भगवद्गीता १५.४
3. श्रीमद्भगवद्गीता १५.१८
4. श्रीमद्भगवद्गीता १५.१२

पर यह भी बात है मेरे मीत, "अकृतात्मा" को न हो प्रतीत।
[1]यत्न चाहे कितना कर पाये, सफल "अकृतात्मा" न हो पाये।
अव्यय पद को वह ही पाये, स्थित प्रज्ञ जो नर हो जाये।
दु:ख सुख जो द्वन्द्व कहलायें, "कृतात्मा" के वश में आयें।
[2]ऐसा पुरुष ब्रह्म को पाता, अव्यय पद में स्थिर हो जाता।
सभी हृदयों में ब्रह्म है मीत, 'कृतात्मा' ही करत प्रतीत।
शक्तियां सब उस से उपजायें, वेद से ज्ञान उसी का पायें"।
"कृतात्मा" पुरुष किमि हो पाय, प्रश्न यह जन के मन में आय।
अगले पाठ उत्तर मिल पाय, गीता में जो कृष्ण कह पाय।

गीता का सोलहवां अध्याय 'दैवासुरसंपद्विभाग योग'

ब्रह्मपद को जिस होवे पाना, जन्म पाछे वा मुक्त हो जाना।
दैवी संपद संग्रह कर पाय, और आसुरी के निकट न जाय।
दैवी संपद क्या होती मीत, करें हम इस की अब प्रतीत।
दैवी संपद मोक्ष प्रदायी, आसुरी बंधन में ले जायी।
छबीस (26) गुणों का संग्रह जान, दैवी संपद इसी को मान।
इन को करे जो आत्मसात, जन्म पाछे वह मुक्त हो जात।

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता १५.११
2. श्रीमद्भगवद्गीता १५.५
3. श्रीमद्भगवद्गीता १६.५
4. श्रीमद्भगवद्गीता १६.१–३
5. दैवी सम्पत्त के छब्बीस गुण:–
   1. अभय
   2. सत्व संशुद्धि
   3. ज्ञान योग व्यवस्थिति
   4. दान
   5. दम
   6. यज्ञ
   7. स्वाध्याय
   8. तप
   9. आर्जव
   10. अहिंसा
   11. सत्य
   12. अक्रोध
   13. शांति
   14. अपैशुनम्
   15. त्याग

आगे देखें . . .

प्रथम गुण अभय को लो जान, सत्व शुद्धि दूज पहचान।
ज्ञान व योग में स्थित पहचान, तीसरा गुण यह कथा महान।
दम यज्ञ वा दान है आया, त्रय गुण का समुदाय कहाया।
योगी के ये गुण विशेष, आये ढील न इन में लेश।
सातवां गुण स्वाध्याय जान, तप को लेवो आठवां मान।
आर्जव और अहिंसा मीत, गुण आवश्यक लेवो चीत।
ग्यारहवां गुण सत्य पहचान, सत्य बिना सब थोथा जान।
क्रोध से बुद्धि अस्थिर हो जान, गुण अक्रोध बारहवां मान।
शांतमय योगी का हो चित्त, शांति गुण है तेरहवां मित।
पिशुनता तो है दोष महान, योगी अपेशुन सदा हि जान।
बिना त्याग न होता योग, त्यागी होते योगी लोग।
सभी भूतों में ईश्वर वास, भूतदया गुण योग का खास।
लोलुप्ता है दोष महान, सदैव अलोलुप योगी जान।
गुण अठारहवां मार्दव जान, मृदु स्वभाव योगी का मान।
योगी ही शील होय भाई, उन्नीसवां गुण यह कहायी।
चपलता योगी में न होय, गुण बीसवां जान लो सोय।
योगी हो तेजस्वी भाई, गुण इक्कीसवां कथनी में आई।
क्षमाशील योगी पहचानो, गुण बाईसवां यह है जानो।
गुण तईसवां है यह मीत, धृति स्वभाव योगी का चीत।
चौबीसवां गुण शौच पहचान, तन मन से वह शुद्ध लो जान।

16. दयाभूतेषु
17. अलोलुप्त्वं
18. मार्दव
19. ह्री
20. अचापलम्
21. तेज
22. क्षमा
23. धृति
24. शौच
25. अद्रोह
26. नातिमानिता

गुण अद्रोह योगी का खास, उस के मन न द्रोह का वास।
गुण छब्बीसवां अन्तिम भाई, अतिमानिता न उस मन आई।

दो०-छब्बीस गुण जो हैं कहे, दैवी संपत जान।
इन गुणों के विपरीत हि, आसुरी संपत मान।। 7672

जिन में दैवी संपत, वे देव लो जान।
आसुर संपतवान जन, वह असुर लो मान।। 7673

जिस की जैसी श्रद्धा, वैसा ही जन होय।
देवासुर की भिन्नता, श्रद्धा से ही होय।। 7674

श्रद्धा की विवेचना, पाठ अगले में मीत।
श्रद्धा से जो कर्म हो, वे भी वहां लो चीत।। 7675

गीता का सतरहवां अध्याय 'श्रद्धात्रयविभाग योग'

श्रद्धा का ही रूप जन, श्रद्धा ही पहचान।
जिस की जैसी श्रद्धा, जन वैसा लो मान।। 7676

श्रद्धा के त्रय रूप हैं, सात्विक राजस दोय।
तामसिक रूप तीसरा, [1]ज्ञानी जाने सोय।। 7677

सात्विक जन के कर्म क्या, राजस के भी जान।
तमोगुणी के होंय क्या, दी गीता पहचान।। 7678

1. श्रीमद्भगवद्गीता १७.२-३

पांच कर्म में भिन्नता, तीनों की है मीत।
पूजा और आहार में, दान, यज्ञ, तप चीत।। 7679

सात्विक जन ये किमि करें, करें प्रथम बखान।
पाछे राजस तामस, का वर्णन हो जान।। 7680

गीता में भगवान ने, स्पष्ट बताया भेद।
भ्रांति रही न लेश भी, दूर भया सब खेद।। 7681

सात्विक जनों की पूजा जान, देव सात्विक लो उन के मान।
राजस जनों की पूजा जान, यक्ष राक्षस हि इष्ट पहचान।
तामस जनों की पूजा जान, प्रेत व भूत उन के भगवान।
अब सुनिये इन के आहार, भिन्नता पर तब करें विचार।
सात्विक जनों का जो आहार, आरोग्य प्रदाता हर प्रकार।
राजस जनों का जो आहार, रोग प्रदाता बहु प्रकार।
तामस जनों का जो आहार, बासी, रूखा, अशुद्ध आकार।
अब कहें हम यज्ञ की बात, भिन्नता जिसमें है साक्षात।
सात्विक जनों का यज्ञाचार, कामनारहित व वेदानुसार।
राजस जनों का यज्ञाचार, फलेच्छासहित दम्भानुसार।
तामस जनों का यज्ञाचार, विधिहीन होये सब प्रकार।
तप की भिन्नता भी लो जान, मिले गुणों में भेद का ज्ञान।
सात्विक तपस्या जो कर पायें, तन मन वाणी वश में लायें।
राजस तपस्या जो कर पायें, यश व मान वे अपना चाहें।
तामस तपस्या जो कर पाये, अन्य किसी का नाश वे चाहें।
विधि दान की अब बतलायें, तीन गुणों में भेद दिखायें।

सात्विक जन जब करते दान, लें अनुपकारी पात्र जान।
राजस पुरुष जब करते दान, प्रत्युपकार का राखें ध्यान।
तामस जन जिसे देते दान, उस का करते साथ अपमान।
इस विध तीनों गुण समझाय, योगी सात्विक कर्म कर पाय।
सात्विक कर्म न त्याग दिखाये, चाहे जीवन मुक्त हो जाय।
पाठ अगले का यही उपदेश, गीता का अन्तिम आदेश।

गीता का अठारहवां अध्याय 'मोक्ष–सन्यास योग'

दो०–[1]यज्ञ दान तप कर्म को, कभी न त्यागे धीर।
शुद्ध करें ये जीव के, बुद्धि चित्त शरीर।। 7682

सात्विक कर्म हि जन करे, राजस तामस त्याग।
ब्रह्मपद को पा सकत, योग धर्म में लाग।। 7683

नियत कर्म जन नित करे, संग रहित वह होय।
राग द्वेष को त्याग कर, उत्साह धृति सह जोय[2]।। 7684

अहंकार का त्याग कर, उत्साह धृति सह सोय।
सिद्धि असिद्धि में रहे सम, कर्ता सात्विक सोय[3]।। 7685

ब्रह्मकर्म का अब कहें, जो मोक्ष प्रदायी।
उस कर्म को जो करे, हो ब्रह्म ही जायी।। 7686

1. श्रीमद्भगवद्गीता १८.५–११
2. श्रीमद्भगवद्गीता १८.२२
3. श्रीमद्भगवद्गीता १८.१६

[1]नव गुण ब्रह्म कर्म के जान, शम दम तप शौच पहचान।
क्षान्ति, आर्जव, ज्ञान भी संग, विज्ञान, आस्तिक्य ये हैं अंग।
[2]ब्रह्म अवस्था को पाने हेत, विशेष जो गुण हैं वे लो चेत।
जिस योगी में गुण ये आयें, उस योगी की पग रज पायें।
उस योगी के लक्षण जानो, शुद्ध बुद्धि उस की पहचानो।
धृति गुण उस में होत महान, जिस से आत्मिक संयम जान।
[3]शब्द आदि जो विषय कहायें, योगी से वे दूर रह पायें।
राग व द्वेष निकट न आये, विविक्त देश वास कर पाये।
लघ्वाशी योगी हो जाय, तन मन पर संयम कर पाय।
ध्यान में सभी काल बिताये, पर वैराग्य सिद्ध हो जाये।
काम क्रोध से रह कर मुक्त, निर्मम जीवन साधन युक्त।

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता १८.४२, ब्रह्मकर्म के नौ अंग:–
   1. शम 2. दम 3. तप 4. शौच
   5. क्षान्ति 6. आर्जव 7. ज्ञान 8. विज्ञान
   9. आस्तिक्य
2. श्रीमद्भगवद्गीता १८.५१–५३
3. ब्रह्मभूत अवस्था को प्राप्त, मोक्षसन्यासी अर्थात पूर्णकामी योगी के लक्षण:–
   1. शुद्ध बुद्धि से युक्त
   2. धृति गुण द्वारा आत्मा पर संयम
   3. शब्द आदि विषयों का त्याग
   4. राग और द्वेष से रहित
   5. विविक्त सेवी
   6. लघ्वाशी
   7. वाणी, शरीर और मन पर संयम
   8. नित्य ध्यान योग में लग्न
   9. वैराग्य की प्राप्ति
   10. अहंकार, बल का दर्प, काम क्रोध आदि से मुक्त
   11. निर्मम
   12. शांत

[1]रहता शांत आकाश समान, "मोक्ष–सन्यासी" सिद्ध पहचान।
[2]उस का गुण गीता बतलाये, परम भक्त योगी कहलाये।
परम तत्व जो ईश्वर भाई, उस को ज्ञान वही मिल जाई।
ईश्वर में ही जाय समाय, आवागमन में वह न आय।

–इति गीता–

10. महाभारत का युद्ध

(आर्य कुलों का नाश)

श्रीकृष्ण का निजधाम गमन और द्वापर युग का अन्त

द्वापर युग गीता बन पायी, प्रसिद्धि उस ने जग में पायी।
कृष्ण चन्द्र का यह उपदेश, विस्तृत भया वह देश विदेश।
कृष्ण का द्वारिका में था राज, देश में आर्यों के बहु राज।
सभी थे वे समृद्ध महान, आर्यों की थी जग में शान।
उन के नाम भी लें हम जान, इस युग का तब होवे ज्ञान।
उस काल का भारत जानो, अनेक समृद्ध राज्य पहचानो।
'हस्तिनापुर' व 'मगध' का राज, 'इन्द्रप्रस्थ' का था बहु साज।
'गंधार' और 'कंबोज' लो जान, 'सौवीर' और 'पंचाल' पहचान।
'मत्स्य' वा 'बाल्हिक' लेवो जान, सौराष्ट्र शक्तिशाली मान।
'मालव' 'सिंधव' 'निषद' के राज, 'कच्छ' 'विदर्भ' 'मथुरा' राज।
'शूरसैन' व 'विदिशा' जान, 'प्रागज्योतिष' व 'सुह्म' पहचान।

1. 'मोक्ष–सन्यास' उस अवस्था का द्योतक है जब योगी पूर्ण सिद्ध हो जाता है और उसे 'मोक्ष' का भी ध्यान नहीं रहता। भाव वह 'सदा मुक्त' ईश्वर रूप हो जाता है।
2. श्रीमद्भगवद्गीता १८.५०–५५

'उत्कल' 'कामरूप' 'विदेह', 'औड्र' 'आंध्र' 'आवर्त' थे येह।
[1]'दशार्ण' 'कुन्तल' 'भद्र' प्रदेश, 'कलिंग' 'कर्नाटक' के भी देश।
और भी थे तब राज्य अनेक, था 'अनवर्त' भी उन में एक।
सभी राज्य थे समृद्ध महान, आर्यवर्त की शक्ति जान।
आर्यों की थी जग में शान, सब जग करता उनका मान।
शान तभी तक टिक वह पावे, जब तक व्यसन न उस में आवे।
समृद्धि संग दोष भी आये, आर्य जाति में छा जो पाये।
समृद्धि आई दोष भी लाइ, द्यूत क्रीड़ा मादकता छाइ।
दोषों से जन हो बरबाद, कुल को दोष करें बरबाद।
दोषों से हो देश बरबाद, दोषों से परलोक बरबाद।
दोषों से सर्वस्व बरबाद, आयें दोष रहे कुछ न बाद।
द्यूत क्रीड़ा और मद्य का पान, आर्यों में बहुतायत जान।
परस्पर वैमनस्य भी दोष, इस से भी न रहे कुछ होश।
इन्द्रप्रस्थ में पांडव राज, हस्तिनापुर में कौरव राज।
वैमनस्य की जगी चिंगारी, धधक पड़ी जो आग थी भारी।
आर्यवर्त के सारे राज, सभी सहायक बने सहसाज।

---

1. द्वापर युग में प्रसिद्ध राज्य:–

1. हस्तिनापुर	2. मगध	3. इन्द्रप्रस्थ	4. गंधार
5. कंबोज	6. सौवीर	7. पंचाल	8. मत्स्य
9. बाल्हिक	10. सौराष्ट्र	11. मालव	12. सिंधव
13. निषध	14. कच्छ	15. विदर्भ	16. आवर्त
17. मथुरा	18. शूरसैन	19. विदिशा	20. दशार्ण
21. प्रागज्योतिष	22. सुह्म	23. उत्कल	24. कामरूप
25. विदेह	26. औड्र	27. कुन्तल	29. भद्र
30. कलिंग	31. कर्नाटक	32. अनवर्त	

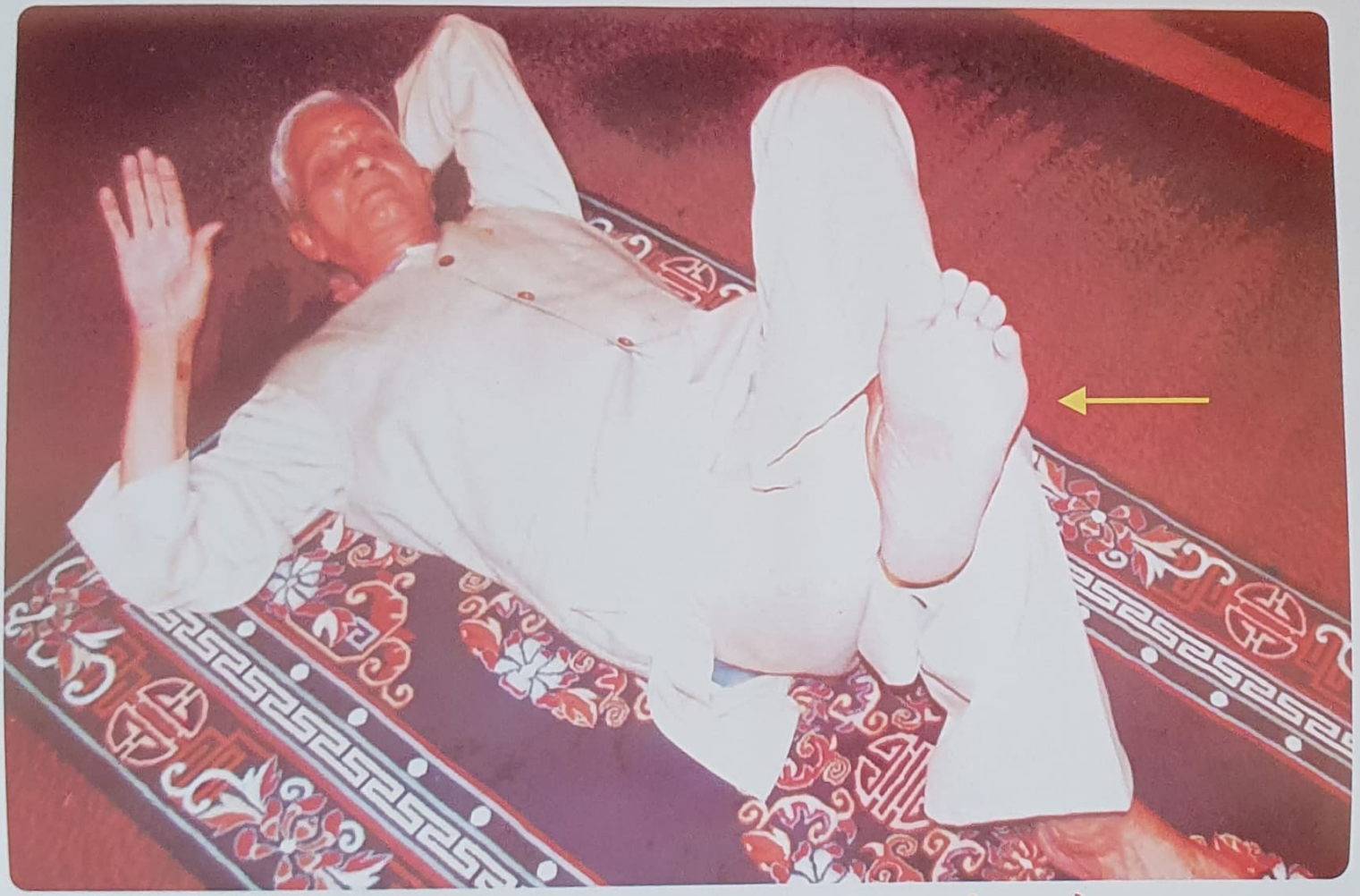

श्री भगवान कृष्ण चन्द्र की विश्राम मुद्रा (जब भील व्याधि का तीर उनके चरण पर लगा)

(दोहा सं॰ 7687 के सामने)

कुरुक्षेत्र के विशाल मैदान, विश्वयुद्ध था भया महान।
आर्य जाति का भया विनाश, महारथिन का भी भया विनाश।
अस्त्र शस्त्र जो थे उस काल, वे भी रहे न कोई उस काल।
देश में भया अनार्य तब राज, आर्यों के भये समाप्त राज।
ऐसा विनाश न जग कभी देखा, जो था द्वापर में तब पेखा।
आर्यों का संपूर्ण नाश, कृष्ण चन्द्र देख भया हताश।
द्वारिका में उस लौट तत्काल, आश्वस्त की स्वप्रजा उस काल।
प्रभास क्षेत्र वहां से आये, मानसिक शांति जहां मिल पाये।
यादव ओर अन्य सब आये, मनोविनोद वहां कर पाये।
मद्यपान वहां रंग लाया, पी शराब उपद्रव मचाया।
परस्पर भयी जभी लड़ाई, जाति की जाति ही मिट पायी।
कृष्ण चन्द्र ने जब यह देखा, विधाता की इच्छा को पेखा।
उसी क्षेत्र में करन विश्राम, विश्राममुद्रा मे लेटे आन।

दो०–दूरी से इक भील ने, भूल से मारा तीर।
कृष्ण चन्द्र के पैर पर, आ लगा वह तीर।। 7687

उसी तीर के कारणे, कृष्ण त्यागा देह।
आर्य जाति की जानिये, विनाश कथा है येह।। 7688

द्वापर युग की समाप्ति, भयी इसी के साथ।
श्रवण करें कलिकाल में, आर्य जाति की गाथ।। 7689

द्वापर युग का वर्णन, भया संपूर्ण आज।
संवत बी सौ इकासठ, वीरवार है आज।। 7690

[1]फाल्गुण मास तिथि छः को, प्रभु की दया महान।
लिपिक से लिखवा रहे, यह इतिहास लो जान। 7691

* * * * *

1. 6 फाल्गुण बृहस्पतिवार संवत विक्रमी 2061 तदनुसार 17 फरवरी सन् ई. 2005

ॐ

श्री योग महादिव्य रामायण

(हिन्दू धर्म का इतिहास)

(सतयुग – त्रेता – द्वापर – कलियुग)

अध्याय चतुर्थ – "कलियुग" में हिन्दू धर्म

1. आर्य धर्म का उत्थान काल

दो० – प्रभु कृपा से लिख रहा, 'सेवक' युग कलिकाल।
जहां प्रथम सुकाल था, पाछे भया दुकाल।। 7692

[1] ऐशिया महाद्वीप में, था आर्यों का वास।
धीरे धीरे हो गया, वहां से फिर प्रवास।। 7693

उन देशों के नाम अब, लिख रहा हूँ मीत।
निकल जहां से आ गये, हो तभी प्रतीत।। 7694

1. प्राचीन नाम जम्बुद्वीप

[1]आपस की ही फूट से, थे भये कमजोर।
निकल वहां से आ गये, आर्य भारत की ओर।। 7695

'अरब' में सभी बसत थे, 'इराक' में भी जान।
'इरान' उन का देश था, व 'तुरकमानस्तान'।। 7696

इन देशों में बसत थे, चिरकाल से मीत।
आर्यों का ही राज्य था, लो यह मन में चीत।। 7697

था उज़्बेकिस्तान भी, और कज़ाकिस्तान।
और देश इक जान लो, वह था किरगिस्तान।। 7698

और देश जो थे तब, जहां आर्य सुल्तान।
ताज़िकस्तान एक था, व अफ़गानिस्तान।। 7699

उन देशों में नाम नहीं, अब आर्यों का मीत।
मिटा दिये सब चिह्न भी, बचे खुचे लो चीत।। 7700

आपस की तो फूट का, होत यही है हाल।
आर्यकुलों का देख लिया, द्वापर में यह हाल।। 7701

कलियुग की अब कहें कथा, जहां प्रथम उत्थान।
परस्पर की हि फूट से, पतन बाद लो जान।। 7702

---

1. जिन-जिन ऐशिया के देशों में आर्यों का वास था उन के वर्तमान नाम ये हैं-
   1. अरब 2. इराक 3. इरान 4. तुरकमानस्तान
   5. उज़्बेकिस्तान 6. कज़ाकिस्तान 7. किरगिस्तान 8. ताज़िकस्तान
   9. अफ़गानिस्तान

लो सुनिये कलि काल का, सकल हाल मम मीत।
आर्यों ने नहीं त्यागी, निज फूट की नीत।। 7703

नाश द्वापर में भया, आर्यों का था मीत।
एक वंश तब बच गया, मगध देश में चीत।। 7704

जरा संध का वंश वह, चला बहुत था काल।
कलियुग में उस वंश का, निरख लें अब हाल।। 7705

नंद वंश के नाम से, कलि में लेवो जान।
उसी वंश में ऊपजा, चन्द्र गुप्त महान।। 7706

नंद वंश का वंशज, चन्द्र गुप्त महान।
[1]आर्य जाति का चन्द्र ने, पुनः कीन निर्माण।। 7707

आर्यों के संरक्षक, हैं स्वयं भगवान।
राम बनें कभी कृष्ण वे, रामलाल लो जान।। 7708

[2]मौर्य वंश की नींव तब, आप धराई नाथ।
इस वंश की डोर जिमि, स्वयं प्रभु के हाथ।। 7709

चन्द्रगुप्त का भाग्य महान, चाणक्य मिला था उस को आन।
नीति निपुण और था विद्वान, मंत्री न जग में उस समान।
कूटनीति में सिद्ध था हस्त, कर्तव्य पालन में सदा ग्रस्त।
था योगी भी एक महान, दृष्टि दिव्य से पाता ज्ञान।

1 चन्द्रगुप्त मौर्य का शासन काल (325 B.C. से 298 B.C.)
2 चन्द्र गुप्त की माता का नाम 'मुरा' था, उसी के नाम पर इस वंश का नाम "मौर्य वंश" हुआ।

भारत का उस स्वप्ना देखा, मन में उस ने दृढ़ कर लेखा।
आर्यवर्त बनाऊँ यह देश, खण्डित रहे न कहीं से लेश।
राम और कृष्ण का यह देश, दुर्बल भया है आज विशेष।
नीति कृष्ण की इस भुलाई, त्यागी राम की इस चतुराई।
ग्रंथ रचा उस एक महान, नीति का जो कोष लो जान।
चारों नीति वहां बतलाईं, साम, दान, दण्ड, भेद कहाईं।
पंचम नीति विशेष दिखाई, 'कुटिलनीति' जो कथनी आई।
चन्द्रगुप्त को सब समझाया, नाद विजय का चन्द्र बजाया।
देश अखण्डित कीना पूर्ण, एक छत्र साम्राज्य संपूर्ण।
उस की सीमा को लो जान, उत्तर में हिमगिरि पहचान।
विन्ध्याचल दक्षिण में भाई, हिन्दुकुश पश्चिम में आई।
बंग की खाड़ी तक प्रदेश, अधीन सकल था उस के देश।
पाटली पुत्र थी राजधानी, चन्द्र की शक्ति सब ने मानी।

दो०–एक छत्र साम्राज्य था, चन्द्र का उस काल।
अखण्डित ऐसा राज्य तो, सुना न पूर्व काल।। 7710

सूरज अस्त था हो रहा, आर्यों का जिस काल।
निकला चन्द्र पूर्व से, भोर कीन तत्काल।। 7711

आर्यों के संरक्षक, राम प्रभु भगवान।
युग युग कृपा कीन उन, रहे धर्म की शान।। 7712

आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 7713

युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, रामलाल लो चेत।। 7714

सताई वर्ष चन्द्र का राज, [1]बिन्दुसार उस का युवराज।
काबिल था वह एक नरेश, कीना विस्तृत उस ने देश।
आर्य धर्म को उस फैलाया, वेदों का प्रचार हो पाया।
पच्चीस वर्ष उस कीना राज, निज पुत्र कीना उस युवराज।
[2]बिन्दुसार का पुत्र अशोक, जिस का नाम जानें सब लोक।
बाप दादे के धर्म को छोड़, अवैदिक धर्म से नाता जोड़।
भया बौध था तभी अशोक, भारत में विस्तारा शोक।
[3]खण्डित खण्डित देश हो पाया, भिक्षुओं ने था घेरा लाया।
भिक्षावृत्ति भयी प्रधान, देश की रक्षा का न ध्यान।
आक्रमक थे देश में आये, खण्डित आर्य संस्कृति कर पाये।

दो०– प्रभु कृपा से था मिला, इतना राज्य विशाल।
अशोक की इक भूल ने, कीना देश बेहाल।। 7715

बुद्ध धर्म के कारणे, दुर्बल भया जब देश।
विदेशी आने लग गये, लेश चली न पेश।। 7716

छोटे छोटे नृप भी, हो गये खुद मुख्तार।
मौर्य वंश की सर्वथा, हो गयी थी हार।। 7717

---

1. बिन्दुसार का शासन काल (298 B.C. से 273 B.C.)
2. अशोक का शासन काल (273 B.C. से 232 B.C.)
3. आर्य धर्म के विपरीत बौध धर्म भिक्षा वृत्ति को प्रधानता देता है। भारत में भिक्षा वृत्ति तभी से चली है।

यूनानी ने देश को, कीना बहुत बेहाल।
[1]यूची वंश इक जंगली, लिया उस देश संभाल।। 7718

देव वाणी व वेद का, था कहीं नहीं मान।
संस्कृति के तब ह्रास का, हो इसी से अनुमान।। 7719

यह तो काला काल था, संस्कृति का तब मीत।
रह पाया कुछ काल ही, हो सबन प्रतीत।। 7720

इसी संकीर्ण काल में, उदय भया इक वंश।
गुप्त वंश जिस को कहें, ऋषि मुनियों का अंश।। 7721

प्रभु कृपा ही जानिये, संकट के इस काल।
आ संभाला धर्म को, दुकाल भया सुकाल।। 7722

हैं धर्म के संरक्षक, राम प्रभु लो जान।
युग युग कृपा कीनी उन, रहे धर्म की आन।। 7723

आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 7724

युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, रामलाल लो चेत।। 7725

---

1. यूची लोग कैसपियन झील के आस पास रहते थे, कुशान वंश से प्रसिद्ध हुए। इस वंश के राजा कनिष्क ने भारत में 120 A.D. से 162 A.D. तक राज्य किया। आर्य धर्म की बहुत हानि हुई। इस ने भी बौद्धधर्म का प्रचार किया।

[1]गुप्त वंश ने डेढ़ सदी, कीना यहां सुराज।
"स्वर्ण युग" भया धर्म का, सभी कहें हैं आज।। 7726

पांच नरेश इस में भये, जिन के ये अभिधान।
[2]चन्द्रगुप्त प्रथम भया, वह सम्राट महान।। 7727

[3]समुद्र गुप्त उस बाद था, समुद्र सम लो मान।
महान कर्म जो उस किये, न उन की उपमा जान।। 7728

'चन्द्र' चन्द्र समान था, 'समुद्र' समुद्र समान।
शक्ति के प्रतीप दोय, कीना देश महान।। 7729

[4]'समुद्र' का भया देहांत, शासक भया 'चन्द्र' उपरान्त।
'विक्रमादित्य' वह भया विख्यात, [5]आदित्य वह विक्रम का साक्षात।
विस्तृत कीन था उस निज राज, कीन विजित नूतन कई राज।
इस राजा के न्याय की बात, जग में सर्वत्र है विख्यात।
कीन चन्द्र बहु वर्ष था राज, कुमार गुप्त था तब युवराज।
[6]कुमार गुप्त जब राज संभाला, सुदृढ़तर शासन उस कर डाला।

---

1. गुप्त वंश का काल (320 A.D. से 480 A.D.)
   गुप्त वंश के सम्राट :–
   1. चन्द्र गुप्त प्रथम 320 A.D. से 330 A.D. 2. समुद्रगुप्त 330 A.D. से 375 A.D.
   3. चन्द्रगुप्त द्वितीय 375 A.D. से 413 A.D. 4. कुमारगुप्त 413 A.D. से 455 A.D.
   5. स्कंधगुप्त 455 A.D. से 480 A.D.
2. चन्द्रगुप्त प्रथम का शासन 320 A.D. से 330 A.D.
3. समुद्रगुप्त का शासन 330 A.D. से 375 A.D.
4. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का शासन 375 A.D. से 413 A.D.
5. आदित्य = सूर्य, विक्रम = शौर्य
6. कुमारगुप्त का शासन काल 413 A.D. से 455 A.D.

अश्वमेघ उस यज्ञ रचाया, विश्वविजयी इस विध बन पाया।
कुमार गुप्त जब स्वर्ग सिधारा, [1]'स्कंध गुप्त' ने राज संभारा।
स्कंध गुप्त का काल विशेष, शत्रु विदेशी आये इस देश।
"हून" मंगोलिया से चलि आये, भारत पर आक्रमण कर पाये।
वीर स्कन्ध ने उन्हें पछाड़ा, भारत से था उन्हें उखाड़ा।
भाग गये तब वे निज देश, भारत पर कृपा प्रभु विशेष।

दो०–भारत वर्ष के हैं प्रभु, सदैव राखन हार।
भारत रक्षा हेत वे, युग युग लें अवतार।। 7730

राम बने कभी कृष्ण वे, राम लाल भी जान।
भक्त होंय जो नाथ के, हो उन्हें यह ज्ञान।। 7731

गुप्त वंश के राज के, गुण कहें अब तात।
संस्कृति वैदिक धर्म की, विस्तृत भयी साक्षात।। 7732

स्वर्णिम युग तभी था आया, नूतन युग उदय हो पाया।
बड़े बड़े वैदिक विद्वान, उन्हें मिला सब विध ही मान।
"ब्राह्मण ग्रंथ" लिखे इस काल, "सूत्र ग्रन्थ" भी लिखे इस काल।
[2]"षड्दर्शन" जो बहु विख्यात, उन का निर्माण भया साक्षात।
'कपिल' रचा "सांख्य" का दर्शन, था 'पताञ्जलि' "योग का दर्शन"।
'गौतम' की "न्याय" की रचना, की 'कनाद' "वैशेषिक" रचना।

1. स्कंध गुप्त का शासन काल 455 A.D. से 480 A.D.
2. षड़दर्शन The six systems of Hindu Philosophy.
   1. कपिल का सांख्य दर्शन
   2. पतांजलि का योग दर्शन
   3. गौतम का न्याय दर्शन
   4. कनाद का वैशेषिक दर्शन
   5. जैमिनी का पूर्व मिमांसा
   6. बादरायण का उत्तरमीमांसा

'जैमिनी' बनाया "पूर्व मिमांसा", 'बादरायण' "उत्तर मीमांसा"।
[1]महाकवि 'कालीदास' को जान, कवियों में विख्यात महान।
नाटक रचे हैं उस बहुतेरे, काव्य ग्रंथ भी हैं न थोरे।
"शकुंतला" नाटक जानिये एक, इस से जन परिचित प्रत्येक।
"मालविकाग्निमित्रम्" जान, "विक्रमोर्वशीयम्" पहचान।
काव्य ग्रंथ उस के लो जान, "रघुवंश" लो इक पहचान।
"मेघदूत" और "ऋतुसंहार", "कुमार संभव" लो चित्त धार।

दो०– और लेखक जो हैं भये, गुप्त राज्य के बीच।
उनका भी वर्णन करें, जो प्रसिद्ध समीच।। 773

दो कवि प्रसिद्ध भये, 'भास' 'सौमिलिक' चीत।
[2]ग्रंथ भास के हैं मिले, लुप्त 'सौमिलिक' चीत।। 774

'अश्वघोष' भी था कवि, इसी काल का मीत।
'बुद्धचरित' इसने लिखा, 'सौंद्रानंद' सप्रीत।। 775

---

1. महाकवि कालीदास की रचनायें :
   1. अभिज्ञान शाकुंतलम्
   2. मालविकाग्निमित्रम्
   3. विक्रमोर्वशीयम्
   4. कुमार संभव
   5. ऋतु संहार
   6. मेघदूत
   7. रघुवंश

2. भास के नाटक
   1. प्रतिज्ञायौगंधरायणम्
   2. स्वप्नवासवदत्तम्
   3. उरुभंगम्
   4. बालचरितम्
   5. दूतघटोतकचम्
   6. कर्णभारम्
   7. दूतवाक्यम्
   8. पंचरात्रम्
   9. मध्यमव्यायोगम्
   10. अभिषेक नाटकम्
   11. प्रतिमानाटकम्
   12. अविमारक
   13. चारुदत्तम्

'भारवी' का भी ग्रंथ है, 'किरातार्जुनीय' जान।
गुप्त वंश के राज्य में, भया प्रसिद्ध महान।। 7736

'भट्टी' कवि ने है लिखा, 'रावण वध' लो जान।
'भट्टी काव्य' के नाम से, है उस की पहचान।। 7737

गुप्तवंश के काल में, 'माघ' भया विख्यात।
लिख पाया 'शिशुपालवध', कृष्ण कथा साक्षात।। 7738

'रत्नाकर' कवि भी भया महान, 'हरिविजय' ग्रंथ उस का जान।
'नैषधचरित' 'हर्ष' लिख पाया, नल दमयन्ती चरित सुहाया।
'बाण' 'कादंबरी' को रच पाया, 'बृहत्कथा' 'गुणाढ्य' लिख पाया।
'दण्डी' का 'दशकुमार' चरित, 'भवभूति' का 'महावीर' चरित।
'बाल रामायण' भी लो जान, 'राजशेखर' की रचन महान।
लिखा 'शूद्रक' ग्रंथ है भाई, 'मृच्छकटिका' जो नाम सुहाई।
'भर्तृहरि' की रचन लो जान, एक ग्रंथ में तीन लो मान।
भारत का यह काल महान, उज्ज्वल काल इसी को जान।
कलियुग का 'उत्थान' यह काल, इस पश्चात 'पतन' का काल।
महाकवि भये इस ही काल, भारत वर्ष था अति खुशहाल।
धन धान्य से था देश खुशहाल, न दरिद्रता का कहीं सवाल।
भारत 'स्वर्ण चिड़िया' विख्यात, घर घर स्वर्ण पड़ा साक्षात।
देश विदेश से था व्योपार, जग का केन्द्र यह था उस काल।
विद्या में प्रसिद्ध यह देश, शिक्षार्थी आते रहे हमेश।
विश्वविद्यालय में पढ़ पाते, पा शिक्षा निज देश सिधाते।

दो०–विश्वविद्यालय बहुत थे, 'नालंदा' आदि मीत।
'तक्ष्यशिला' भी एक था, जग को है प्रतीत।। 7739

'फाइयान' आदि यात्री, चीन देश से आय।
पा कर शिक्षा लौटे, खुद वर्णन कर पाय।। 7740

वर्णन सब ने बहुत है कीना, जो कुछ यहां पर आ कर चीना।
नगर यहां के बहुत विशाल, जनता यहां की बहुत खुशहाल।
मद्यपान का था नहीं नाम, चोरी आदि का न कुछ काम।
वैदिक धर्म तो था प्रधान, बाकी धर्मों का भी मान।
संस्कृत भाषा तब प्रधान, उसी में मिलता सब को ज्ञान।
'सारनाथ' अजन्ता जानो, उच्च शिक्षा के केन्द्र मानो।
हज़ारों छात्रों का वहां वास, असंख्य अध्यापकों का अधिवास।
'दर्शन' 'न्याय' और 'विज्ञान', मिलता आयुर्वेद का ज्ञान।

दो०–साहित्य का सृजन सभी, मुख्य भया इस काल।
वैदिक और संस्कृत का, जो था न पूर्व काल।। 7741

गुप्त काल की देन यह, युग स्वर्ण के बीच।
ऐसा काल न आ सका, फिर भारत के बीच।। 7742

गुप्त वंश के बाद तो, भारत रहा न एक।
बहु राज्यों में बंट गया, था धर्म पर एक।। 7743

बाहर से भी आ गये, कई लोग लो जान।
"हून जाति" भी एक थी, लिया 'वेद' को मान।। 7744

आर्य धर्म में मिल गये, यह इक घटन महान।
आर्य धर्म महान है, लीना हून पहचान।। 7745

भारत के संरक्षक, राम लाल भगवान।
युग युग कृपा कीनि उन, देश की जाय न आन।। 7746

आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 7747

[1]गुप्त काल में योग भी, बहुत प्रचलित जान।
योगी सिद्ध भये तभी, रचे जिन ग्रंथ महान।। 7748

आर्य राज्य जो ऊबरे, गुप्त वंश पश्चात।
नाम उन के हैं ये कथे, आर्य धर्म था तात।। 7749

बाहर से जो हून थे आये, आर्यों में समा वे पाये।
'गुजरात' 'काठियावाड़' लो जान, चालूक्य वंश की कर पहचान।
'मालवा' में थे हून आबाद, आर्य 'थानेसर' में आबाद।
बंगाल आर्यों का राज लो जान, राज और भी कई पहचान।

---

1. योग के जिन ग्रंथों का उल्लेख है उन में प्रमुख ये हैं

1. योग वासिष्ठ
2. शिव संहिता
3. घेरण्ड संहिता
4. गोरक्ष पद्धति
5. हठ योग प्रदीपिका

6. योग उपनिषद् जिन के नाम हैं–

हंस उपनिषद
नाद बिन्दु उपनिषद
ध्यान बिन्दु उपनिषद
अमरित नाद उपनिषद
त्रिशिखिब्रह्मणोपनिषद
क्षुरिकोपनिषद
ब्रह्मविद्योपनिषद

दो०–एक छत्र था राज्य नहीं, धर्म सभी का एक।
एक धर्म के कारणे, देश अखण्डित एक।। 7750

धर्म के रक्षक हैं प्रभु, युग युग लें अवतार।
देख समस्या देश की, आवें ले तन धार।। 7751

युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, रामलाल लो चेत।। 7752

प्रभु कृपा से फिर भया, एक छत्र यहां राज।
'प्रभाकर वर्धन' नाम से, उपजा इक युवराज।। 7753

थानेसर के नगर में, जो प्रसिद्ध स्थान।
उदय भया इक वंश था, 'वर्धन वंश' महान"। 7754

'प्रभाकर वधर्न' भया विख्यात, उसी वंश का नृप साक्षात।
प्रभाकर जब स्वर्ग सिधारा, 'हर्ष वर्धन' तब राज्य संभारा।
अपने राज्य का कीन विस्तार, सब ने मानी उस से हार।
धर्म का था उज्ज्वल काल, सब विध सुखी देश उस काल।

दो०–दृढ़ हर्ष का राज्य था, प्रजा सुखी उस काल।
अभी तलक इतिहास में, प्रसिद्ध हर्ष का काल।। 7755

अन्तिम काल वह हो गया, बुद्ध धर्म अनुयायी।
त्यागा वैदिक धर्म को, यह भूल हो पायी।। 7756

की भूल जो अशोक थी, वही हर्ष ने कीन।
बुद्ध धर्म स्वीकार कर, भारत खण्डित कीन।। 7757

बुद्ध धर्म के कारणे, हर्ष का उजड़ा राज।
बुद्ध धर्म के कारणे, दुर्बल भया समाज।। 7758

सचमुच हर्ष की थी यह भूल, बुद्ध धर्म जो कीन कबूल।
वैदिक धर्म दुर्बल हो पाया, खण्डित सकल देश हो पाया।
वैदिक धर्म का देख [1]ज़वाल, और देश का बदतर हाल।
राजपूत उठ पाये उस काल, शंकर लीना धर्म संभाल।
प्रभु कृपा से ही हो पाया, देश व धर्म को जिन बचाया।

दो०–शंकराचार्य उदय भया, संकट के उस काल।
ब्राह्मण कुल में जन्म कर, लीना धर्म संभाल।। 7759

ब्राह्मण घर था शंकर जाया, शंकर का अवतार कहलाया।
बाल्यकाल में भया विद्वान, धर्म धुरन्धर महा विद्वान।
कुमार भट्ट से शिक्षा पाई, और योग की कीन कमाई।
वेद वेदान्त और पुराण, षड् शास्त्रों का महा विद्वान।
सभी शास्त्र उस के कण्ठस्थ, लिखे थे उस ने बहुत ग्रंथ।
हिन्दू धर्म की देख के हान, ललकारा बौद्धों को उस आन।
बौद्ध यदि समक्ष कोई आता, हार खा कर उस से जाता।
वेदों शास्त्रों से दे प्रमाण, अपने धर्म का करत बखान।
ईश्वर की तुम शरण में आओ, "बुद्धं शरणं" न रट लाओ।

दो०–वेद ईश्वरीय ज्ञान है, और न इस समान।
बौद्ध धर्म को त्याग कर, वैदिक धर्म लो मान।। 7760

1. ज़वाल = अवनति

एक एक कर हार गये, सब बुद्ध अनुयायी।
वैदिक धर्म स्वीकारा, बौद्धता ठुकरायी।। 7761

अखण्ड देश उस कर दिया, वैदिक धर्म अनुसार।
[1]चारों दिशा उस थापे, निज धाम उस चार।। 7762

वह भागीरथ कार्य कर पाया, संकट से था धर्म बचाया।
यदि वह कदम न शंकर उठाता, आर्य धर्म तब मिट ही जाता।
शंकर का था कड़ा आदेश, जो जन बसते भारत देश।
'बुद्धं शरणं' न कह पायें, 'शिव शंकर' ही सब जन गायें।
शंकर ने जो कारज कीना, सहयोग राजपूतों ने दीना।
खण्डित देश संभाल वे पाये, सुन्दर सुन्दर राज बनाये।
सब ने आर्य धर्म अपनाया, राज्य धर्म था उसे बनाया।
आर्य पर्व वे सभी मनाते, देव पूजन में श्रद्धा लाते।

दो०–वीरता का वह युग था, और धर्म भी साथ।
मिल कर दोनों ने तभी, काम किया इक साथ।। 7763

राजपूतों ने देश संभाला, धन धान्य से इसे भर डाला।
आर्य धर्म जन गण अपनाया, इसे देश विदेश फैलाया।

---

1. चार धाम :–
   1. उत्तर में – बद्रीनाथ (गढ़वाल जिले में)
   2. दक्षिण में – रामेश्वरम् (मद्रास प्रांत में)
   3. पूर्व में – जगन्नाथ पुरी (उड़ीसा प्रांत में)
   4. पश्चिम में – द्वारका (काठियावाड़ में)

[1]छः सदियों तक रहा यह काल, उस समय था देश खुशहाल।
[2]आर्य राज्य थे बहु बन पाये, नाम सभी इतिहास में आये।
राज्यों में थी प्रजा सुखारी, धर्म परायण सब नर नारी।

दो०– ह्यून सांग के लेख से, जान पाये हैं लोग।
बहु समृद्ध वे राज्य थे, प्रशंसा के वे योग।। 7764

साहित्य का निर्माण भया, और कला का साथ।
राजपूतों के काल में, भारत भया सनाथ।। 7765

आर्य धर्म विकसित भया, मन्दिर बने विशाल।
मूर्तिन के निर्माण में, शिल्पिन कीन कमाल।। 7766

एक ही यहां का धर्म था, आर्य धर्म महान।
राज धर्म भी था वही, गौ ब्राह्मण का मान।। 7767

भारत वर्ष विशाल था, उस की सीम महान।
और देश नहीं जगत में, था जो इस समान।। 7768

काबुल और कंधार तक, भारत का विस्तार।
जावा और सुमात्रा, में आर्यों का प्रचार।। 7769

---

1. 650 A.D. से 1200 A.D.

2. राजपूत राजाओं के वंश और उनके राज्य का स्थान :–

1. पाल वंश – लाहौर में	2. तन्वार वंश – दिल्ली में	3. गुज्जर वंश – गुजरात में
4. अग्निकुल – कन्नौज में	5. प्रमार वंश – मालव में	6. करकोट वंश – काश्मीर में
7. सैन वंश – बंग – बिहार में	8. चन्देल वंश – विन्ध्याचल में	9. पहलववंश – दक्षिण भारत में
10. चालूक्य वंश – दक्षिण भारत में		11. यादव वंश – मैसूर में
12. चीरा वंश – मालाबार में	13. पीड़िया वंश – मद्रास में	14. चोला वंश – कारोमण्डल में

आर्यों की जो सभ्यता, मानते सब थे लोग।
अवशेष उस के अब भी, जाते देखन लोग।। 7770

संस्कृत भाषा में लिखे, पत्थरों पर श्लोक।
स्पष्ट बात बतला रहे, थे वहां आर्य लोक।। 7771

लंका और जापान में, था आर्यों का प्रभाव।
नेपाल और स्याम में, भी था ऐसा भाव।। 7772

चीन, तुरकिस्तान में, बसते आर्य लोग।
संस्कृत में बहु लेख वह, देख रहे हैं लोग।। 7773

देख खुशहाली देश की, लुटेरों के मन लोभ।
जाकर लूटें देश को, उनके चित्त क्षोभ।। 7774

2. आर्य धर्म का पतन काल और उस के चार सर्ग

1. लूटमार सर्ग
2. धर्म परिवर्तन सर्ग
3. दासता सर्ग
4. विस्मरण सर्ग

भारत की समृद्धि को, सका न देख जहान।
लुटेरे आने लग गये, लूटन को सामान।। 7775

आर्य धर्म के पतन का, आया काल लो मान।
अलग अलग थे राज्य सब, रोक सके न आन।। 7776

चार सर्ग हैं जान लो, पतन काल के मीत।
लूटमार का एक है, तीन और लो चीत।। 7777

धर्म परिवर्तन दूसरा, तीजा दासता मीत।
विस्मर्ण सर्ग बाद इस, [1]यही चार लो चीत।। 7778

3. पतन काल का प्रथम सर्ग

"लूट मार–आर्य बने हिन्दू"

प्रथम सर्ग का अब यहां, प्रथम करें बखान।
लुटेरों ने तब आ यहां, उठाया सर आसमान।। 7779

उत्तर पश्चिम से बहुत, लगे लुटेरे आन।
हिन्दूकुश को पार कर, आये हिन्दुस्तान।। 7780

'हिन्दू' कहने लग गये, 'आर्यों' को वे मीत।
मुसलमान लुटेरे जन, धन के भूखे चीत।। 7781

'आर्य' जन प्रसिद्ध भये, "हिन्दू" तब से मीत।
सदियों के अभ्यास से, नाम प्रचलित चीत।। 7782

पांच सदी तक था चला, लूट मार का वेल[2]।
उस का वर्णन अब करें, जो भयंकर खेल।। 7783

लुटेरे बीस बार तब, आये हिन्दुस्तान।
क्रमशः उन को जान लें, कीना जो नुकसान।। 7784

---

1. कलियुग में आर्य धर्म का पतन काल चार सर्गों में विभक्त है:–
   1. लूटमार का सर्ग (711 A.D. से 1200 A.D.)
   2. धर्म परिवर्तन सर्ग (1200 A.D. से 1700 A.D.)
   3. दासता सर्ग (1700 A.D. से 1947 A.D.)
   4. विस्मरण सर्ग (1947 से आगे . . .

2. वेल = वेला अर्थात् समय

[1]लुटेरा प्रथम बार जो, आया हिन्दुस्तान।
मुहम्मद कासिम नाम था, सिन्ध लूटा उस जान।। 7785

[2]सुब्बकतदीन आ गया, बार दूसरी जान।
लूट लिया लाहौर उस, आ कर हिन्दुस्तान।। 7786

[3]महमूदगज़नबी आया, बार बार लो जान।
घोर मचाई लूट उस, आ कर हिन्दुस्तान।। 7787

आया सतरह बार वह, लूटा बहु उस माल।
कतल आम भी करत वह, देश का बिगड़ा हाल।। 7788

मन्दिर सोमनाथ का, मथुरा के भी जान।
लूट लिए थे सब उस, आ कर हिन्दुस्तान।। 7789

[4]अन्तिम बार था आ गया, मुहम्मद गौरी मीत।
अन्तिम बार उस आय कर, लीना भारत जीत।। 7790

भारत किस तरह हो गया, इस्लाम के अधीन।
इस का भी रहस्य लो, इस ग्रंथ से चीन।। 7791

---

1. मुहम्मद बिन कासिम ने 711 A.D. में सिंध में लूटमार की।
2. सुब्बकतदीन ने 970 A.D. में लाहौर आदि कई स्थान लूटे।
3. महमूदगज़नबी ने 997–1030 तक आ कर सतरह बार लूटमार की तथा सोमनाथ और मथुरा के मन्दिर भी लूटे।
4. मुहम्मद गौरी ने 1174 से 1194 तक देश को जी भर कर लूटा और भारत के बहुत भाग का शासक भी बन गया। तरावड़ी की लड़ाई (1191) में और थानेसर की लड़ाई (1193) में; इस ने पृथ्वी राज और जयचन्द दोनों को समाप्त कर दिया।

हिन्दुओं का इतिहास है, सदैव काल से मीत।
भाई भाई का प्रेम न, करें शत्रु से प्रीत।। 7792

जयचन्द की शत्रुता, पृथ्वी राज से जान।
मुहम्मद गौरी को उस, बुलाया हिन्दुस्तान।। 7793

मदद कीनी शत्रु की, अपने भाई विरुद्ध।
शत्रु को उस जिता दिया, थानेसर के युद्ध।। 7794

मुहम्मद गौरी न मुड़ा, पीछे को फिर जान।
आगे ही वह बढ़ चला, हथियाया हिन्दुस्तान।। 7795

इस पतन के काल में, हिन्दू बहु पेरशान।
रक्षक स्वयं अरक्षित, सन्मुख मुसलमान।। 7796

प्रथम सर्ग यह पतन का, कर दें यहीं समाप्त।
देखें अगले सर्ग में, और पतन साक्षात।। 7797

दयनीय दशा थी तब, हिन्दुन की उस काल।
भय में रहते सब जन, लुट जाये न माल।। 7798

घर घर जा कर लूटते, और करत संहार।
हिन्दू भय से भीत थे, उस पतन के काल।। 7799

हिन्दून की थी जो दशा, भूल गये इनसान।
प्रतिशोध की आग तो, पूर्ण बुझी है जान।। 7800

※ *इति लूटमार सर्ग* ※

4. पतन काल का दूसरा सर्ग

"धर्म परिवर्तन सर्ग"

(1200 – 1700 A.D. तक)

दूसरे सर्ग में होय बखान, हिन्दू किमि भये मुसलमान।
हिन्दुस्तान इस्लामाधीन, आया यहां इस्लाम लो चीन।

दो० – [1]पांच सदी तक हिन्दू, थे इस्लाम अधीन।
[2]मुस्लिम के छः वंश थे, क्रमशः राज जिन कीन।। 7801

उन वंशों के नाम जो, वे भी लेवें जान।
कीना अत्याचार जिन, आ कर हिन्दुस्तान।। 7802

'गुलामों' का इक वंश था, 'खिलजी' दूजा जान।
तीजा 'तुगलक' वंश था, 'सादात' चौथा मान।। 7803

'लोधिन' का था पांचवां, 'मुगल' आये सब बाद।
कीना हिन्दू धर्म को, बिल्कुल ही बरबाद।। 7804

जो जुल्म इस्लाम ने, आ कीने इस देश।
जन देश के भूल गये, स्मरण नहीं है लेश।। 7805

---

1. 1200 A.D. से 1700 A.D.
2. मुसलमानों के छः वंश जिन्होंने भारत पर शासन किया

1.	गुलाम वंश	1206 – 1290 A.D.
2.	खिलजी वंश	1290 – 1320 A.D.
3.	तुगलक वंश	1320 – 1414 A.D.
4.	सादात वंश	1414 – 1450 A.D.
5.	लोधी वंश	1450 – 1526 A.D.
6.	मुगल वंश	1526 – 1700 A.D.

हिन्दुन की थी जो दशा, भूल गये इन्सान।
प्रतिशोध की आग तो, पूर्ण बुझी है जान।। 7806

अपने ही इतिहास से, अनभिज्ञ जो देश।
मुसीबत पर मुसीबत, पड़ती उस के पेश।। 7807

हिंदुओं ऊपर अत्याचार, वह तो वर्णन से भी पार।
'जज़िया' हिन्दुओं पर लगाया, मन्दिर मूर्तिन को तुड़वाया।
ब्राह्मणों का था कीन अपमान, गो हत्या होती सभी स्थान।
इस्लामी नियम से चलता काम, न्याय का था लेश नहीं नाम।
जबरन मुसलमान बनाते, जो न बनते मारे जाते।
अनेकों ही मुस्लिम बन पाये, अनेकों ही थे मार मुकाये।

दो०–हिन्दू धर्म विरुद्ध जो, कर्म भये उस काल।
उन से ही हम समझ सकें, हिन्दुओं का तब हाल।। 7808

हिन्दुओं ऊपर टैक्स था, 'जज़िया' था अभिधान।
करोड़ों ही तब बन गये, हिन्दू मुसलमान।। 7809

गली गली में होत थी, गोहत्या उस काल।
गौ माता का हाल यह, हों जन देख बेहाल।। 7810

फोड़ी देव मूर्तियां, मन्दिर भये 'मसीत'।
हिन्दुन ऊपर जो बनी, लेवें मन में चीत।। 7811

हिन्दुन के विद्यालय, जला दिये तत्काल।
वहीं 'मकतब' बन पाये, यह देश का हाल।। 7812

स्त्रियों का अपहरण जो, आम थी वह बात।
रब्बी काम यह मानते, मुसलमान साक्षात।। 7813

हिन्दुन से बेग़ार ले, बनाते निज मज़ार।
हिन्दू इस अन्याय पर, रोवें ज़ारो ज़ार।। 7814

संस्कृत भाषा लुप्त भयी, फारसी का था राज।
शाही भाषा फ़ारसी, होत सब उस में काज।। 7815

कबरों से था भर गया, सारा हिन्दुस्तान।
लगता था है हो गया, भारत कबरस्तान।। 7816

लूटमार वा युद्ध का, था सर्वत्र दौर।
पावन धरती देश की, शांत किसी न ठौर।। 7817

पांच सदी इमि भयीं व्यतीत, धर्म परिवर्तन जिस में रीत।
हिन्दू कुछ ही थे रह पाये, जबरन मुस्लिम सभी बनाये।

दो०–धर्म परिवर्तन सर्ग की, इति श्री हो पायी।
सर्ग अगले को देखें, जब गुलामी आयी।। 7818

※ *इति धर्म परिवर्तन सर्ग* ※

5. पतन काल का तीसरा सर्ग

"दासता सर्ग"

(1700 – 1947 A.D.)

दो० – पांच सदी मुसलमान के, हिन्दू रहे अधीन।
बाद उस के थी आ गई, जाति एक नवीन।। 7819

अंग्रेज इंगलिस्तान से, बन व्यापारी आये।
सकल देश के ऊपर, धीरे धीरे छाये।। 7820

जीता सारा हिन्दुस्थान, बनाये गिरजे स्थान स्थान।
हिन्दू धर्म मिटाना चाहें, धर्म इसाई लाना चाहें।
हिन्दू को गुलाम कर जानें, उसे अछूत सम वे मानें।
हिन्दुओं पास न रहें वे लोग, हिन्दू बस्ती न उन के योग।
करते हिन्दुओं का अपमान, नौकरी में दे न उच्च स्थान।
हिन्दुन पर अत्याचार महान, जलियां वाला है प्रमान।
हिन्दुस्थान में धन जो भारा, बटोर लेय गये वे सारा।

दो० – महाराजा इंदौर को, ऐसी दीन सज़ाय।
राज्य उस का छीन कर, लीन अधिकार जमाय।। 7821

हिन्दुओं के जो शास्त्र, था उन का अपमान।
गडरियों के गीत कहें, वेद आदि लो जान।। 7822

गुलामी का यह काल था, कीना सबन गुलाम।
शिक्षा देते हर तरह, जन जिमि रहें गुलाम।। 7823

पत्र जन को यदि लिखे, लिखो अंत जरूर।
[1]"श्री मन मेरी वेनती, रहूँ तव दास हजूर"।। 7824

"श्रीमन् आप से यह अरदास, आज्ञाकारी रहूँ मैं दास"।
बादशाह का लण्डन में वास, वासराय आता भारत खास।
वह था शासन यहां चलाता, दासता का था पाठ पढ़ाता।
राजा हो या रंक हो मीत, कहे "सम्राट की जय" सप्रीत।
अंग्रेजों की विशेष यह चाल, गरीब जन जब होंय बेहाल।
अंग्रेजों के वे रहें अधीन, गुलामों जैसे बन कर दीन।
सभी रूप देश कीन कंगाल, भया जनता का बुरा हि हाल।
ऐसा दृश्य देखा उस काल, जूठे पत्ते चाटें बाल।
सड़कों ऊपर सोते लोग, छत भी थी न उनके योग।
रबड़ जला कर काटें रात, देखते कब फिर होय प्रात।
उस काल हिन्दुओं का हाल, 'सेवक' निरख था होत बेहाल।

---

1. प्रत्येक पत्र के अंत में लिखना होता था और विद्यार्थियों को भी यही सिखलाया जाता था:–
I beg to remain, Sir,
Your most obedient servant.

अर्थ :– श्रीमन् मेरी विनय है कि मैं (अपना नाम) आपका सर्वश्रेष्ठ आज्ञाकारी दास सदा बना रहूँ।

भारत में 1750 A.D. से ले कर 1947 तक इंग्लैंड से तैंतीस (33) वायसराय आये। उन सभी ने यहां की जनता के प्रति जो कुछ किया वह यह था:–

1. भारत से धन खींच कर ले जाना और भारतीयों को दरिद्र बनाना।
2. इसाई धर्म का प्रचार अर्थात् हिन्दुओं को इसाई बनाना।
3. अपनी भाषा अंग्रेजी को भारतीयों पर थोपना।
4. भारतीयों में दासता वृत्ति उत्पन्न करना और उन्हें अपने समान मनुष्य न समझना।
5. युद्ध में भारतीयों को गोलियों का शिकार बनने के लिए आगे भेजना।
6. ऐसे कानून बनाना जिस से अंग्रेजी शासन सदैव बना रहे।
7. भारतीय उद्योगों को समाप्त कर अपना माल ही भारत में चलाना।

दासता का यह दृश्य घिनौना, स्मरण कर अब भी आता रोना।
एक चाल हम और बतायें, उसी काल की अब सुनायें।
कुत्तों को यदि चाहो लड़ाना, टुकड़ा फैंक कर देखत जाना।
अंग्रेज़ों ने भी दास लड़ाये, बटवारा उन में थे कर पाये।
हिन्दू मुस्लिम में भया फसाद, हिन्दू हो गये तब बरबाद।
बटवारा देश का कर पाये, लाखों हिन्दू काम में आये।
उजड़े परिवारों के परिवार, अनाथ बच्चों की थी भरमार।
दृश्य घिनौना ऐसा देखा, बिखरे मुर्दों को तब पेखा।
'दासता सर्ग' का वर्णा हाल, हिन्दू भये जिस काल बेहाल।

दो०–हिन्दू की थी जो दशा, हो गई उस काल।
वह तो इक इतिहास है, घोर पतन का काल।। 7825

आर्य जाति के वंशज, जिन का 'हिन्दू' नाम।
दुर्दशा में फंस गये, किस का यह परिणाम।। 7826

अपना ही यह है किया, अपना ही यह दोष।
कई बार ठोकर लगी, आयी न फिर भी होश।। 7827

अब चलो हम देख लें, आगे का कुछ हाल।
विस्मरण हमें तो है भया, हम जब भये बेहाल।। 7828

* *इति दासता सर्ग* *

6. पतन काल का चौथा सर्ग

"विस्मरण सर्ग"

(1947 A.D. से आगे)

विस्मरण सर्ग यह बतलाय, हिन्दू भूल निज रूप हि पाय।
रहे गुलाम सात सौ साल, आचार विचार का बिगड़ा हाल।
पाठ पूजा सब गई ही छूट, धर्म कर्म सब लागे झूठ।

दो०–सात सदी की दासता, का यह भया प्रभाव।
हिन्दुओं को निज धर्म से, लेश न रहा लगाव।। 7829

जो मिला इस्लाम से, लीना वह अपनाय।
जो इसाइयों से मिला, वही लीन अपनाय।। 7830

हिन्दू धर्म की सीख उन, दीनी सबन भुलाय।
'सेवक' इसी ग्रंथ से, चाहे स्मरण कराय।। 7831

पूर्वजों का न स्मरण है, न उन सम आचार।
शराब और तंबाकू, उन के शिष्टाचार।। 7832

इस्लाम से तंबाकू पाया, इसाइयों से शराब को पाया।
शराब पीना फैशन बन पायी, समय पाय व्यसन हो आयी।
व्यसन से हो गये विषयासक्त, उस से भये कुसंगासक्त।
कुसंग है काम को उपजाता, कामी क्रोधी भी हो जाता।
क्रोध से हो संमोह का भाव, हो संमोह से स्मरणाभाव।

दो०–[1]गीता के अनुसार सुन, विस्मरण से बुद्धिनाश।
बुद्धिनाश से होत है, जीवन का ही नाश।। 7833

हिन्दुओं का जब हो गया, बुद्धि का ही नाश।
रहा स्मरण न लेश उन्हें, पूर्वजों का इतिहास।। 7834

खान पान सब बिगड़ गया, अशुद्ध आचार विचार।
मनमाने सब करन लगे, अपने ही उपचार।। 7835

हिन्दू विषयों में लगे, शराब आदि में जान।
विषयों का परिणाम जो, लो भयंकर मान।। 7836

हिन्दुओं को न देश से प्यार, नहीं है हिन्दू धर्म से प्यार।
निज भाषा से भी है न प्यार, न जाने क्या है भूत सवार।
उन का नैकटाई से (Necktie) प्यार, उन को अंग्रेजी से है प्यार।
उन को शराब से बहु प्यार, न जाने क्या है भूत सवार।
अंग्रेजी शराब से खास प्यार, टाटा (TATA) करने से है प्यार।
वेलनटाइन से है (Valentine) प्यार, न जाने क्या है भूत सवार।
अंग्रेजी फैशन से है प्यार, अंग्रेजी सकर्ट (Skirt) से है प्यार।
क्रिश्चन स्कूलों से है प्यार, न जाने क्या है भूत सवार।

---

1. ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषू पजायते।
सङ्गात्सजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।। (गीता २.६२) और (२.६३)

अर्थः–विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष की उन विषयों से आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पड़ने पर क्रोध उत्पन्न होता है, क्रोध से अत्यन्त मूढ़ भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़ भाव से स्मृति में भ्रम हो जाता है, स्मृति में भ्रम हो जाने से बुद्धि अर्थात् ज्ञान शक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि का नाश हो जाने से वह पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है।

अंग्रेजी खाने से है प्यार, अंग्रेजी नाच से है प्यार।
अंग्रेजी ड्रैस (Dress) से बहु प्यार, न जाने क्या है भूत सवार।
अपनी भाषा अपना देश, अपने धर्म से उन्हें द्वेष।

दो०– देश अपने से प्यार न, भाषा से न प्यार।
न ही धर्म से प्यार है, विस्मृति भयी संसार।। 7837

हिन्दू अपने धर्म को, भूल गये हैं चीत।
विषयों से है हो गई, उन की बहुत प्रीत।। 7838

भूल गये निज धर्म को, भूले अपना आप।
सन्मार्ग को भूल गये, कैसा है अभिशाप।। 7839

भूल गये निज देश को, भूले अपना आप।
वीर जनों को भूल गये, कैसा है अभिशाप।। 7840

भूल गये शिव राज को, भूले वीर प्रताप।
रानी झांसी भूल गये, कैसा है अभिशाप।। 7841

स्मरण किया न कृष्ण कभी, स्मरण किया न राम।
स्मरण किया न भीम कभी, अथवा परशुराम।। 7842

वीर जनों की वीरता, का न करते ध्यान।
विषयों को ही स्मरण कर, वहीं रहें गुलतान।। 7843

दुर्बलता है आ गई, हिन्दू जाति में मीत।
विषयों ने सब साहस को, कीन खतम लो चीत।। 7844

आज दुर्बल हैं बन गये, दर दर खाते मार।
मार खा कर भी कहें, लो और लो मार।। 7845

मन्दिर बहु हैं टूट रहे, पुजारिन पर प्रहार।
भक्तों को मार भगायें, हिन्दू हैं लाचार।। 7846

शक्तिशाली आर्य थे, हिन्दू भये कमजोर।
शत्रु की इक भभकी से, भागे बिन ही शोर।। 7847

भूमि खाली कर रहे, जैसे पाकिस्तान।
वा अफगानिस्तान भी, काश्मीर लेवो जान।। 7848

मुँह बगाये देखते, हिन्दू सब ही लोग।
प्रतिशोध की न सोचते, प्रिय हैं इन को भोग।। 7849

शिक्षा लेवें राम से, होत क्या प्रतिशोध।
राक्षस आश्रम लूटते, कीना राम क्रोध।। 7850

हज़ारों राक्षस मार दिये, कहें इसे प्रतिशोध।
शांत भया नहीं उन का, फिर भी वह क्रोध।। 7851

शिक्षा लेवें कृष्ण से, होत क्या प्रतिशोध।
मातपिता थे कैद किये, मन कृष्ण के क्रोध।। 7852

राज दरबार में जाय कर, कंस को कीना चित्त।
प्रतिशोध यही कहलाय, समझो मेरे मित्त।। 7853

पांडवों से लो शिक्षा, होत क्या प्रतिशोध।
द्रौपदी की लाज हरी, भीम को आया क्रोध।। 7854

सौ कौरव थे मार दिये, उन्होंने इस निमित्त।
प्रतिशोध यही कहलाय, समझो मेरे मित्त।। 7855

हिन्दू बात भूल गये, प्रतिशोध है धर्म।
उस से जो हैं चूकते, मंद हैं उन के कर्म।। 7856

प्रतिशोध का नेम यह, प्रकृति में भी साफ।
हाथ लगाओ कीट को, न वह भी करता माफ।। 7857

रामचन्द्र की और सुनायें, पञ्चवटी की घटन बतायें।
रावण सीता थी हर पाई, प्रतिशोधाग्नि मन राम जगाई।
राम ने नगरी लंक जलाई, प्रतिशोध की शिक्षा थी दे पाई।

दो०–इक कमजोरी और है, हिन्दू धर्म में मीत।
बिगाड़ लिये हैं आपने, रिवाज सभी व रीत।। 7858

रिवाजों का अब करें बखान, पहले तो विवाह लो जान।
रात्रि को जो विवाह रचायें, शास्त्र विरुद्ध वे कर्म कर पायें।
स्वयंवर दिन में ही हो पाते, रात्रि में न सुनन में आते।
दुनिया में न कही भी देखें, रात को शादी होती पेखें।
यह रिवाज़ था तब चल पाया, जब इस्लाम था भारत आया।
कन्या को थे हर ले जाते, हिन्दू शादी रात रचाते।
एक कुरीति और लो जान, दहेज प्रथा बदनाम महान।
कारण दहेज कई मर पाईं, जो कन्या दहेज न लायीं।

यह तो लालच की है रीत, और है यह महान कुरीत।
एक कुरीति और बतायें, छुआछूत धर्म में पायें।
मनुष्य मनुष्य से रहे जब दूर, दुःख जगत में रहे जरूर।
जग में प्रेम कैसे बढ़ पाये, भेद भाव जब दृष्टि आये।
अछूत न कोई किसी को माने, अपने जैसा सब को जाने।

दो०-छुआ छूत अभिशाप है, इस धर्म में मीत।
इस कारण से दुर्बलता, हिन्दुओं में लो चीत।। 7859

इस प्रकार कई और भी, बिगड़ गए रिवाज़।
मनमानी हैं कर रहे, सब हिन्दू हैं आज।। 7860

हिन्दुन की तो बिगड़ गई, धर्म कर्म की रीत।
आ कर प्रभु सुधारिये, हैं जो कर्म विपरीत।। 7861

आप का तो विरद है, आयें धर्म के हेत।
धर्म की जब हो ग्लानि, होते आप सचेत।। 7862

बिगड़ गया है धर्म सब, हिन्दुओं का हे नाथ।
धर्मनाश के कारण, हिन्दू भये अनाथ।। 7863

अनाथों के तुम नाथ हो, अशरणों के सहाय।
अब शरण हैं आप की, बचें आप के आय।। 7864

यह रामायण नहीं लिखी, यह अर्ज़ है एक।
प्रभु आप के चरण में, आप की ही टेक।। 7865

गिड़गिड़ा कर कर रहा, "सेवक" चरणि पुकार।
बचाओ हिन्दू धर्म को, जिस भी हो प्रकार।। 7866

मिट गई बहु जातियां, अतीत काल में देव।
इसे बचाओ हे प्रभो, विनय आप की सेव।। 7867

वैदिक धर्म महान है, ऋषि मुनियों का ज्ञान।
रचनायें हैं आप की, होय न इन का हान।। 7868

बार बार पुकार मम, सुनिये दीन दयाल।
हिन्दुओं की रक्षा करो, बिगड़ रहा है हाल।। 7869

आशा पूरण है मुझे, सुनेंगे मम पुकार।
आंच न आय इस धर्म को, जब तक यह संसार।। 7870

मिट गये हैं धर्म बहु, और मिटेंगे और।
वेद सृष्टि के आदि से, रहेगा अन्तिम छौर।। 7871

जो ज्ञान है वेद में, वह स्नातन ज्ञान।
रहे शाश्वत काल तक, भ्रान्ति नहीं है जान।। 7872

प्रभु कृपा से होयगी, यहां ऋषि संतान।
सकल सृष्टि को देयगी, वेदों का जो ज्ञान।। 7873

विश्व बनेगा आर्य तब, होगा आर्य आचार।
सतयुग हि आ जायगा, देखेगा संसार।। 7874

रामायण पूर्ण है भयी, चार युगों की खास।
हिन्दू जान सकें जिमि, पूर्वजों का इतिहास।। 7875

पढ़े सुनेगा जो इसे, उपजे मन विश्वास।
वीरों की संतान हम, वीर बनेंगे खास।। 7876

पूर्वज हमारे वीर थे, कीना असुर संहार।
राक्षसों का तो कीना, राम ने बेड़ा पार।। 7877

देवियों ने भी याद है, कीन असुर संहार।
"असुर–निकन्दनी" देवी, को जाने संसार।। 7878

लीक उसी पर अब चलें, और बनें सब शूर।
सन्मुख आ कर जो अड़े, कर दें चकनाचूर।। 7879

इन शब्दों के साथ ही, पूर्ण भयी रामायण।
दस खण्ड में है जानिये, प्रभु का ग्रंथ महान।। 7880

इतिहास हिन्दू धर्म का, लिखा आप है नाथ।
"सेवक" लिपिक बनाय कर, दे कलम उस हाथ।। 7881

[1]वर्ष पैंतीस (35) करत रहा, प्रभो आप का काम।
अब दयामय दीजिये, 'सेवक' को विश्राम।। 7882

[2]वर्ष अठासी (88) का भया, शिथिल भया तन मोर।
अब सेवा यही दीजिये, भजन करूँ मैं तोर।। 7883

1. ई० सन् 1970 से 2005 2. ई० सन् 1917 से 2005

अन्तिम विनय इस दास की, वह भी सुन लो नाथ।
पढ़े सुने जो ग्रंथ यह, उस सर रहे तव हाथ।। 7884

ग्रंथ संपूर्ण है भया, बीसौ इकासठवर्ष।
फाल्गुण मास अठाई, भयी पुष्पन की वर्ष।। 7885

तत्सदिति श्री सद्गुरु योगेश्वर स्वामी मुलखराज के शिष्य "सेवक" चमन लाल कृत "श्री योग महादिव्य रामायण" का दशम खण्ड (काण्ड ग्यारहवां) "हिन्दू धर्म का इतिहास" आज २८ फाल्गुण संवत २०६१ तदानुसार ।। मार्च 2005 शुक्रवार को योग साधन आश्रम होश्यारपुर में संपूर्ण हुआ।

***
****
***

1. 28 फाल्गुण संवत् 2061 शुक्रवार तदानुसार ।। मार्च 2005, होश्यारपुर

परिशिष्ट-१

हिन्दू धर्म के इतिहास में स्त्रियों का योगदान

प्रश्न भारत के उत्तर में पर्वतों पर स्थान-स्थान पर देवी माताओं के कई मन्दिर हैं। उन के प्रति जन साधारण की बहुत आस्था है। कोई कालिका है, और कोई सिंह वाहिनी, कोई असुर निकंदिनी और कोई दुर्गा और कोई चण्डिका आदि। उन के हाथों में प्राय: शस्त्र हैं। क्या इन देवियों का कोई पुराना इतिहास है?

उत्तर हां! इन का अति प्राचीन इतिहास है।

प्रश्न वह क्या है?

उत्तर ये सभी आर्य शूरांगनां थीं जिन के मन्दिर बने हैं। इन्होंने आर्य जाति की असुरों के आक्रमणों से बहुत रक्षा की थी और असुरों से युद्ध किये थे।

प्रश्न वे कैसे और कब?

उत्तर त्रेता युग में जब जम्बु द्वीप (एशिया) में आर्यों की शक्ति कम हो गई और असुर प्रभावी हुए तो आर्यों ने असुरों के दबाव से दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। हिमालय पर्वत को लांघ कर भारत में आ गए। असुरों ने उनका पीछा किया तो आर्य वीरांगनाओं ने बड़े साहस के साथ उन्हें भारत में प्रवेश करने से रोका। स्थान-स्थान पर आर्य वीरांगनाओं ने अपने मोर्चे बनाये और असुरों की एक न चलने दी। बहुत से असुरों का संहार किया और इस प्रकार असुर भारत में न आ सके। इस के प्रमाण इस प्रकार से हैं कि जब असुर शिमला की ओर से आने लगे तब कालिका माता (जहां पर कालका नगर बसा है) और शिमला माता (जहां पर शिमला बसा है) और ढिंगू माता (जिन का स्थान शिमला में संजौली की पहाड़ी के ऊपर है) ने मिलकर असुरों की शक्ति का सामना किया और बहुत दूर भगा दिया। जहां वे वापसी में रुके उस स्थान को आज महासु जिला कहते हैं, जो महासुर या महान असुर का स्मरण करवाता है।

आर्य शूरांगना असुर का संहार कर रही है और उसका सिंह
असुर के मांस को खाने के लिए उतावला है।
(माता की बहु भुजायें उस की शक्ति की परिचायक हैं।)

इसी प्रकार जब असुर पहाड़ों को पार कर कांगड़ा की ओर बढ़े तो वहां पर आर्य वीरांगनाओं, ज्वाला माता (ज्वाला जी, जहां पर ज्वाला नगर है), कांगड़ा माता (जहां कागड़ा नगर बसा है) और चिन्तपूर्णि माता (जहां चिन्तपूर्णि नगर बसा है) ने मिल कर उन असुरों को वापस धकेला और उन्होंने भाग कर धौलाधार की पहाड़ियों में शरण ली, जहां उन की स्मृति में भागसुनाथ (भाग असुर) का स्थान है।

इसी प्रकार जहां जहां पर असुर भारत में प्रविष्ट हुए, आर्य वीरांगनाओं ने उनको परास्त किया या मार कर भारत में प्रविष्ट होने से रोका। उन्हीं शूरांगणों के स्थान स्थान पर उनकी स्मृति में आज तीर्थ हैं।

प्रश्न उन देवियों को दुर्गा माता क्यों कहते हैं?

उत्तर उन्होंने ने अपने लिए ऊँचे ऊँचे स्थानों पर दुर्गों की रचना की जिन में रहकर असुरों का सामना करती थीं।

प्रश्न उन देवियों को असुर निकंदिनी क्यों कहा जाता है?

उत्तर यह बात स्पष्ट है कि उन वीरांगनों ने असुरों का बल पूर्वक हनन किया। कई स्वरूप ऐसे आज मिलते हैं जिन में देवियों के पैरों में असुरों को कुचला दिखाया है।

प्रश्न देवियों को सिंह वाहिनी क्यों कहते हैं?

उत्तर जब देवियां असुरों को मारती थीं तो उन के शवों को शेर आदि वन्य पशु खाते थे। इस प्रकार सिंहों को देवियों द्वारा आहार प्राप्त होता था। वे जंगली जंतु देवियों के सहचर बन गए। देवियों को कुछ नहीं कहते थे। उनके साथ हिल-मिल कर रहते थे। कई देवियां उन सिंहों पर सवार होकर असुरों पर आक्रमण करतीं और असुर यह देख और भयभीत हो जाते।

प्रश्न उन देवियों को काली का नाम क्यों दिया गया है?

उत्तर उन को काली के नाम से इसलिए याद किया जाता है क्योंकि वे असुरों के लिए काल स्वरूपा थीं और असुर उन से भय खाते थे।

प्रश्न उन देवियों को चण्डिका क्यों कहा जाता है?

उत्तर उन्होंने साहस और प्रचंड शक्ति का परिचय दिया। कठिन परिस्थितियों और कठिन प्रदेशों में रहने पर भी वे घबराती नहीं थीं।

प्रश्न आज उन सभी देवियों की पूजा होती है। क्या उन से कुछ शिक्षा भी मिलती है?

उत्तर हां! अपने धर्म और देश के लिए आज हिन्दू स्त्रियों को साहस बलिदान और शौर्य का परिचय देना चाहिए।

–इति–

परिशिष्ट-२

रावण के विमान

राम चन्द्र और उनकी सेना ने लंका में जाने के लिए पुल का निर्माण किया था और उस पुल द्वारा वे सभी लंका में पहुंचे। राक्षस लंका से भारत में बहुत आया जाया करते थे। वे कैसे आते थे?

उत्तर :- प्राचीन काल में ऐसे पक्षी होते थे जिन का आकार मनुष्य के आकार से काफी बड़ा होता था। मनुष्य उसकी सवारी करते और आकाश में चले जाते। ऐसे पक्षी भूमध्य रेखा के आस पास ही हुआ करते थे। राक्षसों ने उन पक्षियों को इस प्रकार शिक्षित किया था जैसे अन्य बड़े पशुओं, घोड़ों, हाथियों को शिक्षित कर अपने काम में लाया जाता है। राक्षस एक पक्षी द्वारा भी आते जाते थे। एक से अधिक पक्षियों को रथ (विमान) में लगा कर उस विमान को आकाश में ले जाते थे। रावण के पास ऐसे [1] कई विमान थे।

रावण का पुष्पक विमान बहुत बड़ा था जिस में सौ पक्षी जुते होते। उन पक्षियों को रामायण में 'खर' नाम से लिखा है। 'खर' का अर्थ है आकाश में विचरण करने वाला। 'ख' आकाश, 'र' रमण करना या विचरण करना।

खर एक जाति थी जो सवारी के काम आती और अन्य भी उस आकार के पक्षी रामायण में और प्राचीन साहित्य में मिलते हैं।

[2] एक महान आकार वाले पक्षी का नाम रामायण में संपाती आता है जो वानर सेना को समुद्र तट पर मिला था। उसे देख कर हनुमान आदि भी भयभीत हो गये थे।

[3] जटायु एक और वृहदाकार पक्षी था। जब रावण सीता को उठाकर अपने विमान में रख आकाश में उड़ा तो जटायु ने उसका पीछा किया और रावण को क्षत विक्षत कर

---

[1] देखें बाल्मीकीय रामायण युद्ध काण्ड 19सवां सर्ग - विभीषण का आकाश से उतर कर भगवान श्री राम के चरणों की शरण लेना।

[2] देखें बाल्मीकीय रामायण किशकिन्धा काण्ड 56वां सर्ग

[3] जटायु की रावण को ललकार - जटायु - "रावण! यदि तुम शूरवीर हो तो युद्ध करो। मेरे सामने दो घड़ी ठहर जाओ, फिर जैसे खर मारा गया था, उसी प्रकार तुम भी मेरे द्वारा मारे जा कर सदा के लिए सो जाओगे"।

जारी अगले पृष्ठ पर -

दिया तथा उस के कवच को तोड़ डाला। रावण ने खड़ग से जटायु का पर काटा और जटायु भूमि पर आ गिरा।

उन पक्षियों की सहायता से लंका के राक्षस अन्य महाद्वीपों में जाते और वहां उन लोगों से संबंध जोड़ते। रावण की स्त्री किसी एक ऐसे द्वीप से ही थी।

वृहदाकार पक्षी समय की गति के साथ विलुप्त हो गए। उन की जातियां अब नहीं मिलतीं।

आर्य जाति उत्तर से आई थी और उनके पास ऐसे विमान अथवा पक्षी नहीं थे।

जब राम और रावण का युद्ध हुआ और रावण राम का सामना न कर सका तो रावण आकाश में जाकर राम पर तीर चलाने लगा। उस समय एक आर्य सम्राट "इन्द्र" ने, जिस के पास भी ऐसा विमान था, राम की सहायता के लिए भेजा। तब राम ने उस रथ (विमान) पर आरुढ़ हो कर रावण के साथ युद्ध किया और विजयी हुआ।

[1] राम ने लंका को विजयी कर रावण के पुष्पक विमान द्वारा ही अन्य कई साथियों के साथ अयोध्या की ओर प्रस्थान किया था।

. . . बाल्मीकीय रामायण अरण्य कांड 50 सर्ग श्लोक 23

"उस महा समर में उन दोनों का एक दूसरे पर भयंकर प्रहार होने लगे, मानो आकाश में वायु से उड़ाये गये दो मेघ खंड आपस में टकरा गऐ हों"

. . . बाल्मीकीय रामायण अरण्य कांड 51 सर्ग श्लोक 2

[1] *देखें बाल्मीकीय रामायण युद्ध काण्ड 122, 123 सर्ग*

❖ योग साधन आश्रम के नियम ❖

(श्री योगेश्वर प्रभु राम लाल जी महाराज द्वारा रचित)

1. आश्रम में किसी प्रकार की फीस नहीं ली जाती।
2. पुरुषों को पुरुष और स्त्रियों को स्त्रियां साधन सिखलाती हैं।
3. आश्रम के विद्यार्थी तीन श्रेणियों में विभक्त किये जाते हैं : –
   (क) जो सर्वदा आश्रम में रहकर अपने साधन को करते हुए आश्रम की यथा योग्य परिचर्य्या और अन्य भाईयों की प्रेम पूर्वक सेवा करेंगे।
   (ख) जो साधक यथा अवकाश आश्रम में रहकर स्वयं साधन सीखकर अपने देश में जाकर दूसरों को भी अपने अनुभव से लाभ पहुंचाते हुए प्रचार करेंगे।
   (ग) जो आश्रम में आकर साधनों से लाभ उठाएंगे।
4. प्रत्येक साधक को अपने सब खर्च का प्रबन्ध आप करना होगा।
5. रोगी साधक को अपने रोग निवारणार्थ कम से कम एक मास रहने का प्रबन्ध करके आना चाहिये, किन्तु जो भगवद्भक्ति मानसिक शान्ति के लिये योग के अन्तरंग साधन करना चाहते हों उनको श्री गुरु जी के ही विचार पर सदा निर्भर रहना होगा।
6. प्रत्येक साधक को अपनी दिनचर्य्या तथा रात्रिचर्य्या (टाईम टेबल) श्री गुरु जी की आज्ञानुसार नियत करनी होगी।
7. योग चिकित्सा से चिकित्सित होने वाले साधक को अपने चिकित्सा काल के अन्दर किसी भी डाक्टर वैद्य या हकीम की दवाई खाना निषिद्ध है।
8. यदि कोई साधक अन्य साधकों के किसी साधन को देखकर बिना अनुमति स्वयं उन साधनों को करेगा तो उस से लाभ हानि का जिम्मेवार वह स्वयं होगा और आश्रम के आचार्य के अनुशासनहीनता का भी भागी होगा।
9. २० वर्ष से कम आयु वाले को उसके संरक्षकों की सम्मति से प्रविष्ट किया जायेगा।
10. स्त्रियों को संबन्धियों के साथ आना चाहिये या वृद्ध स्त्री को जो संरक्षक हो उसी के साथ आना चाहिये।
11. साधकों को जो भी कोई उपासना या साधन दिया जावे उसे नित्य नियम पूर्वक करना होगा और आचार्य जी की आज्ञा के बिना अन्य कोई मनमानी नूतन उपासना या धारणा नहीं करनी होगी।

✣✣✣✣

योग ही
विश्व शान्ति का
एक मात्र साधन है।

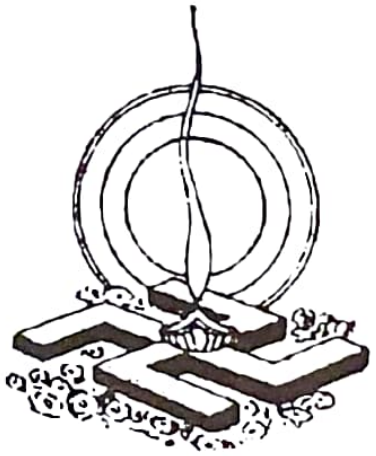

बिना दवाई निरोगता,

मन की एकाग्रता तथा ईश्वर प्राप्ति के

लिए योग आश्रमों से सम्पर्क स्थापित करें ।